अपराधों को जानिए, सुरक्षित रहिए

# मनोहर कहानियां

अगस्त, 2019 ₹ 40/-

Vikas Bhadu

## मास्टरनी की खूनी डिगरी

इसलाम के नाम पर
## 4 हजार करोड़ की ठगी

कठुआ गैंग रेप :
## आधा अधूरा न्याय

## पटना (बिहार) सबसे बड़ी डकैती

जीजा साली के खेल में
## डा. संजय डहाके की खुदकुशी

# जायरा की बेजा जियारत

अगस्त 2019

# मनोहर कहानियां

टिप्पणी, घटना की सूचना, समाचार, रिपोर्ट, जौब्स के लिए :
manoharkahaniyanmonthly@gmail.com
08527666775
08527750077

वार्षिक ग्राहक : subscription@delhipress.in Phone : 08488843408 Toll Free No. 18001038880 (Mon to Saturday 10 AM to 6 PM)

Vikas Bhagat

06. मास्टरनी की खूनी डिगरी
सुरेशचंद्र मिश्र

14. इंसानियत की कब्र से निकले हैवान
हरमिंदर खोजी

22. जीजा साली के खेल में
विजय सोनी

26. जायरा की बेजा जियारत
भारत भूषण श्रीवास्तव

32. प्यार की सूली पर अंजलि
शैलेंद्र कुमार 'शैल'

38. पटना की सब से बड़ी डकैती
प्रतिनिधि

43. असंभव के पार झांकने की भूल
शैलेंद्र सिंह

46. इसलाम के नाम पर 4 करोड़ की ठगी
शैलेंद्र कुमार 'शैल'

53. गलत राह का राही
सुरेशचंद्र रोहरा

58. भविष्य की नींव में दफन 2 लाशें
दिनेश बैजल 'राज'

62. दोस्ती पर ग्रहण
कस्तूर सिंह भाटी

66. आग बनी शोला
सुरेशचंद्र मिश्र

74. दिशा का दृष्टिभ्रम
राम महेंद्र राय

80. पति को जल समाधि
भारत भूषण श्रीवास्तव

84. डकैत जगन : चौथी बार आत्मसमर्पण
निखिल अग्रवाल

लघुकथाएं

52. बचा ही लिए गए सुनहरे लंगूर

79. अपनी बुलाई मौत

## 06 मास्टरनी की खूनी डिगरी

रमा की ससुराल हर तरह से संपन्न थी, पति दिनेश कुमार सीआरपीएफ की 75वीं बटालियन में तैनात था. रमा जिला फर्रुखाबाद के एक सरकारी स्कूल में टीचर थी. दिनेश और उस के घर वाले चाहते थे कि रमा का ट्रांसफर एटा के किसी स्कूल में करा दिया जाए ताकि वह ससुराल में रह सके, पर ऐसा हो नहीं सका. इस पर पति ने फर्रुखाबाद शहर से सटे झगुआ नाला गांव में मकान बनवा दिया और पत्नी को स्कूल आनेजाने के लिए स्कूटी ले कर दे दी, इसी बीच रमा की नजरें अनमोल उर्फ अमन से टकरा गईं फिर जो कुछ हुआ...

## 26 जायरा की बेजा जियारत

## 46 इसलाम के नाम पर...

आवश्यकता है: राजधानियों और बड़े शहरों में 'मनोहर कहानियां/सत्यकथा' के लिए फ्रीलांस संवाददाताओं की. संपर्क करें : editor@delhipress.biz

शोभिका मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेशनाथ द्वारा ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएसपीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली प्रैस, डीएलएफ 50, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, फरीदाबाद हरियाणा-121003 से मुद्रित. संपादक:परेशनाथ (वौ-4, अंक-10)
**संपादकीय, वितरण एवं एजेंसी कार्यालय :** ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055, **संपादकीय विभाग :** पुष्कर पुष्प

**वार्षिक ग्राहक:** दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055. फोन: 91-11-41398888 Extn. No. 119, 221, 264 **मुंबई कार्यालय:** बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई. फोन: 91-22-24122661/43473050

Vikas Bhadu

मनोहर कहानियां

# संपादकीय

हमारे देश का कानून और कानूनविद कहते हैं कि भले ही 100 दोषी छूट जाएं लेकिन किसी निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए. इस में निर्दोष को सजा से बचाने की बात सही है, क्योंकि किसी निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए, लेकिन इस के लिए 100 दोषियों को छोड़ने की बात क्यों? निस्संदेह यह कानून की सब से कमजोर कड़ी है, जिस का फायदा अपराधी और वकील दोनों उठाते हैं. अगर आप ने किसी मामले में अदालत के चक्कर काटे हैं तो आप जानते होंगे कि कोई भी वकील अपनी मोटी फीस वसूलने के लिए कहता है, 'मैं आप को सजा से बचा लूंगा.' भले ही आप ने हत्या जैसा जघन्य काम क्यों न किया हो. कई वकील ऐसा करने में सफल भी हो जाते हैं.

यह भी कहावत है कि कानून की पेंदी में 100 छेद हैं, जो दिखाई भी देते हैं. अगर आप इस बात पर गौर करें तो कोई न कोई वकील किसी न किसी छेद में घुसने की कोशिश करता नजर आएगा. यह कानून की ही बानगी है कि बच्चियों से दुष्कर्म और हत्या के मामले में पिछले 14 सालों में केवल एक व्यक्ति को सजा हुई है, जबकि दुष्कर्म और हत्या के मामले में केवल 2018 में ही 58 लोगों को फांसी की सजा सुनाई गई. इन में 20 मामले तो केवल अकेले मध्य प्रदेश के हैं. और तो और दिसंबर, 2012 में दिल्ली के जिस निर्भया कांड से पूरा देश हिल गया था, उस के दुष्कर्मी हत्यारे फांसी की सजा के बजाए जेल की रोटियां तोड़ रहे हैं.

कहने का अभिप्राय यह है कि देरसबेर अगर कानून अपना काम कर भी दे तो सरकार और प्रशासनिक स्तर पर अड़ंगे लग जाते हैं. एक तो वैसे ही यौन हिंसा के केवल 15 प्रतिशत मामले पुलिस या अदालतों तक पहुंच पाते हैं, उन में भी ठीक से या ईमानदारी से कारर्वाई नहीं हो पाती. जाहिर है इस से पीड़ितों की हिम्मत टूटेगी ही. उन से सबक ले कर कितने ही लोग पुलिस या अदालत तक नहीं जाएंगे. नैशनल ला यूनिवर्सिटी की जनवरी, 2019 में आई रिपोर्ट से पता चलता है कि दिसंबर 2018 तक विभिन्न आरोपों के 426 ऐसे दोषी थे, जिन्हें फांसी की सजा सुनाई गई. लेकिन फांसी किसी को नहीं हो सकी. सभी सजायाफ्ता जेलों में हैं. उन्हें फांसी होने में कितने साल लगेंगे, कहा नहीं जा सकता.

मध्य प्रदेश के जिन 22 लोगों को मृत्युदंड मिला है, उन में 20 मामले दुष्कर्म या यौन हिंसा से जुड़े हैं. सन 2018 में भारतीय दंड विधान में संशोधन किया गया था, जिस में 12 वर्ष से कम उम्र की बच्ची से रेप करने वाले दोषी के लिए मौत की सजा का प्रावधान रखा गया था. निर्भया कांड के बाद आपराधिक कानून में न केवल और सख्ती लाई गई बल्कि कई बदलाव भी किए गए. उस समय देश में ऐसे कुल 58 मामले थे, जिन में यौन हिंसा के बाद हत्या की गई थी. लेकिन इन में से एक को भी फांसी नहीं हुई. यही वजह है कि दुष्कर्मियों को कानून का कोई खौफ नहीं है.

यह बात तो हमें मान कर चलनी ही होगी कि देश की अदालतों की रफ्तार बहुत सुस्त होती है. सालोंसाल केस चलने के बाद अगर दोषी को निचली कोर्ट से फांसी की सजा मिल भी जाए तो उस की पुष्टि हाईकोर्ट को करनी होती है. उस के बाद सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति के यहां दया याचिका. इस पूरी प्रक्रिया में सालों निकल जाते हैं. इतने समय तक गवाह भी नहीं टिकते. कुछ मर जाते हैं तो कुछ इतने सालों तक झंझट में नहीं पड़े रहना चाहते.

16 दिसंबर, 2012 को हुए निर्भया के मामले में निचली अदालत ने 3 महीने में निपटारा कर के फांसी की सजा सुना दी थी. 22 अगस्त, 2013 में हुए मुंबई के शक्ति मिल रेप केस में अप्रैल 2014 में सेशन कोर्ट ने 3 आरोपियों सलीम अंसारी, विजय जाधव और कासिम शेख को फांसी की सजा सुनाई. जान लें, यह वही केस था, जिस में दिग्गज नेता मुलायम सिंह ने कहा था कि लड़के हैं, गलती हो ही जाती है. 19 फरवरी, 2018 को इंदौर में एक 4 महीने की बच्ची से दरिंदगी कर के उसे मौत के घाट उतार दिया गया था. अदालत ने 23 दिन सुनवाई कर के आरोपी नवीन को मौत की सजा सुना दी थी.

नोएडा के निठारी कांड की दुनिया भर में चर्चा हुई थी. पंधेर की कोठी में बच्चों के नरकंकाल मिले थे. इस केस में 2009 में मोनिंदर सिंह पंधेर को 2 और सुरेंद्र कोली को 11 मामलों में फांसी की सजा हुई, लेकिन अभी तक फांसी नहीं हुई. नवंबर, 2007 में पुणे की एक 22 वर्षीय बीपीओ कर्मचारी की दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी गई थी. मार्च, 2012 में पुणे की सेशन कोर्ट ने आरोपी पुरुषोत्तम बोराडे और प्रदीप कोडके को फांसी की सजा सुनाई थी. इन सभी केसों के दोषी जेल में हैं. किसी का मामला हाईकोर्ट में पड़ा है तो किसी का सुप्रीम कोर्ट में या फिर राष्ट्रपति के पास दया याचिका उलझी है. ये सब देखनेसमझने के बाद यही कहा जा सकता है कि किसी मामले में फांसी के फंदे तक पहुंचना आसान नहीं.

फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश

Vikas Bhadu

किसी भी शादीशुदा महिला के कदम जब बहक जाते हैं तो निश्चित ही उसे पतन के रास्ते पर ले जाते हैं. सैनिक दिनेश कुमार दिवाकर की पत्नी रमा के पैर भी ऐसे बहके कि...

# मास्टरनी की खूनी डिग्री

❑ सुरेशचंद्र मिश्र

फर्रूखाबाद के कोतवाली इंसपेक्टर संजीव राठौर अपने औफिस में बैठे थे, तभी एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने उन के औफिस में प्रवेश किया. दिखने में वह संभ्रांत लग रहा था, लेकिन उस के माथे पर परेशानी की लकीरें थीं. राठौर ने उस व्यक्ति को सामने पड़ी कुरसी पर बैठने का इशारा किया फिर पूछा, ''आप कुछ परेशान दिख रहे हैं. आप अपनी परेशानी बताएं ताकि हम आप की मदद कर सकें.''

''सर, मेरा नाम रमेशचंद्र दिवाकर है. मैं एटा जिले के अलीगंज थाना अंतर्गत झकरई गांव का रहने वाला हूं. मेरा छोटा भाई दिनेश कुमार दिवाकर पत्नी व बच्चों के साथ आप के ही क्षेत्र के गांव झगुवा नगला में रहता है. दिनेश सीआरपीएफ की 75वीं बटालियन में है और श्रीनगर में तैनात है.

''दिनेश 15 दिन की छुट्टी ले कर 6 जून को आया था, लेकिन वह घर नहीं पहुंचा. उस ने मुझे रात साढ़े 10 बजे मोबाइल पर फोन कर के जानकारी दी थी कि वह घर के नजदीक पहुंच गया है. लेकिन 8 जून को उस की पत्नी रमा ने मेरी मां को जानकारी दी कि दिनेश घर आया ही नहीं है. उस का फोन भी नहीं लग रहा है. श्रीनगर कंट्रोल रूम को भी रमा ने दिनेश का फोन बंद होने की जानकारी दी है. भाई के लापता होने से मैं परेशान हूं और इसी सिलसिले में आप के पास आया हूं. इस मामले में आप मेरी मदद कीजिए.''

यह बात 10 जून की है.

कोतवाल संजीव राठौर ने रमेशचंद्र दिवाकर की बात गौर से सुनी, फिर बोले, ''झगुवा नगला गांव, पांचाल घाट पुलिस चौकी के अंतर्गत आता है. 8 जून को इस गांव के बाहर एक युवक की अधजली लाश बरामद हुई थी. अज्ञात में पंचनामा भर कर लाश को पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया गया था. लाश की कुछ फोटो हैं, आप उन्हें देख लो.''

श्री राठौर ने लाश के फोटो मंगवाए फिर रमेशचंद्र को देखने के लिए थमा दिए. रमेशचंद्र ने सभी फोटो गौर से देखे और फफक पड़े, ''सर, ये फोटो मेरे भाई दिनेश की लाश के हैं.''

इस के बाद रमेशचंद्र ने मोबाइल फोन से घर वालों को सूचना दी तो घर में हाहाकार मच गया.

थानाप्रभारी संजीव राठौर ने रमेशचंद्र को धैर्य बंधाया, फिर मृतक के संबंध में जानकारियां जुटाईं. इस के बाद उन्होंने पूछा, ''रमेशजी, आप को किसी पर शक है?''

''हां, है.'' रमेशचंद्र गंभीर हो कर बोले.

''किस पर?'' संजीव राठौर ने अचकचा कर पूछा.

''भाई दिनेश की पत्नी रमा और उस के आशिक अनमोल उर्फ अमन पर. हत्या की जानकारी रमा के भाई राहुल को भी होगी, लेकिन वह बहन के गुनाह को छिपाना चाहता है.''

रमेशचंद्र दिवाकर की बात सुन कर संजीव राठौर चौंके. उन्होंने इस घटना की सूचना एसएसपी संतोष कुमार मिश्रा को दे दी. उन्होंने मामले को गंभीरता से लेते हुए दिनेश की हत्या का परदाफाश करने के लिए एडिशनल एसपी त्रिभुवन सिंह के निर्देशन में एक स्पैशल टीम बना दी. टीम में तेजतर्रार सबइंसपेक्टर, कांस्टेबल तथा महिला सिपाहियों को शामिल किया गया.

## रमा ने किया गुमराह

पुलिस टीम ने सब से पहले मृतक दिनेश के बड़े भाई रमेशचंद्र दिवाकर से पूछताछ की तथा उन का बयान दर्ज किया. पूछताछ में रमेशचंद्र ने बताया कि दिनेश 6 जून की रात घर आया था, लेकिन रमा यह कह कर गुमराह कर रही है कि वह घर नहीं आया. रमा के घर से 200 मीटर दूर अधजली लाश खेत में पाई गई थी, लेकिन वह लाश की शिनाख्त के लिए नहीं गई.

एक रोज बाद रमा ने अपने आप को बचाने के लिए सास को पति के लापता होने की जानकारी दी. सब से अहम बात यह कि जब वह झगुवा नगला स्थित रमा के घर गया तो उस ने अपने बच्चों से बात नहीं करने दी.

घर में ताला बंद कर वह भाई राहुल के साथ ससुराल यानी हमारे यहां आ गई. रमा मायके न जा कर ससुराल इसलिए आई ताकि ससुराल वाले उस पर शक न करें. गुमराह करने के लिए ही उस ने श्रीनगर कंट्रोल रूम को फोन किया था.

रमेशचंद्र ने जो अहम जानकारी दी थी, उस से पुलिस टीम ने एएसपी त्रिभुवन सिंह को अवगत कराया तथा हत्या का परदाफाश

करने के लिए रमा तथा उस के सहयोगियों की गिरफ्तारी के लिए अनुमति मांगी. त्रिभुवन सिंह ने तत्काल पुलिस टीम को अनुमति दे दी. अनुमति मिलने पर पुलिस टीम ने रमा की ससुराल इकरई (एटा) में छापा मारा. रमा घर पर ही थी. पुलिस को देख कर वह रोनेधोने का नाटक करने लगी. लेकिन पुलिस टीम ने उस की एक नहीं सुनी और उसे गिरफ्तार कर फर्रूखाबाद कोतवाली ले आई.

रमा का मायका फर्रूखाबाद के चीनीग्राम में था. पुलिस टीम ने वहां छापा मार कर रमा के भाई राहुल दिवाकर को भी गिरफ्तार कर लिया. रमा का प्रेमी अनमोल उर्फ अमन फर्रूखाबाद जिले के थाना मेरापुर के गांव गुठना का रहने वाला था. पुलिस टीम ने उस के घर छापा मारा तो वह घर से फरार था.

घर पर उस के पिता महेश दिवाकर मौजूद थे. उन्होंने बताया कि अनमोल 2 दिन से घर नहीं आया है. पुलिस टीम ने जब उन्हें बताया कि पुलिस को एक हत्या के मामले में अनमोल की तलाश है तो वह आश्चर्यचकित रह गए.

जब पुलिस टीम लौटने लगी तब अनमोल के पड़ोसियों ने बताया कि अनमोल का एक जिगरी दोस्त है रामगोपाल, जो परचून की दुकान चलाता है. अनमोल जब भी फुरसत में होता है, तब रामगोपाल की दुकान पर पहुंच जाता है. दोनों घंटों बतियाते और अपने दिल की बात एकदूसरे को बताते हैं. रामगोपाल को पता होगा कि अनमोल कहां है.

## दोस्त से मिली खास जानकारी

यह जानकारी मिलते ही पुलिस टीम ने रामगोपाल को उस की परचून की दुकान से हिरासत में ले लिया और थाना कोतवाली ला कर जब उस से अनमोल के संबंध में पूछताछ की गई तो वह उस की जानकारी से मुकर गया.

इस पर पुलिस ने उस से सख्ती से पूछताछ की तब उस ने बताया कि अनमोल का एक दोस्त कमलकांत शर्मा है, जो उसी के गांव गुठना का रहने वाला है. कमलकांत उत्तर प्रदेश पुलिस में सिपाही है और इन दिनों कानपुर देहात जिले के महाराजपुर थाने में तैनात है.

आरोपी रमा का भाई राहुल

अनमोल संभवतः कमलकांत के ही संरक्षण में होगा.

रामगोपाल से अनमोल के संबंध में अहम जानकारी मिली तो पुलिस टीम ने महाराजपुर थाने से संपर्क कर के सिपाही कमलकांत शर्मा से मोबाइल पर बात की. कमलकांत ने पुलिस टीम के प्रभारी संजीव राठौर को बताया कि अनमोल उस के पास है और वह पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण करना चाहता है.

यह सुनते ही पुलिस टीम की बांछें खिल गईं. इस के बाद पुलिस टीम सिपाही कमलकांत के आवास पर पहुंची और अनमोल को फर्रूखाबाद कोतवाली ले आई. अनमोल को गिरफ्तार करने के बाद पुलिस टीम ने उस के दोस्त रामगोपाल को थाने से रिहा कर दिया.

पुलिस टीम ने थाना कोतवाली पर अनमोल उर्फ अमन से दिनेश कुमार की हत्या के संबंध में पूछताछ शुरू की तो उस ने सहज ही हत्या का जुर्म स्वीकार कर लिया. उस ने बताया कि वह दिनेश की पत्नी रमा से प्यार करता है. दोनों के बीच नाजायज संबंध बन गए थे. दिनेश नाजायज संबंधों का विरोध करता था. इसलिए हम दोनों ने मिल कर उस की हत्या कर दी और शव को खेत में फेंक कर जला दिया.

अनमोल ने यह भी बताया कि उसे दिनेश की हत्या का कोई अफसोस नहीं है बल्कि खुशी है कि उस की जान बच गई. क्योंकि दिनेश उसे व उस की प्रेमिका को ही मारने आया था. इसी वजह से वह घर में बिना किसी को बताए छुट्टी ले कर घर आ गया था. पूछताछ के बाद अनमोल ने हत्या में प्रयुक्त रायफल भी बरामद करा दी, जो उस ने छिपा दी थी.

## हो गया हत्या का परदाफाश

रमा का सामना जब अनमोल से हुआ तो उस ने गरदन झुका ली और पति की हत्या का जुर्म कबूल कर लिया. रमा ने बताया कि पति दिनेश को उस पर शक हो गया था. इसीलिए उस ने प्रेमी के साथ मिल कर उसे मौत की नींद सुला दिया. हत्या में उस के भाई राहुल का हाथ नहीं है. लेकिन उसे हम दोनों द्वारा हत्या किए जाने की जानकारी हो गई थी.

पूछताछ के बाद रमा ने घर में खड़ी लाल रंग की वह स्कूटी बरामद करा दी, जिस पर रख कर उस के प्रेमी अनमोल ने लाश खेत में फेंकी थी. राहुल ने पूछताछ में साफ इनकार कर दिया कि उसे हत्या की जानकारी थी, लेकिन पुलिस ने उस की इस बात को खारिज कर दिया.

पुलिस टीम ने दिनेश कुमार की हत्या का परदाफाश करने तथा अभियुक्तों को पकड़ने की जानकारी एसएसपी संतोष कुमार मिश्रा तथा एएसपी त्रिभुवन सिंह को दी. इस के बाद उन्होंने पुलिस सभागार में प्रैसवार्ता की और अभियुक्तों को मीडिया के सामने पेश कर घटना का खुलासा कर दिया.

चूंकि अभियुक्तों ने हत्या का जुर्म कबूल कर लिया था, इसलिए कोतवाली प्रभारी संजीव राठौर ने मृतक के बड़े भाई रमेशचंद्र दिवाकर को वादी बना कर भादंवि की धारा 302 के तहत रमा, अनमोल तथा राहुल के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर ली और तीनों को गिरफ्तार कर लिया. पुलिस जांच में एक अध्यापिका की पापलीला की सनसनीखेज कहानी सामने आई.

उत्तर प्रदेश का फर्रूखाबाद शहर आलू और बीड़ी उत्पादन के लिए दूरदूर तक मशहूर है. यहां पर आलू खुदाई और बीड़ी बनाने वाले मजदूर ठेके पर काम करते हैं. आलू खुदाई का काम तो मात्र 3 महीने ही चलता है लेकिन

Vikas Bhadauria

दिनेश कुमार अपनी पत्नी रमा और बेटी के साथ (फाइल फोटो)

बीड़ी बनाने का काम पूरे साल चलता है. यहां का बीड़ी उत्पादन का कारोबार कई राज्यों में फैला है.

बीड़ी व्यापार के लिए दूरदूर से व्यापारी आते हैं. इसे मजदूरों का शहर भी कहा जाता है. इस शहर का नाम फर्रूखाबाद कैसे पड़ा, इस की भी एक कहावत है. पहले फरख बात में बाद उस को कहते फर्रूखाबाद. यानी बात में फरख और विवाद. हर बात में झूठ फरेब का बोलबाला.

इसी फर्रूखाबाद जिले का एक गांव है चीनीग्राम. इसी गांव में देवकरन दिवाकर अपने परिवार के साथ रहते थे. उन के परिवार में पत्नी मालती के अलावा बेटी रमा तथा बेटा राहुल था. देवकरन दिवाकर प्रतिष्ठित व्यक्ति थे. उन की आर्थिक स्थिति मजबूत थी. घर में सभी भौतिक सुखसुविधाएं थीं.

उन की बेटी रमा खूबसूरत थी. जवानी की राह पर कदम रखते ही उस की सुंदरता में और निखार आ गया. उसे चाहने वाले अनेक थे. लेकिन वह किसी को भाव नहीं देती थी.

## रमा बनना चाहती थी टीचर

रमा जितनी खूबसूरत थी, उतनी ही पढ़नेलिखने में भी तेज थी. उस ने हाईस्कूल व इंटरमीडिएट की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में पास कर छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से बीए और बीएड किया था.

उसी दरम्यान उत्तर प्रदेश सरकार ने प्राथमिक शिक्षकों की भरती का विज्ञापन जारी किया. रमा ने भी आवेदन किया लेकिन किसी कारणवश परीक्षा रद्द हो गई, जिस से रमा की शिक्षक बनने की तमन्ना अधूरी रह गई.

देवकरन को जवान बेटी के ब्याह की चिंता सताने लगी थी. इसलिए वह उस के लिए उपयुक्त लड़का तलाशने लगे. बेटी की इच्छानुसार वह किसी शिक्षक वर की तलाश में थे, लेकिन कोई शिक्षक वर मिल नहीं रहा था. उन्हीं दिनों एक रिश्तेदार के माध्यम से उन्हें दिनेश कुमार के बारे में पता चला.

दिनेश कुमार के पिता राजेश दिवाकर एटा जिले के झकरई गांव में रहते थे. उन के 2 बेटे रमेशचंद्र व दिनेश कुमार थे. राजेश एक संपन्न किसान थे. वह बड़े बेटे रमेशचंद्र का विवाह कर चुके थे जबकि छोटा दिनेश कुमार अभी कुंवारा था. दिनेश सीआरपीएफ की 75वीं बटालियन में श्रीनगर में तैनात था.

राजेश ने दिनेश को देखा तो उन्होंने उसे अपनी बेटी रमा के लिए पसंद कर लिया. दोनों तरफ से बातचीत हो जाने के बाद जनवरी, 2006 में सामाजिक रीतिरिवाज से दिनेश और रमा का विवाह धूमधाम से हो गया.

पढ़ीलिखी व सुंदर बहू पा कर दिनेश के घर वाले फूले नहीं समा रहे थे. ससुराल में रमा को सभी का भरपूर प्यार मिला. घर में उसे किसी चीज की कमी नहीं थी. इस तरह से रमा का सुखमय जीवन व्यतीत होने लगा.

शादी के बाद भी शिक्षक बनने की तमन्ना रमा के दिल में थी. इस बाबत उस ने पति दिनेश और सासससुर से बात की तो उन्हें भी कोई ऐतराज नहीं था.

जब शिक्षक की भरती निकली तो रमा ने भी आवेदन कर दिया. उस ने पति दिनेश से अनुरोध किया कि वह किसी भी तरह से उसे नौकरी दिलवाने की कोशिश करें. दिनेश ने पत्नी की बात मान कर जीजान से कोशिश की तो रमा का चयन हो गया. उसे फर्रूखाबाद के राजेपुरा थानांतर्गत चाचूपुर गांव के प्राथमिक विद्यालय में सहायक शिक्षिका के पद पर नौकरी मिल गई.

## मायके से ही करने लगी ड्यूटी

नौकरी लग जाने के बाद रमा का ससुराल में रहना नामुमकिन सा हो गया. दरअसल, उस की ससुराल एटा जिले में थी और नौकरी फर्रूखाबाद जिले में लगी थी, जो उस के घर के नजदीक थी. इसलिए रमा मायके में रह कर अपनी ड्यूटी करती रही.

मायके से आनेजाने का साधन भी था और उस के रहने तथा खानेपीने की उचित व्यवस्था भी थी. सो उसे कोई परेशानी नहीं थी. इस के बावजूद दिनेश ने घूस दे कर रमा का तबादला एटा कराने का प्रयास किया, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली.

रमा का मायके में रहना न तो उस के पति दिनेश को पसंद था और न ही सासससुर को. लेकिन रमा की सरकारी नौकरी थी, इसलिए वे ज्यादा ऐतराज भी नहीं कर सकते थे. लेकिन कुछ दिनों बाद दिनेश ने मायके में रहने पर ऐतराज जताया तो रमा ने फर्रूखाबाद या उस के आसपास जमीन या प्लौट खरीद कर मकान बनाने की सलाह पति को दी.

रमा की सलाह मान कर दिनेश ने कोशिश शुरू की तो उस ने फर्रूखाबाद शहर से सटे झगुआ नगला गांव में एक प्लौट खरीद लिया और वहां 3 कमरे बनवा दिए. पूजापाठ कराने के बाद रमा इसी मकान में रहने लगी. स्कूल आनेजाने में पत्नी को परेशानी न हो, इस के लिए दिनेश ने एक स्कूटी यूपी78ए-0522 भी खरीद कर उसे दे दी.

Vikas Bhadauria

पति दिनेश कुमार की हत्या के आरोप में अध्यापिका रमा को गिरफ्तार किया गया

रमा अब तक एक बेटी और एक बेटे की मां बन चुकी थी. बच्चों की देखरेख व घरेलू काम के लिए उस ने एक महिला को अपने यहां नौकरी पर रख लिया था. इस के अलावा रमा का भाई राहुल भी वहां आताजाता रहता था ताकि बहन के मन में असुरक्षा की भावना पैदा न हो. रमा की सास उर्मिला भी कभीकभी उस के पास आतीजाती रहती थी.

## रमा को अपनी जवानी पर था गर्व

रमा 2 बच्चों की मां जरूर बन गई थी लेकिन उस का शारीरिक आकर्षण कम नहीं हुआ था. वह बनसंवर कर और महंगा काला चश्मा लगा कर स्कूटी पर घर से निकलती तो लोग उसे मुड़मुड़ कर देखते थे. रमा को स्वयं भी अपनी जवानी पर गर्व था.

लेकिन ऐसी जवानी का क्या, जिस का कोई कद्रदान न हो. दरअसल रमा का पति दिनेश सीआरपीएफ की 75वीं बटालियन में श्रीनगर में तैनात था. उसे तीसरेचौथे महीने बड़ी मुश्किल से महीना या 15 दिन की छुट्टी मिलती थी.

दिनेश जब साथ होता तो रमा की जिंदगी में बहार आ जाती थी. वह उस के साथ खूब मौजमस्ती करती. लेकिन उस के जाने के बाद उस के जीवन में नीरसता आ जाती. उस का दिन तो स्कूल में बच्चों के बीच कट जाता लेकिन रात करवटें बदलते बीतती थीं. कभीकभी वह सोचती कि उस ने सैनिक के साथ ब्याह कर के भारी भूल की है. उसे तो ऐसा मर्द चुनना चाहिए था, जो उस की तमन्नाओं को पूरा करता.

रमा के मन में पति के प्रति हीनभावना पैदा हुई तो उस का मन भटकने लगा. अब वह जिस्मानी सुख के लिए किसी युवक की तलाश में जुट गई.

## रमा ने ढूंढ लिया प्रेमी

उन्हीं दिनों एक रोज रमा की मुलाकात अनमोल उर्फ अमन से हुई. अनमोल फर्रूखाबाद जिले के थाना मेरापुर के गांव गुठना का रहने वाला था. उस के पिता महेशचंद्र दिवाकर सेना में थे किंतु अब रिटायर हो चुके थे. उन के परिवार में पत्नी राजवती के अलावा बेटा अनमोल तथा एक बेटी थी.

महेशचंद्र भी संपन्न किसान थे. उन के पास 20 बीघा उपजाऊ जमीन थी. कृषि उपज के साथ उन्हें पेंशन भी अच्छीखासी मिलती थी. उन के दोनों बच्चे पढ़नेलिखने में तेज थे. बेटी बीए करने के बाद बीएड कर रही थी जबकि अनमोल का चयन बीटीसी में हो गया था. वह एटा से 2 वर्षीय बीटीसी की ट्रेनिंग कर रहा था.

रमा की बुआ प्रीति की शादी अनमोल के ताऊ सुरेशचंद्र दिवाकर के बेटे मुकेश के साथ हुई थी इसलिए अनमोल रमा का खास रिश्तेदार भी था.

अनमोल शरीर से हृष्टपुष्ट व सुदर्शन युवक था. वह रहता भी ठाटबाट से था. रमा उसे अच्छी तरह जानती थी. अतः उस रोज अनमोल रमा के घर अचानक पहुंचा तो उसे देख कर रमा आश्चर्यचकित रह गई. दोनों एकदूसरे को कुछ देर तक अपलक देखते रहे.

रमा की खूबसूरती ने अनमोल के दिल में हलचल मचा दी. कुछ पलों के बाद रमा के होंठ फड़के, ''मेरी याद कैसे आ गई अमन. तुम ने तो मुझे भुला ही दिया.''

''ऐसी बात नहीं है. तुम्हारी याद तो मुझे हमेशा सताती रहती है. आज फर्रूखाबाद शहर में कुछ काम था. तुम्हारी याद आई तो अपने कदम रोक नहीं पाया और चला आया. तुम से मिल कर दिल को बड़ा सुकून मिला. अब मैं चलता हूं. मौका मिला तो फिर आऊंगा.''

''अरे वाह, ऐसे कैसे चले जाओगे. आज इतने दिनों बाद तो आए हो. कम से कम एक कप चाय तो पीते जाओ.'' रमा ने मुसकराते हुए कहा.

अनमोल भी यही चाहता था. कुछ देर में ही रमा 2 कप चाय बना कर ले आई. चाय पीने के दौरान अनमोल की नजरें रमा की देह पर ही टिकी रहीं. इस दौरान जब दोनों की नजरें टकरातीं, अनमोल मुसकरा देता. उस की मुसकराहट से रमा के दिल में हलचल मच जाती. वह सोचती काश ऐसे पुरुष का साथ मिल जाए तो उस के जीवन में बहार आ जाए.

अनमोल रमा से मिल कर अपने घर लौटा तो रमा का खूबसूरत चेहरा उस के दिलोदिमाग में ही घूमता रहा. दूसरी ओर रमा का भी यही हाल था. वह अनमोल की आंखों की भाषा पढ़ चुकी थी. अनमोल जानता था कि रमा का पति फौज में है. वह महीना-15 दिन की छुट्टी पर आता है और फिर चला जाता है. इसलिए रमा देह सुख की अभिलाषी है. अगर उस की तरफ कदम बढ़ाया जाए तो सफलता मिल सकती है.

अनमोल अब अकसर रमा के घर आने लगा. वह उस के बच्चों के लिए कुछ न कुछ जरूर लाता. रमा के बच्चे भी उस से हिलमिल गए और उसे अंकल कह कर बुलाने लगे. रमा और अनमोल दोनों के दिल एकदूसरे के लिए धड़क रहे थे. लेकिन अपनी बात जुबान पर लाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे.

एक दिन अनमोल सुबह 10 बजे रमा के घर पहुंच गया. रमा उस समय घर पर अकेली ही थी. उस के बच्चे स्कूल गए थे और वह बनसंवर कर बाजार जाने की तैयारी कर रही थी. अनमोल को देख कर वह मुसकरा कर बोली, ''अरे अमन तुम, इस वक्त. बच्चे तो स्कूल गए हैं.''

Vikas Bhadu

अनमोल रमा के चेहरे पर नजरें गड़ा कर बोला, ''रमा, आज मैं बच्चों से नहीं तुम से मिलने आया हूं.''

''अच्छा,'' रमा खिलखिला कर हंसी, ''इरादा तो नेक है.''

''नेक है तभी तो अकेले में मिलने चला आया. रमा, मैं तुम से बहुत प्यार करने लगा हूं.'' अनमोल ने सीधे ही मन की बात कह दी.

''अनमोल, तुम ने यह बात कह तो दी लेकिन जानते हो प्यार की राह में कितने कांटे हैं,'' रमा ने गंभीरता से कहा, ''मैं शादीशुदा और 2 बच्चों की मां हूं.''

''जानता हूं, फिर भी जब तुम चाहोगी, मैं सारी बाधाओं को तोड़ दूंगा.'' अनमोल ने रमा के करीब जा कर कहा.

इस के बाद अनमोल के गले में बांहें डाल कर रमा ने कहा, ''अमन, मैं भी तुम्हें बहुत चाहती हूं. लेकिन शर्म की वजह से दिल की बात नहीं कह पा रही थी.''

अनमोल ने रमा को पकड़ कर सीने से लगा लिया. फिर तो मर्यादा भंग होते देर नहीं लगी. जिस्मानी रिश्ते की नींव पड़ गई तो वासना का महल खड़ा होने लगा. अनमोल को जब भी मौका मिलता, वह रमा के घर आ जाता और इच्छा पूरी कर के चला जाता.

धीरेधीरे समय बीतता गया तो अमन ने भी अपना दायरा बढ़ा दिया. अब वह कईकई दिनों तक रमा के घर रुक कर मौजमस्ती करता. रमा रात को अपने बच्चों को डांटडपट कर दूसरे कमरे में सुला देती और खुद प्रेमी अनमोल के साथ रात भर जिस्मानी सुख का आनंद उठाती.

कहावत है कि औरत जब फिसलती है तो वह सारी मर्यादाओं को ताख पर रख देती है. रमा फिसली तो उस ने भी सारी मर्यादाओं पर पलीता लगा दिया. अनमोल के इश्क में अंधी रमा यह भूल गई कि वह 2 बच्चों की मां है.

रमा का प्रेमी हत्यारोपी अनमोल उर्फ अमन

उस के परिवार की मानमर्यादा है और उस का पति देश की सुरक्षा में अपनी जान हथेली पर रखे हुए है.

## बच्चों ने बता दी रमा की करतूत

अनमोल के आने का सिलसिला बढ़ता गया तो पासपड़ोस के लोगों की नजरों में दोनों खटकने लगे. कुछ महीने बाद दिनेश छुट्टी पर आया तो लोगों ने रमा और अनमोल के बारे में उसे बताया.

पड़ोसियों की बात सुन कर दिनेश का माथा ठनका. उस ने अपनी बेटी व बेटे से पूछा तो दोनों ने बताया कि अमन अंकल घर आते हैं और रात को घर में रुकते हैं. मासूमों ने यह बात भी बताई कि मम्मी उन दोनों को अपने कमरे में नहीं लिटातीं. वह उन्हें डांट कर दूसरे कमरे में बंद कर देती हैं. खुद अमन अंकल के साथ सोती हैं.

दिनेश पत्नी रमा पर बहुत अधिक भरोसा करता था. लेकिन आज उस का भरोसा टूट गया था. उस ने गुस्से में पूछा, ''रमा, हमारी गैरमौजूदगी में अनमोल यहां क्यों आता है? वह रात में क्यों रुकता है? तुम दोनों के बीच क्या खिचड़ी पकती है. वैसे मुझे उड़ती खबर मिली है कि तुम्हारे और अनमोल के बीच नाजायज संबंध हैं.''

रमा न डरी न लजाई. बेबाक आवाज में बोली, ''जिन के पति परदेश में होते हैं, उन की पत्नियों पर ऐसे ही इलजाम लगाए जाते हैं. इस में नया कुछ नहीं है. पड़ोसियों ने कान भरे और तुम ने सच मान लिया. तुम्हें अपनी पत्नी पर भरोसा करना चाहिए.''

लेकिन दिनेश ने रमा की एक न सुनी. उस ने उसे जम कर पीटा और सख्त हिदायत दी कि अनमोल घर आया तो उस की खैर नहीं. उस ने अनमोल को भी उस के गांव जा कर फटकारा और उस के मांबाप से उस की शिकायत की.

दिनेश जितने दिन घर में रहा, अनमोल को ले कर उस का झगड़ा पत्नी से होता रहा. बात बढ़ जाती तो दिनेश रमा की पिटाई भी कर देता. छुट्टी खत्म होने के बाद दिनेश अपनी ड्यूटी पर चला गया.

दिनेश के जाते ही रमा और अनमोल का मिलन फिर से शुरू हो गया. हां, इतना जरूर हुआ कि अनमोल अब दिन के बजाए रात को आने लगा था. प्रेमिका की पिटाई से अनमोल आहत था. उस का मन करता कि वह दिनेश को सबक सिखा दे.

रमा जान चुकी थी कि उस के बच्चे उस की शिकायत दिनेश से कर देंगे, इसलिए वह अब बच्चों से भी सतर्क रहने लगी थी. बच्चों के सो जाने के बाद ही वह अनमोल को फोन कर घर बुलाती थी. अनमोल शराब पीता था. उस ने रमा को भी शराब का चस्का लगा दिया था. बिस्तर पर जाने से पहले दोनों जाम टकराते थे.

मई के महीने में दिनेश छुट्टी ले कर घर आया तो पता चला कि अनमोल मना करने के बावजूद उस के घर आता है. रमा उसे मना करने के बजाए उस के साथ शराब पीती है. यह सब जान कर दिनेश का खून खौल उठा.

उस ने जम कर रमा की पिटाई की और धमकी दी कि जिस दिन वह दोनों को साथ देख लेगा, उसी दिन उन के सीने में गोली उतार देगा. उस ने रमा के नाजायज रिश्तों की जानकारी अपने भाई रमेशचंद्र को भी दे दी. कुछ दिन घर रुक कर वह फिर वापस श्रीनगर चला गया.

लेकिन इस बार दिनेश का मन ड्यूटी पर नहीं लगा. उस ने किसी तरह अपने अधिकारी से आने के 20 दिन बाद ही 15 दिन की छुट्टी

मंजूर करा ली. इस बार दिनेश ने छुट्टी मंजूर होने तथा घर आने की सूचना किसी को नहीं दी. हर बार वह छुट्टी मिलने की सूचना फोन से पत्नी को दे देता था. इस की वजह यह थी कि वह अचानक घर पहुंच कर देखना चाहता था कि पत्नी पीठ पीछे क्या करती है.

Vikas Bhadauria

इधर दिनेश के जाते ही रमा और अनमोल फिर से मौजमस्ती में डूबने लगे. उन दोनों को विश्वास था कि अब 4 महीने बाद ही दिनेश छुट्टी ले कर घर आएगा.

लेकिन दिनेश 6 जून, 2019 की रात 11 बजे ही अपने घर झगुआ नगला आ गया.

एसएसपी संतोष कुमार मिश्र

दरअसल वह दोनों को रंगेहाथ पकड़ने तथा उन का काम तमाम करने ही आया था. उस रात रमा का प्रेमी अनमोल घर पर ही था और रमा के साथ बिस्तर पर था.

दिनेश ने दरवाजा पीटा तो रमा घबरा गई. दोनों ने जल्दीजल्दी अपने कपड़े दुरुस्त किए और रमा ने अनमोल को दूसरे कमरे की टांड पर छिपा दिया. फिर उस ने जा कर दरवाजा खोला तो सामने उस का पति दिनेश खड़ा था. उस की आंखों में क्रोध की ज्वाला भड़क रही थी.

दिनेश ने देर से दरवाजा खोलने की बाबत रमा से पूछा तो रमा ने गहरी नींद में होने का बहाना बनाया. इस पर दिनेश को शक हुआ तो उस ने रमा का हाथ मरोड़ दिया और पिटाई कर दी.

दिनेश को शक था कि अनमोल घर के अंदर ही कहीं है. अपने शक की पुष्टि के लिए उस ने सभी कमरों की तलाशी ली, लेकिन उसे अनमोल कहीं दिखाई नहीं दिया. अनमोल के न मिलने से दिनेश का गुस्सा कुछ कम हो गया. उस ने कहा कि तुम दोनों को आज मैं एक साथ पकड़ लेता तो दोनों ही जिंदा न रहते.

इस के बाद रमा ने अपने लटकेझटके दिखा कर दिनेश का बाकी बचा गुस्सा शांत किया. फिर रमा ने पति को बिस्तर पर संतुष्ट किया.

देह सुख प्राप्त करने के बाद दिनेश गहरी नींद में सो गया. पति के सो जाने के बाद रमा ने अनमोल को टांड से नीचे उतारा. दोनों ने आंखों ही आंखों में इशारा किया फिर दोनों गहरी नींद में सो रहे दिनेश के पास पहुंचे.

दिनेश की रायफल कमरे में ही रखी थी. अनमोल ने लपक कर रायफल उठाई और

एसपी त्रिभुवन सिंह

दिनेश के सीने में 2 गोलियां दाग दीं. दिनेश खून से लथपथ हो कर तड़पने लगा. इसी समय उस की छाती पर सवार हो कर रमा ने तार से उस का गला घोंट दिया.

हत्या करने के बाद दिनेश के शव को उन दोनों ने कमरे में छिपा दिया और बाहर से ताला बंद कर दिया. सवेरा होने से पहले उन्होंने कमरे से खून आदि साफ कर दिया था.

7 जून को दिनेश का शव कमरे में ही बंद रहा. बच्चों ने कमरा खोलने की जिद की तो रमा ने उन्हें बुरी तरह पीट दिया. फिर रात होने पर अनमोल ने दिनेश के शव को बोरी में भरा और स्कूटी पर रख कर गांव के बाहर खेत में फेंक दिया. लाश पहचानी न जाए, इस के लिए उस ने पैट्रोल डाल कर शव को जला दिया.

खून सनी चादर भी उस ने जला दी तथा दिनेश का बैग जिस में उस के कपड़े वगैरह थे, बस स्टौप जा कर दिल्ली जाने वाली रोडवेज की एक बस में रख दिया तथा मोबाइल तोड़ कर फेंक दिया. ये सब करने के बाद अनमोल फरार हो गया.

8 जून को झगुआ नगला गांव के लोगों ने खेत में जली लाश देखी तो सूचना फर्रूखाबाद कोतवाली पुलिस को दी. शव की पहचान न होने से पुलिस ने शव अज्ञात में पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. इधर 8 जून को ही रमा ने सास उर्मिला को फोन कर जानकारी दी कि दिनेश छुट्टी ले कर घर आया, लेकिन घर नहीं पहुंचा.

तब 10 जून को रमेशचंद्र भाई का पता लगाने फर्रूखाबाद आया और कोतवाली में अज्ञात शव की फोटो देख कर दिनेश की पहचान की. इस के बाद शक के आधार पर उन्होंने रमा, उस के भाई राहुल तथा प्रेमी अनमोल के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा दी. कोतवाली पुलिस ने तीनों को पकड़ कर पूछताछ की तो हत्या का परदाफाश हुआ.

13 जून, 2019 को फर्रूखाबाद कोतवाली पुलिस ने अभियुक्त अनमोल, राहुल और रमा को फर्रूखाबाद की कोर्ट में रिमांड मजिस्ट्रैट की अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें जिला कारागार भेज दिया गया. कथा संकलन तक उन की जमानत स्वीकृत नहीं हुई थी. रमा की बेटी तथा बेटा अपने दादादादी के पास सुरक्षित थे.

अनमोल ने दिनेश को रायफल से 2 गोलियां मारी थीं. रात के सन्नाटे में गोलियों की आवाज पड़ोसियों ने जरूर सुनी होगी, लेकिन पुलिस इस बात का पता नहीं लगा पाई कि पड़ोसियों ने गोली की आवाज सुनने वाली बात जानबूझ कर छिपाए रखी या इस की कोई दूसरी वजह थी. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

## आप बनें जज

अगर आप जनता के जज हों तो इन में से किसकिस को कसूरवार मानेंगे और कितनीकितनी सजा देंगे.

*1. रमा*
*2. अनमोल उर्फ अमन*
*3. राहुल*

अपना उत्तर वाट्सऐप नंबर 8527750077 पर 20 अगस्त, 2019 तक भेजिए. यदि आपका उत्तर प्रकाशन योग्य हुआ तो प्रकाशित करने के बाद 500 रुपए का नकद ईनाम दिया जाएगा.

## कठुआ, जम्मू कश्मीर

कठुआ में 8 साल की मासूम बच्ची के साथ गैंगरेप कर के जिस तरह मौत के घाट उतारा गया, ऐसा काम नराधम ही कर सकते हैं. ऐसे लोगों को जितनी सजा दी जाए, कम ही होगी. अदालत ने इस बात को समझा भी और...

Vikas Bhadauria

# इंसानियत की कब्र से निकले इंसान

❑ हरमिंदर खोजी

काश... ताजिरात-ए-हिंद की दफाओं में मरी हुई इंसानियत का भी कोई मरहम होता. कोई ऐसा जर्राह होता जो दवा पीस कर बांध देता, कोई ऐसी बूटी होती जो हमारे बच्चों को बुरी नजरों से बचा लेती. आदम की औलादें इतनी बुरी तो न थीं कि हमें शर्म आती खुद को इंसां कहने पर.

यह तो नहीं मालूम कि ये पंक्तियां किस ने लिखी हैं. हां, यह जरूर है कि जिस ने भी लिखीं, खूब लिखीं. कठुआ कांड पर तो ये पंक्तियां सौ फीसदी सटीक बैठती हैं. 10 जून, 2019 को कठुआ कांड का फैसला सुनाने वाले न्यायाधीश तेजविंदर सिंह ने भी अपना फैसला देते हुए कुछ ऐसी ही व्यथा व्यक्त की. अपने फैसले के शुरू में उन्होंने गालिब की गजल की पंक्तियां लिखीं, 'पिन्हा था दाम-इ-सख्त करीब आशियां के, उड़ने न पाए थे कि गिरफ्तार हम हुए.'

यानी शिकारियों ने इतना बड़ा जाल बिछा रखा था कि उड़ने से पहले ही पकड़ लिया गया. 2011 में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने पश्चिम बंगाल में एक सैक्स वर्कर की हत्या के मामले में भी मिर्जा गालिब की इन्हीं पंक्तियों का जिक्र किया था.

कठुआ कांड में 8 साल की एक मासूम बच्ची को जिस तरह कईकई मौत मारा गया, वह वाकई दिल दहलाने वाला था. बच्ची चूंकि एक ऐसे समाज की थी, जो समाज का दबाकुचला वर्ग ही नहीं, बल्कि घुमंतू और भेड़बकरियां पाल कर अपने परिवार की जीविका चलाने वाला था.

आश्चर्य की बात यह कि इस जघन्य से जघन्यतम मामले में न नेता अपनी नेतागिरी चमकाने में पीछे रहे, न वकील, न पुलिस और न ही हर बात को हिंदू मुसलिम के नजरिए से देखने वाले. 8 साल की बच्ची के साथ बारबार बलात्कार और हत्या के इस जघन्य मुकदमे की 367 दिन तक लगातार सुनवाई हुई. सुनवाई पूरी होने पर न्यायाधीश तेजविंदर

अदालत द्वारा दोषी ठहराए गए मुजरिम बाएं से—कांस्टेबल तिलक राज, एसआई आनंद दत्ता, एसपीओ दीपक खजूरिया, पुलिस औफिसर सुरेंद्र कुमार और संजीराम

सिंह ने 10 जून, 2019 को अपना फैसला सुनाया.

इस फैसले में 3 आरोपियों को आपराधिक षडयंत्र रचने और हत्या के आरोप में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई. जबकि 3 अपराधियों को सबूत मिटाने का गुनहगार मानते हुए उन के लिए 5 साल की सजा तय की गई. एक आरोपी को ठोस सबूत न होने की वजह से बरी कर दिया गया. अनिल शर्मा द्वारा निर्देशित और सनी देओल, प्रिटी जिंटा व प्रियंका चोपड़ा द्वारा अभिनीत सन 2003 में आई हिंदी फिल्म 'द हीरो: लव स्टोरी औफ ए स्पाइ' में बकरवाल समुदाय के विषय में काफी कुछ दिखाया गया था.

Vikas Bhadu



इसी मंदिर में बकरवाल समुदाय की मासूम नसरीन के साथ हुआ था दुराचार

भारतीय फौज की आंख और कान होते हैं गुर्जर बकरवाल समुदाय के लोग. फौज के सब से भरोसेमंद साथी, जो उन्हें दुर्गम से दुर्गम पहाड़ों और दर्रों की जानकारी ही नहीं, बल्कि पड़ोसी देश के दुश्मनों की सूचना भी देते हैं. ये सूचनाएं ऐसी होती हैं जो फौज के लिए संजीवनी का काम करती हैं.

बंटवारे के वक्त भारतीय फौज को पाकिस्तान से कबायली हमलों की जानकारी गुर्जर बकरवालों ने ही दी थी. इतना ही नहीं, यह समाज उन के खिलाफ फौज के साथ लड़ा भी था. चाहे सन 1965 की लड़ाई हो या करगिल का युद्ध, हर बार बकरवालों ने अपनी जान की परवाह न कर के भारतीय फौज को दुश्मनों के ठिकानों की सूचनाएं दीं और साथ खड़े रहे.

हालात या हुकूमत चाहे जो भी रही, लेकिन गुर्जर बकरवालों ने कभी भी आतंकवाद या अलगाववाद का रत्ती भर समर्थन नहीं किया. औपरेशन सर्प विनाश इस का उदाहरण है, जिस में गुर्जरों ने फौज के साथ मिल कर आतंकियों का सफाया किया था. गुर्जर बकरवाल कौम ने अपने धार्मिक तौरतरीके भले ही बदले हों, लेकिन राष्ट्रप्रेम व राष्ट्ररक्षा का भाव नहीं बदला.

बकरवाल समुदाय का मुख्य व्यवसाय है भेड़बकरी चराना. गुर्जर और बकरवालों को 3 हिस्सों में बांटा जा सकता है. मसलन कुछ गुर्जर और बकरवाल पूरी तरह से खानाबदोश होते हैं. ये लोग सिर्फ जंगलों में डेरा डाल कर अपनी और अपने परिवार की गुजरबसर करते हैं. इन के पास अपना कोई ठिकाना नहीं होता.

वहीं दूसरी तरह के बकरवालों में आंशिक खानाबदोश आते हैं. इन लोगों के पास कहीं एक जगह रहने का ठिकाना नहीं होता. ये आसपास के जंगलों में कुछ समय के लिए चले जाते हैं और कुछ समय बिता कर वापस अपने डेरे पर आ जाते हैं. इस समुदाय की तीसरी श्रेणी में जो लोग आते हैं, उन्हें शरणार्थी खानाबदोश कहते हैं. ये लोग मैदानी इलाकों में रहते हैं.

फिलहाल गुर्जर और बकरवाल देश के 12 राज्यों में रह रहे हैं. भारत के अलावा यह जाति पाकिस्तान और अफगानिस्तान में भी रहती है. इन की भाषा, लिबास, खानपान और रहनसहन अलग होता है. सन 1991 में सरकार ने बकरवालों को आदिवासी समुदाय का दरजा दिया था.

2011 की जनगणना के मुताबिक, फिलहाल जम्मूकश्मीर में इस समुदाय के लगभग 12 लाख लोग हैं. लेकिन आजादी के 72 साल बीत जाने के बाद भी ये लोग अपना जीवनयापन आसमान की नीली छतरी के नीचे मैदानी और पहाड़ी इलाकों में करते हैं. वहीं अपने मवेशियों के साथ रहते भी हैं.

कठुआ जिले की हीरानगर तहसील के रसानागांव में संजीराम नामक व्यक्ति रहता था. राजस्व अधिकारी के पद से रिटायर होने

## हाईकोर्ट में याचिका

कठुआ गैंगरेप और बच्ची की हत्या के मामले में लोगों को उम्मीद थी कि इस केस को रेयरेस्ट औफ रेयर की संज्ञा में रख कर सजा दी जाएगी, लेकिन संभवत: उस स्तर के सबूतों के अभाव में ऐसा नहीं हो सका. इसी के मद्देनजर पीड़ित बच्ची के पिता ने 10 जुलाई को चंडीगढ़ हाईकोर्ट में याचिका दायर कर के दोषियों को दी गई सजा के खिलाफ इस केस को रेयरेस्ट औफ रेयर की श्रेणी में रख कर फांसी की सजा देने की मांग की.

साथ ही याचिका में उन सजायाफ्ता अपराधियों को जिन्हें 5-5 साल की सजा दी गई, को आजीवन कारावास की सजा देने की मांग की गई.

हाईकोर्ट ने 18 जुलाई को इस याचिका की सुनवाई करते हुए सभी आरोपियों को और जम्मू ऐंड कश्मीर सरकार को नोटिस जारी किए हैं. केस की सुनवाई के लिए 7 अगस्त की तारीख तय की गई.

अब हाईकोर्ट इस केस के मास्टरमाइंड संजीराम, विशेष पुलिस अफसर दीपक खजूरिया और प्रवेश कुमार को मिली आजीवन कारावास की सजा और एसआई आनंद दत्ता, विशेष पुलिस अधिकारी सुरेंद्र वर्मा और हेडकांस्टेबल तिलक राज को मिली 5-5 साल की सजा के खिलाफ सुनवाई करेगा. याचिका में विशाल जंगोत्रा (संजीराम का बेटा) को रिहा किए जाने के फैसले पर भी पुन: सुनवाई की मांग की गई है.

हाईकोर्ट द्वारा याचिका स्वीकार कर लेने से यह निश्चित हो गया है कि इस मामले में अभी और उठापटक होगी. ❒

बकरवाल समुदाय के लोग इसी तरह भेड़बकरियां चरा कर अपना जीवनयापन करते हैं

के बाद वह सपरिवार इस गांव में बस गया था. संजीराम गांव के एक प्राचीन मंदिर का मुख्य सेवादार भी था.

इस मंदिर को ले कर आसपास के कई गांवों के लोगों के मन बड़ी श्रद्धा और आस्था है. सुबहशाम मंदिर में पूजाअर्चना होती है, जिस में काफी लोग सम्मिलित होते हैं.

यह मंदिर गांव से हट कर जंगल के पास है. इत्तफाक से कश्मीर के बरफीले इलाकों से आए बकरवाल समुदाय के कुछ परिवारों ने उन्हीं जंगलों के पास अपने डेरे डाल लिए थे. उन में एक डेरा मोहम्मद यूसुफ का भी था. यह नवंबर-दिसंबर, 2017 की बात है. संजीराम को उन का वहां रहना पसंद नहीं था.

हालांकि बकरवालों के डेरों से गांव वालों को कोई परेशानी नहीं थी. वे लोग मंदिर और गांव से काफी दूर थे. परेशानी केवल संजीराम को ही थी. वजह शायद यह कि ये लोग अलग समुदाय से या मुसलिम परिवारों से थे. संजीराम ने बकरवालों के डेरे वहां से हटाने के लिए कई बार उन से झगड़ा भी किया था.

एकदो बार इस की शिकायत पुलिस तक भी पहुंची थी. पुलिस और गांव के लोगों ने दोनों पक्षों को समझा कर मामला शांत करवा दिया था. बकरवालों के डेरे ज्यों के त्यों अपनी जगह पर थे.

संजीराम ने मंदिर पर पूजा करने आने वाले लोगों और गांव वालों को भी उकसाने की बहुत कोशिशें कीं, पर वह बकरवालों के डेरे वहां से हटवाने में सफल नहीं हो सका था. हर तरफ से निराश होने के बाद अंत में उस ने बकरवालों को सबक सिखाने के लिए एक बेहद कुत्सित योजना बनाई.

बकरवाल समुदाय के लोगों की जीविकोपार्जन का साधन उन के पशु होते हैं, जिन्हें वे दिन भर चराते हैं. यूसुफ बकरवाल की 8 वर्षीय बेटी नसरीन अपने घोड़ों और बकरियों को चराने मंदिर के पास वाले रास्ते से हो कर जंगल में जाती. संजीराम उसे रोजाना जाते हुए देखता था.

## संजीराम की घिनौनी करतूत

नसरीन 10 जनवरी, 2018 को दोपहर करीब साढ़े 12 बजे अपने घर से घोड़ों और बकरियों को चराने के लिए निकली थी और लापता हो गई थी. काफी तलाश करने के बाद भी जब नसरीन का कुछ पता नहीं चला तो उस के पिता यूसुफ ने थाना हीरानगर पुलिस से लड़की के गायब होने की शिकायत दर्ज करवाई. लेकिन पुलिस ने लड़की को खोजने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई.

करीब एक सप्ताह बाद 17 जनवरी, 2018 को उसी जंगल में नसरीन की लाश मिली. नसरीन की हत्या की रिपोर्ट 12 जनवरी, 2018 को थाना हीरानगर में दर्ज हुई. पुलिस ने उस की लाश पोस्टमार्टम के लिए भेज दी.

पोस्टमार्टम और मैडिकल रिपोर्ट के मुताबिक बच्ची के साथ कई बार, कई दिनों तक लगातार बलात्कार हुआ था. उस के शरीर पर जगहजगह छोटेबड़े 86 चोटों के निशान थे. इतना ही नहीं, उस के शरीर से भारी मात्रा में नशे के ट्रेसिस भी मिले. उस की पत्थरों से मारमार कर हत्या की गई थी.

इस मामले की जांच विशेष पुलिस अधिकारी दीपक खजूरिया को सौंपी गई. उस के साथ टीम में एएसआई प्रवेश कुमार, सुरिंदर कुमार और हैड कांस्टेबल तिलक राज भी शामिल थे.

इस मामले में 20 जनवरी, 2018 को पुलिस ने संजीराम के किशोर भतीजे को गिरफ्तार कर जांच पूरी कर दी. लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह बात पहले से ही स्पष्ट हो गई थी कि मासूम के साथ एक नहीं, बल्कि कई लोगों ने कई दिनों तक हैवानियत की थी.

बकरवालों के साथसाथ कोई भी यह बात मानने को तैयार नहीं हुआ कि यह कुकृत्य केवल एक किशोर का है. इस बात को ले कर बकरवालों ने इलाके में प्रदर्शन किया और नैशनल हाइवे जाम कर तोड़फोड़ शुरू कर दी. ये लोग असल मुलजिमों को गिरफ्तार करने की मांग कर रहे थे, लेकिन बदले में उन्हें पुलिस की लाठियां खानी पड़ीं. इस के बाद पूरे जम्मूकश्मीर में हंगामा हो गया.

लोग हजारों की संख्या में सड़क पर निकल कर प्रदर्शन करने लगे. जम्मूकश्मीर विधानसभा में मासूम की हत्या और बलात्कार की गूंज कई दिनों तक सुनाई देती रही. विपक्ष के हंगामे के बाद सरकार ने सदन में बताया कि इस सिलसिले में 15 साल के एक किशोर को गिरफ्तार किया गया है.

सदन में सरकार के बयान और 15 वर्ष के किशोर की गिरफ्तारी के दावे के बावजूद 8 वर्षीय मासूम के असल गुनहगार की गिरफ्तारी की मांग का मामला जोर पकड़ता गया.

नसरीन की लाश मिलने के बाद जम्मूकश्मीर से ले कर पूरे देश में ऐसा बवाल उठ खड़ा हुआ, जिस की किसी ने कल्पना तक नहीं की थी. मासूम के साथ हुए इस क्रूर और अमानवीय अत्याचार के बाद इसे धार्मिक और राजनीतिक तमाशा बना दिया गया.

चाल, चरित्र और चेहरे की बात करने वाली पार्टी से जुड़े लोग मैदान में उतर आए. बनाए गए हालात ने सांप्रदायिकता का वह वीभत्स चेहरा पेश किया, जिसे धूर्तता की इंतहा कहा जा सकता है.

20 जनवरी, 2018 को सरकार की ओर से थाने के एसएचओ को सस्पेंड कर दिया गया. साथ ही इस मामले की मजिस्ट्रैटी जांच

के आदेश दिए गए. लेकिन फिर भी हंगामा नहीं थमा. इस के बाद जम्मूकश्मीर की महबूबा मुफ्ती सरकार ने 23 जनवरी, 2018 को इस मामले को राज्य पुलिस की अपराध शाखा को सौंप दिया, जिस ने विशेष जांच दल का गठन कर के मामले की जांच शुरू की.

Vikas Bhadu

## सही राह पर आई जांच

यह जांच आईजी आलोक पुरी और सैय्यद अब्दुल मुस्तफा की देखरेख में एएसपी पीरजादा नवीद, डीएसपी निसार हुसैन, डीएसपी जम्मू श्वेतांबरी शर्मा, इंसपेक्टर केवल किशोर गुप्ता, एएसआई निसार हुसैन और तारिक अहमद ने शुरू की.

इस जांच में डीएसपी श्वेतांबरी शर्मा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. श्वेतांबरी शर्मा ने ही उस मंदिर के अंदर जा कर सबूत इकट्ठे किए, जहां बच्ची को बंधक बना कर रेप किया गया था. बाद में इस से ही साबित हो पाया कि बच्ची मंदिर में ही थी.

जांच के दौरान अपराध शाखा ने इस पूरे मामले के पहले आईओ रहे एसआई आनंद दत्ता को गिरफ्तार कर लिया. जांच आगे बढ़ी तो पता चला कि इस सामूहिक बलात्कार मामले में जम्मूकश्मीर का एक स्पैशल पुलिस अधिकारी दीपक खजूरिया भी शामिल था.

10 फरवरी को अपराध शाखा ने दीपक खजूरिया को भी गिरफ्तार कर लिया. धीरेधीरे इस मामले में पुलिस ने कुल 7 लोगों को गिरफ्तार किया, जिन में से एक को नाबालिग बताया गया. हालांकि बाद में अपराध शाखा के अधिकारियों के मुताबिक मैडिकल परीक्षण से यह पता चला कि जिस आरोपी को किशोर समझा गया था, वह 19 साल का था.

इस पूरी वारदात के मुख्य आरोपी ने खुद ही सरेंडर कर दिया था. गिरफ्तार किए गए लोगों में स्पैशल पुलिस औफिसर दीपक खजूरिया, पुलिस औफिसर सुरेंद्र कुमार, रसाना गांव का प्रवेश कुमार, एसआई आनंद दत्ता, हैड कांस्टेबल तिलक राज, पूर्व राजस्व अधिकारी का बेटा विशाल और उस का चचेरा भाई, जिसे नाबालिग बताया गया, शामिल थे.

एसपीओ दीपक खजूरिया, जिसे आजीवन कारावास की सजा मिली

इस मामले में पूर्व राजस्व अधिकारी संजीराम का नाम मुख्य आरोपी के तौर पर सामने आया, जिस के बाद उस के खिलाफ गैरजमानती वारंट जारी कर दिया गया. जब पुलिस ने उस के बेटे विशाल को गिरफ्तार कर लिया तो संजीराम ने भी आत्मसमर्पण करने में ही भलाई समझी.

इस मामले में संवेदनहीनता का एक बड़ा नमूना तब सामने आया, जब 10 फरवरी, 2018 को दीपक खजूरिया की गिरफ्तारी के ठीक 7 दिन बाद कठुआ में हिंदू एकता मोर्चा ने उस के समर्थन में रैली का आयोजन किया. प्रदर्शन में कथित तौर पर भाजपा के कुछ लोग भी शामिल थे. प्रदर्शनकारी हाथों में तिरंगा ले कर आरोपी की रिहाई की मांग कर रहे थे.

इस से संबंधित कुछ वीडियो भी वायरल हुए थे, जिस में कथित तौर पर भाजपा नेताओं ने कहा था कि क्राइम ब्रांच को किसी की गिरफ्तारी से पहले सोचना होगा. यहां जंगलराज नहीं चलेगा. वीडियो में भाजपा नेता आंदोलन की धमकी देते भी सुनाई दिए. जब यह मुद्दा उछला तो सियासत इस कदर हावी हुई कि सत्तारूढ़ पीडीपी और सहयोगी भाजपा के बीच तल्खी बढ़ती गई.

हालांकि भाजपा ने अपने विधायकों के स्टैंड से खुद को अलग कर लिया था. फिर भी तत्कालीन पीडीपी-भाजपा गठबंधन सरकार का हिस्सा रहे भाजपा के 2 मंत्रियों चौधरी लाल सिंह और चंद्रप्रकाश गंगा ने आरोपियों के समर्थन में निकाली गई रैली में हिस्सा लिया.

बाद में यह मामला सत्तारूढ़ गठबंधन के सहयोगियों पीडीपी और भाजपा के बीच विवाद का विषय बन गया. इन दोनों मंत्रियों को अपना पद छोड़ना पड़ा था.

कठुआ में रैली के बाद मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने ट्वीट किया, 'मुझे इस बात का दुख है कि पकड़े गए आरोपी के समर्थन में कठुआ में एक रैली निकाली गई. रैली में तिरंगा भी लहराया गया. यह तिरंगे का अपमान है. कानून अपना काम करेगा.'

इस के बाद पुलिस ने सारे आरोपियों को गिरफ्तार कर के 9 अप्रैल, 2018 को आरोपपत्र दायर करने की तैयारी कर ली थी. लेकिन उस दौरान सब से बड़ी संवेदनहीनता वकीलों के एक समूह द्वारा दिखाई गई.

जब अपराध शाखा को अदालत में आरोपपत्र दाखिल करना था, तब वकीलों के एक बड़े समूह ने अपराध शाखा का विरोध शुरू कर दिया. उन्होंने इतना हंगामा किया कि 9 अप्रैल, 2018 को आरोपपत्र दाखिल नहीं हो पाया.

क्राइम ब्रांच ने आरोपपत्र 10 अप्रैल को दाखिल किया. वह भी तब जब जम्मूकश्मीर के कानून मंत्री ने मामले में दखल दिया. इस के 6 घंटे बाद चीफ जुडीशियल मजिस्ट्रैट ने आरोपपत्र स्वीकार कर लिया.

चार्जशीट के मुताबिक, बलात्कार और हत्या की साजिश रचने में संजीराम का ही हाथ था. उस ने बच्ची के अपहरण, दुष्कर्म और हत्या की बाकायदा योजना बनाई थी. उसी ने विशेष पुलिस अधिकारी खजूरिया और नाबालिग बताए गए एक अन्य आरोपी को अपनी साजिश में शामिल किया था.

## रेप के लिए खिलाई गईं नशीली गोलियां

दीपक अपने दोस्त विक्रम के साथ 7 जनवरी की शाम बिट्टू मैडिकल स्टोर पर गया और नशीली दवा की 10 टैबलेट खरीद लाया, जिस का नाम उस के चाचा ने सुझाया था.

चार्जशीट के मुताबिक, संजीराम ने अपने भतीजे को 8 साल की मासूम का अपहरण करने को कहा. बच्ची अकसर जंगल में जाती थी. 10 जनवरी को जब वह अपने जानवरों को खोज रही थी, उसी समय संजीराम के

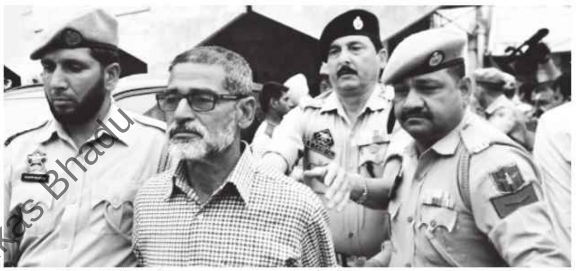

मुजरिम संजीराम, जिसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई

Vikas Bhadu

भतीजे ने जानवरों के जंगल में होने की बात कही और उसे अपने साथ थोड़ी दूर ले गया. फिर उस ने मासूम की गरदन पकड़ कर उसे जमीन पर गिरा दिया और उस की पिटाई की गई.

पिटाई से बच्ची बेहोश हो गई तो नाबालिग ने उस का बलात्कार किया. इस के बाद उस के साथी मन्नू ने भी बलात्कार किया. फिर ये दोनों मासूम को उस मंदिर में ले गए, जहां का संरक्षक संजीराम था. उन्होंने बच्ची को प्रार्थनाकक्ष में बंधक बना कर रखा.

चार्जशीट के मुताबिक, 11 जनवरी को नाबालिग बताए गए आरोपी ने एक अन्य आरोपी संजीराम के बेटे विशाल जंगोत्रा को लड़की के अपहरण की जानकारी दी. उस ने कहा कि अगर वह भी हवस बुझाना चाहता है, तो मेरठ से जल्दी आ जाए. 12 जनवरी को विशाल जंगोत्रा रसाना पहुंचा. सुबह करीब साढ़े 8 बजे आरोपी मंदिर गए और वहां भूखे पेट बंधक बनी लड़की को नशे की 3 गोलियां दीं.

चार्जशीट में आरोप था कि संजीराम ने कहा कि अब बच्ची की हत्या कर शव को ठिकाने लगाना होगा. 13 जनवरी, 2018 को विशाल, संजीराम और किशोर ने मंदिर में पूजाअर्चना की. इस के बाद लड़की के साथ रेप किया और उसे नशीली दवाएं दीं. फिर बच्ची को मारने के लिए एक पुलिया पर ले गए. बच्ची के बलात्कार और हत्या की जांच में शामिल विशेष पुलिस अधिकारी खजूरिया ने कहा कि थोड़ा इंतजार करो, मैं भी बलात्कार करूंगा.

फिर सभी ने 8 साल की मासूम से सामूहिक बलात्कार किया. इस के बाद उस का गला घोंट कर, सिर पर पत्थर मार कर उस की हत्या कर दी गई. शव को उन्होंने जंगल में फेंक दिया.

चार्जशीट के मुताबिक, पुलिस टीम ने केस से बचाने के लिए बलात्कार के नाबालिग बताए गए आरोपी की मां से डेढ़ लाख रुपए घूस भी ली. अन्य सबूत मिटाने के लिए संजीराम ने उसे 4 लाख रुपए दिए थे. बच्ची शरीर पर जो कपड़े पहने हुए थी, उन्हें धो दिया गया था, ताकि जांच में बलात्कार की बात सामने न आए.

चार्जशीट के मुताबिक, बलात्कार और हत्या की साजिश पूर्व राजस्व कर्मचारी संजीराम ने रची थी.

अपहरण के बाद लड़की को गांव के मंदिर परिसर में ले जाया गया, जहां उसे बंधक बना कर रखा गया. उसे हाई डोज की नशीली दवा दी गई ताकि वह चीख न सके. बच्ची के पिता मोहम्मद यूसुफ ने 12 जनवरी, 2018 को हीरानगर थाने में बच्ची की गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई. इस के बाद 14 जनवरी को संजीराम के निर्देश पर बच्ची को मंदिर से हटाया गया और उस की हत्या करने के इरादे से उसे पास के जंगल में ले जाया गया.

हत्या के लिए किशोर ने बच्ची के सिर पर एक पत्थर से 2 बार वार किया और उस के शव को जंगल में फेंक दिया. दरअसल, इन लोगों ने बच्ची का शव नहर में फेंकने की योजना बनाई थी, लेकिन गाड़ी का इंतजाम न हो पाने की वजह से यह योजना कामयाब नहीं हो सकी.

मुख्य साजिशकर्ता संजीराम के साथ एसपीओ दीपक खजूरिया, सुरेंद्र वर्मा, दोस्त प्रवेश कुमार उर्फ मन्नू, संजीराम का किशोर भतीजा और उस का बेटा विशाल जंगोत्रा उर्फ शम्मा कथित रूप से इस जघन्य अपराध में शामिल हुए. जांच अधिकारी हेड कांस्टेबल तिलक राज और एसआई आनंद दत्ता भी इस केस में नामजद थे.

इन लोगों ने संजीराम से कथित तौर पर 4 लाख रुपए लिए और अहम सबूत नष्ट कर दिए. जांच से इस बात का खुलासा हुआ कि संजीराम ने मामले की जांच कर रहे पुलिस अफसरों को 4 लाख रुपए 3 किस्तों में दिए गए थे.

आरोपी पुलिस वालों ने मृतका के कपड़े फोरैंसिक लैब में भेजने से पहले धो कर अहम सबूत नष्ट किए और मौके पर झूठे साक्ष्य बनाए. यह कठुआ की जिला अदालत में दर्ज चार्जशीट का हिस्सा है, मसलन कानूनी दस्तावेज.

## संवेदनाहीन लोगों का तमाशा

दूसरी तरफ कठुआ बार एसोसिएशन के अध्यक्ष कीर्ति भूषण महाजन ने कहा कि मामले में अपराध शाखा की तहकीकात को ले कर बार एसोसिएशन हड़ताल पर है और सीबीआई जांच के पक्ष में है.

जम्मू बार एसोसिएशन ने आरोप लगाया कि अपराध शाखा डोगरा समुदाय को जांच में निशाना बना रही है. उन्होंने 11 अप्रैल को जम्मू बंद बुलाया. 11 अप्रैल को वकीलों के बंद का मिलाजुला असर रहा.

दूसरी ओर वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के आदेश पर वकीलों के एक समूह के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई. क्राइम ब्रांच को रसाना मामले के आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दायर करने से रोकने का आरोप लगाते हुए कठुआ पुलिस ने 40 वकीलों के खिलाफ भादंवि की धारा 353, 341, 147 के अंतर्गत ओपन एफआईआर दर्ज की. ये वे लोग थे जिन्होंने प्रदर्शन किया और अपराध शाखा के अधिकारियों को ड्यूटी करने से रोकने का प्रयास किया.

वकीलों ने इस का पुरजोर विरोध करते हुए 11 और 12 अप्रैल को पूरे जम्मूकश्मीर का बंद बुलाया और कठुआ जिला जेल के बाहर लगातार प्रदर्शन करते रहे. पीड़ित परिवार

की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने यह मामला कठुआ से पठानकोट की सेशन कोर्ट में स्थानांतरित कर दिया.

जम्मूकश्मीर से केस स्थानांतरण का यह दूसरा मामला है. कठुआ मामले से पहले जम्मूकश्मीर सैक्स स्कैंडल की सुनवाई चंडीगढ़ स्थानांतरित की गई थी. इस सैक्स स्कैंडल में कई राजनेता और अफसर भी शामिल थे. जुलाई 2016 में सुप्रीम कोर्ट ने जम्मूकश्मीर से किसी भी मामले को स्थानांतरित करने की मंजूरी दी थी.

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर इस केस को पठानकोट जिला एवं सत्र न्यायालय में ट्रांसफर करने के बाद जम्मूकश्मीर से सारा रिकौर्ड उर्दू से अंगरेजी में अनुवाद कर सौंपने को कहा गया.

अनुवादित रिकौर्ड उपलब्ध होने पर 9 जुलाई, 2018 से मामले में सुनवाई शुरू की गई और प्रतिदिन सुनवाई कर 3 महीने में पूरा करने की समय सीमा निर्धारित की गई थी. तब तक सातों आरोपियों को कठुआ से गुरदासपुर की जेल में शिफ्ट कर दिया गया था.

बहरहाल, कोर्ट में 15 पन्नों की चार्जशीट दाखिल दी गई थी और 8 जून, 2018 को 7 आरोपियों के खिलाफ दुष्कर्म और हत्या के आरोप तय किए थे. केस में कुल 221 गवाह बनाए गए.

केस में पब्लिक प्रौसिक्यूटर्स की ओर से 114 और डिफैंस की ओर से 18 गवाह पेश किए गए. 55वें गवाह के रूप में पोस्टमार्टम करने वाले डाक्टर पेश हुए और 56वें गवाह के रूप में फौरैंसिक साइंस लैबोरेटरी के एक्सपर्ट को पेश किया गया.

ट्रायल 3 जून, 2019 को पूरा हुआ. 10 जून को आरोपी दोषी करार दे दिए गए. अभियोजन पक्ष की टीम, जिस में वकील जे.के. चोपड़ा, एस.एस. बसरा, हरमिंदर सिंह और भूपिंदर सिंह ने मुख्य अभियुक्त संजीराम के लिए मृत्युदंड की मांग की.

इस मामले की सुनवाई करने वाली विशेष अदालत ने इसे सब से शर्मनाक, अमानवीय और बर्बर तरीके से किया गया घृणित और भयानक अपराध बताया.

अदालत ने बकरवाल समुदाय और

न्यायाधीश तेजविंदर सिंह

स्थानीय निवासियों के बीच तनावपूर्ण संबंधों के बारे में पुलिस में दर्ज 11 मामले सूचीबद्ध किए. साथ ही अन्य बयानों को रिकौर्ड में लिया, जिन से इस तथ्य की पुष्टि हुई कि जहां 10 जनवरी, 2018 को इस अपराध को अंजाम दिया गया, वहां इलाके में सांप्रदायिक तनाव था.

न्यायाधीश ने कहा, ''बकरवाल समुदाय को इलाके के स्थानीय निवासी स्वीकार नहीं करते, जिस से दोनों समुदायों के बीच तनावपूर्ण संबंध बने और इस अपराध के पीछे यही ठोस कारण था.''

## मिल ही गई दुष्कर्मियों को सजा

आखिर 8 साल की उस मासूम को 17 महीने बाद इंसाफ मिला. पठानकोट के सेशन कोर्ट ने 7 में से 6 आरोपियों को दोषी करार देने के बाद सजा का ऐलान किया. इस मामले के मुख्य साजिशकर्ता संजीराम, प्रवेश कुमार और पुलिस अधिकारी दीपक खजूरिया को अदालत ने उम्रकैद की सजा सुनाई.

वहीं पुलिस औफिसर सुरेंद्र शर्मा, हैड कांस्टेबल तिलक राज और एसआई आनंद दत्ता को 5-5 साल की कैद की सजा दी गई. संजीराम को आईपीसी की धारा 302 (हत्या), 376 (रेप), 120बी (साजिश) के तहत दोषी करार देने के बाद कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई.

आनंद दत्ता को आईपीसी की धारा 201 (सबूतों को नष्ट करना) के तहत दोषी करार देने के बाद उसे 5 साल की कैद की सजा सुनाई गई. उस ने संजीराम से 4 लाख रुपए रिश्वत ले कर महत्त्वपूर्ण सबूत नष्ट किए थे.

प्रवेश कुमार को आईपीसी की धारा 120बी, 302 और 376 के तहत दोषी करार देने के बाद उम्रकैद की सजा दी गई. प्रवेश मामले की साजिश रचने में शामिल था. प्रवेश ने बच्ची के साथ रेप किया और गला दबा कर उस की हत्या की थी. वहीं पर्याप्त सबूतों के अभाव में संजीराम के बेटे विशाल को बरी कर दिया गया.

अदालत ने भारतीय दंड संहिता की धारा 120बी (आपराधिक साजिश), 302 (हत्या) और 376डी (सामूहिक दुष्कर्म) के तहत आरोप तय किए. किशोर आरोपी के खिलाफ मुकदमा शुरू होना अभी बाकी है, क्योंकि उस की उम्र का निर्धारत करने वाली याचिका जम्मूकश्मीर उच्च न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है.

अदालत ने संजीराम, प्रवेश कुमार और दीपक खजूरिया को आजीवन कारावास की सजा के साथ उन पर एकएक लाख रुपए का जुरमाना भी लगाया. 3 अन्य दोषियों को 5-5 साल की कैद की सजा के साथसाथ उन पर 50-50 हजार रुपए का जुरमाना भी ठोका गया.

विशाल जंगोत्रा को जज ने इस आधार पर रिहा किया कि वारदात के समय वह घटनास्थल पर मौजूद नहीं था.

अपना फैसला सुनाते समय जज ने साफ शब्दों में कहा, ''बचावपक्ष ने विशाल को बेगुनाह साबित करने के लिए कोर्ट में जो सबूत पेश किए थे, उस से साफ जाहिर है कि अपराध के समय वह कठुआ के रसना गांव में मौजूद नहीं था, इसलिए उसे सभी आरोपों से बरी किया जाता है.''

घटना से पहले विशाल मुजफ्फरनगर के मीरापुर में रह कर आकांक्षा कालेज से बीएससी (कृषि विज्ञान) फर्स्ट ईयर की पढ़ाई कर रहा था. 9 जनवरी से खतौली के के.के. जैन डिग्री कालेज में विशाल की परीक्षाएं चल रही थीं और वह वारदात के समय परीक्षा दे रहा था.●

—कथा में नसरीन परिवर्तित नाम है

Vikas Library

## बालाघाट, मध्य प्रदेश

खूबसूरत स्त्री अगर किसी आदमी को अपने मोहजाल में फंसाना चाहे तो उस के लिए यह बड़ा काम नहीं होता, क्योंकि स्त्री वह भी सुंदर, युगयुग से मानव मन की कमजोरी रही है. नर्स सुधा ने डा. संजय को इसी तरह फंसाया और...

Vikas Bhadu

मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले के वारासिवनी थाने के टीआई कमल निगवाल को रात करीब 9 बजे किसी अज्ञात व्यक्ति ने फोन कर के सूचना दी कि क्षेत्र के गांव कायदी के बनियाटोला, वैष्णो देवी मंदिर के पास एक युवक ट्रेन से कट गया है. खबर मिलते ही टीआई थाने में मौजूद एएसआई विजय पाटिल व महिला आरक्षक लक्ष्मी के साथ घटनास्थल की तरफ रवाना हो गए.

टीआई निगवाल ने घटनास्थल पर देखा कि एक युवक का शव रेल लाइनों पर बुरी तरह क्षतविक्षत हालत में पड़ा था. वहीं लाइनों के पास सड़क किनारे एक मोटरसाइकिल भी खड़ी थी. इस से टीआई ने अंदाजा लगाया कि युवक आत्महत्या करने के लिए ही अपनी मोटरसाइकिल से यहां आया होगा.

लाइनों पर टूटा हुआ मोबाइल भी पड़ा था. जिसे पुलिस ने कब्जे में ले लिया. शव को देख कर उस की पहचान संभव नहीं थी, इसलिए पुलिस ने कपड़ों की तलाशी ली. तलाशी में मृतक की जेब में एक सुसाइड नोट मिला. पुलिस ने उस टूटे हुए मोबाइल फोन से मिले सिम कार्ड को दूसरे फोन में

# जीजा साली के खेल में

❑ विजय सोनी

छायांकन: मॉडलिंग

डाल कर जांच की. फलस्वरूप जल्द ही मृतक की पहचान हो गई, वह वारासिवनी के निकटवर्ती गांव सोनझरा का रहने वाला डा. संजय डहाके था.

पुलिस ने फोन कर के डा. संजय डहाके के सुसाइड करनेकी खबर उस के घर वालों को दे दी. खबर सुनते ही डा. संजय के घर में मातम छा गया. डा. संजय की पत्नी और भाई रोतेबिलखते वारासिवनी पहुंच गए. उन्होंने कपड़ों के आधार पर उस की शिनाख्त संजय डहाके के रूप में कर दी.

लाश की शिनाख्त हो जाने के बाद टीआई कमल निगवाल ने केस की जांच एएसआई विजय पाटिल को सौंप दी. दूसरे दिन मृतक का पोस्टमार्टम हो जाने के बाद पुलिस ने डा. संजय का शव उन के परिवार वालों को सौंप दिया. डा. संजय के अंतिम संस्कार के बाद एएसआई विजय पाटिल ने डा. संजय के परिवार वालों से पूछताछ की.

पता चला कि एमबीबीएस करने के बाद डा. संजय काफी लंबे समय से बालाघाट के अंकुर नर्सिंग होम में काम कर रहे थे. वह रोजाना अपनी बाइक से बालाघाट जाते और रात 8 बजे ड्यूटी पूरी कर बाइक से ही घर आते थे. घटना वाले दिन भी वह अपनी ड्यूटी पूरी कर बाइक से घर लौट रहे थे, लेकिन उस रोज उन के दिमाग में कुछ और ही चल रहा था. इसलिए रास्ते में बाइक खड़ी कर के ट्रेन के आगे कूद गए.

डा. संजय उच्चशिक्षित थे, इस के बावजूद ऐसी क्या वजह रही जो उन्होंने अपनी जीवन लीला खुद ही समाप्त कर ली. जेब में मिले सुसाइड नोट की जांच की गई तो आत्महत्या करने के पीछे की कहानी पता चल गई.

डा. संजय ने अपने सुसाइड नोट में अपने साथ काम करने वाली 22 वर्षीय खूबसूरत नर्स सुधा पर ब्लैकमेल करने का आरोप लगाया था. उन्होंने नोट में लिखा था कि सुधा ने उन्हें अपने रूपजाल में फंसा कर संबंध बना लिए थे. इस के बाद अस्पताल के सामने स्थित एक मैडिकल स्टोर पर नौकरी करने वाले अपने 25 वर्षीय जीजा मनोज दांदरे के साथ मिल कर उन पर शादी करने का दबाव बना रही थी.

पुलिस हिरासत में आरोपी नर्स सुधा ठाकरे और उस का जीजा मनोज दांदरे

चूंकि डा. संजय पहले से ही शादीशुदा थे, इसलिए उन्होंने सुधा के साथ शादी करने से मना कर दिया तो वह अपने जीजा के साथ मिल कर उन्हें ब्लैकमेल करने लगी.

इस पत्र के आधार पर जांच अधिकारी एएसआई विजय पाटिल ने बालाघाट जा कर अंकुर नर्सिंग होम के दूसरे कर्मचारियों से पूछताछ की. पूछताछ में यह बात साफ हो गई कि डा. संजय और वहां काम करने वाली नर्स सुधा ठाकरे में काफी नजदीकियां थीं.

सुधा नौकरी के साथसाथ बीएससी की परीक्षा भी दे रही थी. इसलिए पढ़ाई के चलते कुछ समय पहले वह अस्पताल आती रहती थी. इस दौरान दोनों में कुछ विवाद होने की बात भी कर्मचारियों ने बताई. यह भी पता चला कि इस विवाद के बाद डा. संजय पिछले कुछ दिनों से काफी परेशान रहने लगे थे.

घटना वाले दिन वह कुछ ज्यादा ही परेशान थे. उस दिन उन्होंने अस्पताल में किसी से भी ज्यादा बात नहीं की थी और शाम को अपनी ड्यूटी पूरी कर अस्पताल से चुपचाप चले गए थे. इस के बाद अस्पताल वालों को दूसरे दिन सुबह उन के द्वारा अत्महत्या करने की खबर मिली.

एएसआई विजय पाटिल और उन की टीम ने वारासिवनी सिकंदरा निवासी सुधा ठाकरे और मरारी मोहल्ला, बालाघाट निवासी उस के जीजा मनोज से गहराई से पूछताछ की, जिस में उन दोनों के द्वारा डा. संजय को प्रताड़ित करने की बात समाने आई. सुधा ठाकरे और उस के जीजा मनोज दांदरे से की गई पूछताछ और अन्य सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कहानी कुछ इस तरह सामने आई—

एमबीबीएस करने के बाद डा. संजय बालाघाट स्थित एक प्रसिद्ध निजी नर्सिंग होम में नौकरी करने लगे थे. गांव सोनझरा से बालाघाट ज्यादा दूर नहीं था, इसलिए वे अपनी ड्यूटी पर रोजाना मोटरसाइकिल पर आतेजाते थे. अपनी योग्यता के चलते डा. संजय ने जल्द ही अच्छा नाम कमा लिया था.

इसी बीच करीब 2 साल पहले वारासिवनी के सिकंदरा इलाके की रहने वाली सुधा ठाकरे ने उसी अस्पताल में नर्स के रूप में काम शुरू किया, जिस में डा. संजय काम करते थे.

सुधा बेहद खूबसूरत थी. वह अपनी खूबसूरती का फायदा उठा कर नर्सिंग होम में सब से चर्चित डा. संजय के नजदीक आने की कोशिश करने लगी. बालाघाट में ही सुधा की बड़ी बहन की शादी हुई थी. उस का पति मनोज दांदरे इसी नर्सिंग होम के सामने स्थित एक मैडिकल स्टोर पर काम करता था. सुधा बालाघाट में अपनी बहन के साथ ही रहती

ठंड लगने के बहाने सुधा उन के पास आ कर खड़ी हुई तो डा. संजय ने उस की कमर में हाथ डाल दिया. सुधा को तो मानो इस पल का इंतजार था. वह एकदम से उन के सीने से लग कर गहरीगहरी सांसें लेने लगी.

Vikas Bhadu

थी. लेकिन साप्ताहिक छुट्टी पर वह अपने घर वारासिवनी चली जाती थी.

सुधा डा. संजय के नजदीक आने की पूरी कोशिश कर रही थी. लेकिन डा. संजय उस की तरफ ध्यान नहीं दे रहे थे. इसलिए सुधा ने एक चाल चली. करीब डेढ़ साल पहले एक रोज बारिश का मौसम था. उस ने डा. संजय से कहा कि वह घर जाते समय अपनी मोटरसाइकिल पर उसे भी वारासिवनी तक ले चलें. डा. संजय को भला इस पर क्या



सीआई कमल निगवाल

ऐतराज हो सकता था सो उन्होंने उसे अपनी मोटरसाइकिल पर लिफ्ट दे दी.

सुधा की योजना बहुत दूर तक की थी, इसलिए मोटरसाइकिल जैसे ही शहर से बाहर निकली वह डा. संजय से सट कर बैठ गई. डा. संजय को अजीब तो लगा लेकिन वे भी आखिर इंसान थे, खूबसूरत जवान लड़की का सट कर बैठना उन के दिल की धड़कन बढ़ाने लगा.

संयोग से उस रोज मौसम ने सुधा का साथ दिया और कुछ ही दूर जाने के बाद अचानक तेज बारिश होने के कारण दोनों को मोटरसाइकिल खड़ी कर एक पेड़ के नीचे आश्रय लेना पड़ा. तब तक रात का अंधेरा भी फैल चुका था. अंधेरे में अपने साथ जवान लड़की को भीगे कपड़ों में खड़ा देख डा. संजय का दिल भी मचलने लगा था.

कुछ देर बाद ठंड लगने के बहाने सुधा उन के पास आ कर खड़ी हुई तो डा. संजय ने उस की कमर में हाथ डाल दिया. सुधा को तो मानो इस पल का इंतजार था. वह एकदम से उन के सीने से लग कर गहरी सांसें लेने लगी.

बारिश काफी देर तक होती रही और उतनी ही देर तक दोनों एकदूसरे के दिल की धड़कनें सुनते हुए पेड़ के नीचे खड़े रहे. इस के बाद सुधा और डा. संजय एकदूसरे से नजदीक आ



जांच अधिकारी विजय पाटिल

गए, नतीजतन कुछ ही समय बाद उन के बीच शारीरिक संबंध बन गए. फिर ऐसा अकसर होने लगा.

## सुधा ने अपने जीजा के कहने पर बिछाया जाल

डा. संजय शादीशुदा थे, यह बात सुधा पहले से ही जानती थी. लेकिन उसे इस से कोई फर्क नहीं पड़ता था. क्योंकि उस की योजना कुछ और ही थी. वैसे सुधा के अवैध संबंध अपने जीजा मनोज से भी थे. मनोज काफी चालाक किस्म का इंसान था.

मैडिकल पर काम करते हुए उसे इस बात की जानकारी थी कि डा. संजय को नर्सिंग होम से तो बड़ा वेतन मिलता ही है, इस के अलावा भी उन्हें कई दवा कंपनियों से कमीशन मिलता है. इसलिए उस के कहने पर ही सुधा ने साजिश रच कर संजय को अपने जाल में फंसा लिया था.

कुछ समय बाद जब सुधा को लगने लगा कि डा. संजय अब पूरी तरह से उस के कब्जे में आ चुके हैं तो उस ने उन पर शादी करने का दबाव बनाना शुरू कर दिया. डा. संजय ने शादी करने से मना किया तो सुधा का जीजा मनोज सामने आया और डा. संजय को बदनाम करने की धमकी देने लगा.

इस से डा. संजय परेशान हो गए. वे जानते थे कि यदि ऐसा हुआ तो उन की नौकरी जाने में एक पल भी नहीं लगेगा और पूरे इलाके में बदनामी होगी सो अलग.

इसलिए उन्होंने सुधा और मनोज को समझाने की कोशिश की तो दोनों उन से चुप रहने के बदले पैसों की मांग करने लगे. जिस से डर कर डा. संजय ने अलगअलग किस्तों में सुधा और मनोज को 8 लाख रुपए दे भी दिए. लेकिन सुधा जहां उन पर लगातार शादी के लिए दबाव बना रही थी, वहीं मनोज चुप रहने के बदले कम से कम 5 लाख रुपयों की और मांग कर रहा था.

इसी बीच सुधा ने नौकरी छोड़ दी और डा. संजय को धमकी दी कि एक महीने के अंदर अगर उन्होंने उस के संग शादी नहीं की तो वह अपने संबंधों का ढिंढोरा पूरे बालाघाट में पीट देगी.

इस बात से डा. संजय काफी परेशान रहने लगे थे. जब उन्हें इस परेशानी से बचने का कोई रास्ता नहीं सूझा तो उन्होंने नर्सिंग होम में ही सुसाइड नोट लिख कर अपनी जेब में रख लिया.

वह सुसाइड करने का फैसला ले चुके थे. अपने गांव सोनझरा लौटते समय रात लगभग 8 बजे वह बनियाटोला स्थित वैष्णो देवी मंदिर के पास पहुंचे. उन्होंने अपनी मोटरसाइकिल वहीं खड़ी कर दी और बालाघाट की ओर से कटंगी जाने वाली ट्रेन के सामने कूद कर आत्महत्या कर ली.

पुलिस ने सुधा और उस के जीजा मनोज को भादंवि की धारा 306/34 के तहत गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से दोनों को जेल भेज दिया गया. ●

आमिर खान की सुपरहिट फिल्म 'दंगल' से शोहरत पाने वाली जायरा वसीम द्वारा अचानक बौलीवुड से संन्यास लेने वाली बात लोगों के गले नहीं उतर रही

# जायरा की बेजा जियारत

❑ भारत भूषण श्रीवास्तव

इसी 23 अक्टूबर को वह 19 साल की हो जाएगी. जन्नत कहे जाने वाले कश्मीर की इस कली का नाम है जायरा वसीम. वाकई किसी हूर से कम नहीं लगती. वह एक ऐसे सौंदर्य की स्वामिनी है जिस की तुलना आप चाह कर भी किसी और से नहीं कर सकते. सांचे में ढला हलका गुलाबी संगमरमर सा बदन, बड़ीबड़ी आंखें, कमर तक झूलते बाल, गुलाब की कली से होंठ और सिंदूरी गुलाब सा खिला गोल चेहरा, कुछ ऐसी सादगी और मासूमियत कि उस पर से नजरें हटाने को मन न करे.

जायरा सिर्फ बेइंतहा खूबसूरत होती तो शायद उस का जिक्र नहीं होता, लेकिन उस में एक्टिंग का कुदरती हुनर है जो उसे और खास बनाता है. बिलाशक इस उम्र की लड़कियों में एक खास किस्म का खिंचाव होता है, क्योंकि वे किशोरावस्था लांघ कर जवानी की दहलीज पर पहला कदम रख रही होती हैं. लेकिन जायरा की बात जुदा है.

कुदरत ने उसे मांसलता कुछ इस तरह बख्शी है कि कोई छू भी ले तो निशान पड़

जाए. इस खूबसूरती को शब्दों में बांधने के बजाए यही कहना काफी होगा कि 23 अक्तूबर, 2000 को ऊपर वाला जब बेहद फुरसत में रहा होगा, तभी उस ने जायरा को गढ़ कर नीचे भेजा होगा.

इसी ऊपर वाले पर जताए गए यकीन को ले कर वह सुर्खियों में है. लोग तय नहीं कर पा रहे हैं कि जायरा वसीम सही कर रही है या गलत. या फिर कोई उसे उकसा रहा है.

19 साल की एक लड़की क्या इतनी परिपक्व हो सकती है कि वह भारीभरकम शब्दों का इस्तेमाल कर के यह समझाने की कोशिश करे कि कामयाबी की राह पर 5 कदम चल कर वह क्यों वापस लौटने की बात सोचने लगी.

क्या वह दीन, ईमान, मजहब और कुरान के मायने समझती होगी और समझती भी होगी तो किस हद तक. इस सब से भी ज्यादा अहम बात ये कि क्या इन चीजों के वाकई कोई मायने होते हैं ?

इन और ऐसे कई सवालों का जवाब ढूंढ पाना अब आसान काम नहीं रह गया है, फिर भी एक कोशिश की जानी बेहद जरूरी है, जिस से यह तो पता चले कि युवा पीढ़ी क्या सोच रही है और क्या वाकई देश का माहौल इतना कट्टर हो गया है कि धर्म की आड़ ले कर युवा पलायन करने पर मजबूर हो रहे हैं. अगर यह बात सच है तो उस खौफ को ढूंढ कर उसे खत्म करना बेहद जरूरी है, जिस से जायरा वसीम जैसी युवतियां डरने और घबराने लगी हैं.

जायरा की परेशानी और कशमकश समझने से जरूरी है कि पहले उस के बारे में और उस से जुड़ी हर छोटीबड़ी बात को समझा जाए, क्योंकि यह कशमकश या परेशानी एक मुसलिम एक्ट्रेस की नहीं, बल्कि एक पूरी पीढ़ी की है जो अवसाद, हताशा और डर की शिकार है.

जायरा वसीम कश्मीर के हवल इलाके के एक मध्यमवर्गीय मुसलिम परिवार में पैदा हुई. उस के पिता जाहिद वसीम एक बैंक में मैनेजर हैं और मां जर्का वसीम पेशे से शिक्षिका हैं. उस का एक भाई जोराज वसीम है जो अभी पढ़ाई कर रहा है. जायरा शुरू से ही पढ़ाई में अव्वल रही. उस ने 10वीं तक की पढ़ाई सोनार बाग स्थित सेंट पौल इंटरनैशनल अकादमी से की. 10वीं में उस ने 92 फीसदी नंबर हासिल किए थे. आगे की पढ़ाई के लिए उस ने जम्मू के नामी जम्मू हेरीटेज स्कूल में दाखिला लिया था.

## जानें जायरा के बारे में

स्वभाव से अंतर्मुखी जायरा के फ्रैंड्स का दायरा शुरू से ही सीमित रहा. अलबत्ता एक्टिंग का शौक उसे बचपन से था, लेकिन

आमिर खान की सुपरहिट फिल्म 'दंगल' में जिस लड़की ने गीता फोगाट का रोल किया था, वह कश्मीरी मुसलिम परिवार से थी. 'दंगल' और 'सीक्रेट सुपर स्टार' फिल्मों में काम कर चुकी जायरा वसीम ने धर्म ईमान के नाम पर अचानक बौलीवुड...

जाहिद और जर्का दोनों बहुत संकुचित विचारों वाले नहीं कहे जा सकते, लेकिन उन्हें बहुत ज्यादा उदार भी नहीं कहा जा सकता. साल 2015 में जायरा ने 2 विज्ञापनों में काम किया था. ये विज्ञापन टाटा स्काई और माइक्रोसाफ्ट मोबाइल के थे.

साल 2016 में उसे आमिर खान की चर्चित फिल्म 'दंगल' के लिए चुना गया था, जिस में उस की भूमिका पहलवान गीता फोगट के बचपन की थी, पर यह आसान काम नहीं था. जायरा चुन तो ली गई थी पर जाहिद और जर्का इस के लिए तैयार नहीं थे कि जायरा फिल्मों में काम करे. उन्होंने साफ इनकार कर दिया तो स्कूल वालों ने तो उन्हें समझाया ही, खुद आमिर खान अपनी पत्नी किरण राव के साथ उस के घर पहुंचे थे.

आमिर और किरण ने उन्हें समझाया कि जायरा में एक्टिंग का जबरदस्त हुनर है और एक दिन वह खूब नाम कमाएगी. खुद आमिर खान जैसे दिग्गज अभिनेता को घर आया देख वसीम दंपति इनकार नहीं कर सके और आधेअधूरे मन से ही सही, उन्होंने जायरा को 'दंगल' में काम करने की इजाजत दे दी.

इस तरह जायरा कश्मीर की हर्षल वादियों से निकल कर मायानगरी मुंबई आ गई. आमिर खान और किरण ने उस का पूरा खयाल रखा और उसे गीता के किरदार के बारे में बारीकी से समझाया. मुंबई में जायरा आमिर खान के घर पर ही रुकी, जहां रोल के मुताबिक उसे एक्टिंग के साथसाथ कुश्ती के दांवपेंच भी सिखाए गए.

तब पहली दफा जायरा ने जाना कि महावीर सिंह फोगट एक जानेमाने पहलवान थे, जो लड़केलड़की में भेद न कर के अपनी बेटियों गीता और बबीता को एक ऐसे मुकाम तक पहुंचा पाने में कामयाब हुए थे, जो हरियाणा तो क्या देश की किसी भी लड़की के लिए सपना भर हो सकता है.

एक्टिंग करतेकरते शायद जायरा को थोड़ाबहुत समझ आया होगा कि मुंबई में कश्मीर की तरह लड़कियों पर बंदिशें नहीं हैं और लड़कियां ठान लें तो कुछ भी कर सकती हैं. लेकिन इस के लिए मांबाप का साथ और प्रोत्साहन जरूरी है जो कम से कम उस के साथ तो नहीं था. दंगल रिलीज हुई तो फिल्म इंडस्ट्री में हाहाकार मच गया. फिल्म सुपरडुपर साबित हुई और दर्शक सिनेमाघरों में टूट पड़े. इस फिल्म ने शोहरत और कमाई के सारे रिकौर्ड ध्वस्त कर डाले. फिल्म साफसुथरी और संदेशात्मक थी, जिस का आमिर खान द्वारा बोला यह डायलौग आज भी बड़े फख्र से बोला जाता है, 'म्हारी छोरियां छोरों से कम हैं के.'

परिवार वालों के साथ जायरा

गीता फोगट के बचपन का रोल जायरा ने वाकई डूब कर निभाया था, इसलिए उस में लोगों की जिज्ञासा बढ़ती गई. लेकिन तब उस के बारे में लोगों को कम ही जानकारियां मिल पाई थीं. जिन लोगों ने सोशल मीडिया पर उस के फोटो देखे, वे यह जान कर हैरान रह गए कि रियल लाइफ में जायरा रील लाइफ से कहीं ज्यादा सुंदर और आकर्षक है. उस के बाल बौबकट नहीं हैं, जैसा कि फिल्म से मांग के मुताबिक दिखाया गया है.

जायरा को अपने काले लंबे बाल उतने ही प्रिय थे जितने कि इस उम्र की किसी भी लड़की को होने चाहिए. जब शूटिंग के पहले उस के बाल कटे तो आईने में अपना अक्स देख कर वह फफक कर रोई थी. जिस तरह के कपड़े और ड्रैस उसे पहनने पड़े थे, वे या वैसे उस ने कभी नहीं पहने थे. इस के बाद भी उस के अभिनय में अस्वाभाविकता नहीं आई थी तो इस की वजह उस में एक्टिंग का जज्बा था.

रातोंरात जायरा स्टार बन गई और दर्शकों के दिलोदिमाग पर छा गई. इस की उम्मीद तो शायद उसे और जाहिद व जर्का को भी नहीं थी. वे खुश थे लेकिन धार्मिक पूर्वाग्रह और दूसरी कई वजहें उन्हें आशंकित भी किए हुए थीं.

## ऐतराज कट्टरपंथियों का

अब चलें कश्मीर की वादियों की तरफ जहां जायरा का विरोध भी हुआ. कई कट्टरवादियों ने उस का विरोध किया, दंगल के लिए बाल कटाने को भी इसलाम के खिलाफ बताया गया. कामयाबी के जश्न पर मजहब का ऐतराज वसीम परिवार आसानी से नहीं झेल पाया. ये लोग घाटी के कट्टरपंथियों को भी नाराज नहीं करना चाहते थे और यह भी चाहते थे कि जायरा की कामयाबी का सफर यूं ही जारी रहे.

दौलत और शोहरत की बरसात के बीच विरोध की तीखी धूप से बचने के लिए यह परिवार कुछ दिनों बाद ही जम्मूकश्मीर की तत्कालीन मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती से मिला.

कहने को तो यह एक औपचारिक और शिष्टाचार वाली मुलाकात थी, लेकिन लगता ऐसा है कि वसीम परिवार ने महबूबा के सामने कट्टरवादियों के विरोध का जिक्र किया होगा तभी कट्टरवादी और भड़के. महबूबा मुफ्ती ने जायरा की जम कर तारीफ की और उसे कश्मीर का रोल मौडल वगैरह बताया.

कुछ दिनों बाद ही कट्टरवादियों की तरफ से जायरा को जान से मार देने की धमकियां मिलने लगीं, तो न केवल जायरा बल्कि उस

Vikas Bhadu

तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौर द्वारा 'दंगल' फिल्म के लिए 64वें नैशनल फिल्म अवार्ड्स का बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रैस का पुरस्कार लेती जायरा

का पूरा परिवार घबरा उठा. किसी भी अनहोनी से बचने के लिए जायरा ने सोशल मीडिया पर माफीनामा पोस्ट किया. तब कहीं जा कर बवाल शांत हुआ जो अंदरूनी तौर पर ज्यादा मचा हुआ था.

इसलाम के उसूलों का बचपन से पालन करती रही जायरा के मन में डर के साथसाथ ग्लानि भी पैदा हो रही थी कि 'दंगल' में काम कर के उस ने मजहबी उसूलों को तोड़ा है, क्योंकि इसलाम में लड़कियों के बाल कटाने के अलावा नाचगा कर पैसे कमाना भी हराम बताया गया है. इस विरोध का जायरा के किशोर मन पर वैसा ही प्रभाव पड़ा जैसा कि कट्टरवादी चाहते थे. उन की मंशा पूरी हो गई थी.

एक तरफ मजहबी दबाव और घुटन थी तो दूसरी तरफ मुंबई की चमकतीदमकती दुनिया थी, जिस में उस का नाम होनहार कलाकारों में शुमार होने लगा था. बता दें कि 'दंगल' में बेहतर अभिनय के लिए जायरा को कई पुरस्कार भी मिले थे. एक सुनहरा भविष्य और दौलत व शोहरत उस के इंतजार में पलकपांवड़े बिछाए बैठे थे. जायरा तब भी कशमकश में थी कि इस दोराहे से किस रास्ते का रुख करे.

उम्मीद के मुताबिक हिम्मत दिखाते हुए जायरा ने ग्लैमर वाला रास्ता चुना और आमिर खान की दूसरी फिल्म 'द सीक्रेट सुपर स्टार' में काम करने को राजी हो गई. यह फिल्म पूरी तरह मुसलिम पृष्ठभूमि वाले एक परिवार पर आधारित थी, जिस में गाने की शौकीन एक लड़की चोरीछिपे गाती है खासतौर से पिता से छिप कर.

'द सीक्रेट सुपर स्टार' हालांकि दंगल के सौवें हिस्से जितनी भी हिट नहीं हुई, लेकिन पसंद की गई और जायरा के अभिनय को दर्शकों ने फिर से सराहा. इस फिल्म में जायरा स्वाभाविक अभिनय कर पाई तो इस की बड़ी वजह उस वक्त उस का उसी दौर से गुजरना था, जिसे वह भुगत रही थी.

इसी दौरान कई साक्षात्कारों में जायरा ने नारी शक्ति के हक में खुल कर बोला और दूसरे कई सामाजिक मुद्दों पर भी मीडिया से चर्चा की, जिन में कश्मीर की मुसलिम लड़कियों की पारिवारिक और सामाजिक स्थिति उल्लेखनीय है कि वे दबाव में बुरका पहनती हैं. बकौल जायरा यह दबाव मांबाप का नहीं, बल्कि माहौल बनाता है.

साफ दिख रहा था कि जायरा में हिम्मत आ रही थी. इस का एक सबूत भी देखने में आया, जब उस ने दिसंबर 2017 में इंस्टाग्राम पर एक और पोस्ट डाली. इस पोस्ट में वह फ्लाइट में अपने साथ हुई छेड़छाड़ का खुलासा करते नजर आई थी. बकौल जायरा फ्लाइट में एक शख्स ने उस के साथ बदतमीजी की, बैड टच किया, लेकिन शिकायत करने के बाद भी एयरलाइंस ने कोई कारवाई नहीं की.

जायरा ने छेड़छाड़ करने वाले शख्स के फोटो और वीडियो भी पोस्ट किए थे. मामला मीडिया में उछला तो एयरलाइंस ने जायरा से माफी मांगी और इस घटना की रिपोर्ट भी पुलिस में दर्ज हुई. छेड़छाड़ करने वाले शख्स को गिरफ्तार कर लिया गया. तब जायरा चूंकि 17 साल की थी, इसलिए आरोपी पर धारा 354 के अलावा पोक्सो एक्ट भी लगाया गया. नामालूम वजहों से जायरा मुंबई के विंडोशी सेशन कोर्ट में हाजिर नहीं हुईं तो अदालत को उस के खिलाफ सम्मन जारी करना पड़ा.

इस हादसे पर फिल्म इंडस्ट्री और दूसरे सेलिब्रिटीज भी जायरा के समर्थन में दिखे. हालांकि इस हादसे के बाद भी उसे जम कर ट्रोल किया गया था, जिस का विरोध क्रिकेटर इरफान पठान ने यह कहते किया था कि एक लड़की को हवाई जहाज में छेड़ा गया और लोग उस का देश और धर्म देख रहे हैं, हमारी सोच कैसी बन रही है.

## फिर एकाएक टूटी हिम्मत

3 साल चर्चाओं और विवादों में रही जायरा की हिम्मत टूटी बीती 29 जून को जब उस ने सोशल मीडिया पर एक चौंकाती हुई 6 पेज की पोस्ट शेयर की. इस लंबीचौड़ी पोस्ट की एकलौती खास बात इस में अल्लाह, दीन, ईमान और कुरान का हवाला दे कर बौलीवुड से संन्यास लेने की घोषणा थी, जिस ने देश भर में हड़कंप मचा दिया. उस की पोस्ट के उल्लेखनीय अंश इस तरह हैं—

'5 साल पहले मैं ने एक फैसला किया था, जिस ने हमेशा के लिए मेरा जीवन बदल दिया था. मैंने बौलीवुड में कदम रखा और इस से मेरे लिए अपार लोकप्रियता के दरवाजे खुले. मैं लोगों के ध्यान का केंद्र बनने लगी. मुझे कामयाबी की मिसाल की तरह पेश किया जाने लगा और युवाओं के लिए रोल मौडल बताया गया.

– इस क्षेत्र ने मुझे बहुत प्यार, सहयोग और तारीफें दी हैं, लेकिन ये मुझे गुमराही के रास्ते पर भी ले आया है. मैं खामोशी से और अनजाने में अपने ईमान से बाहर निकल आई. मैं ने ऐसे माहौल में काम करना जारी रखा

जिस ने लगातार मेरे ईमान में दखलंदाजी की. मेरे धर्म के साथ मेरा रिश्ता खतरे में आ गया. मैं ने अपने जीवन से सारी बरकत खो दी.

– कुरान के महान और अलौकिक ज्ञान में मुझे शांति और संतोष मिला. वास्तव में दिल को सकून तभी मिलता है जब इंसान अपने खालिक के बारे में, उस के गुणों उस की दया और उस के आदेशों के बारे में जानता है.

– मेरा दिल शक और गलती करने की जिस बीमारी से पीड़ित था, उसे मैं ने पहचान लिया. हमारे दिल पर 2 बीमारियां हमला करती हैं संदेह और गलतियां, और दूसरी हवस और कामनाएं इन दोनों का ही जिक्र कुरान में है.

– अल्लाह कहता है, उन के दिलों में एक बीमारी है ( संदेह और पाखंड की ) जिसे मैं ने और बढ़ा दिया है. मुझे अहसास हुआ कि इस का इलाज सिर्फ अल्लाह की पनाह में जाने से ही होगा और वास्तव में जब मैं रास्ता भटक गई थी तब अल्लाह ने ही मुझे राह दिखाई.'

## जीत कठमुल्लाओं की

ऐसी कई धार्मिक बातों के साथ जायरा ने फिल्मों से संन्यास लेने की घोषणा की तो तरहतरह की प्रतिक्रियाएं सामने आईं. उस की बातों और दलीलों के बाबत हर किसी की अपनी एक अलग राय थी लेकिन यह नपातुला सच है कि जायरा की यह पोस्ट एक कम उम्र अपरिपक्व लड़की की धार्मिक ग्लानि थी. उसे लग रहा था और अभी भी लग रहा है कि तथाकथित धार्मिक सिद्धांतों का उल्लंघन कर उस ने एक ऐसा गुनाह कर दिया है, जिस का हिसाब वह कयामत के दिन नहीं दे पाएगी.

जायरा ने वाकई कोई गलती, अपराध या धर्म के लिहाज से कोई पाप किया होता तो बात एक दफा समझ आती, लेकिन यह सब उस के दिलोदिमाग से बचपन से बैठा दिया गया धर्म का हौवा है, डर है. बता दें, घाटी के आतंक से ज्यादा खतरनाक आतंक वह है जो किशोर बच्चों के दिलोदिमाग का सकून छीन लेता है.

जायरा का पलायन उन कठमुल्लाओं की जीत है, जो शुरू से उसे डराते रहे. इन का मकसद शुद्ध धर्म प्रचार था जो जायरा वसीम

आमिर खान और जायरा वसीम

जैसी सेलिब्रिटी के जरिए हुआ तो इन की बांछें खिली हुई हैं.

हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं, जिस में हिंदू और मुसलिम दोनों कट्टरवाद देश और समाज पर हावी हैं. इस के जिम्मेदार महबूबा मुफ्ती, फारूख अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला जैसे नेता भी कम नहीं है, जो जायरा के फैसले की तरफदारी कर रहे हैं. जो लोग इसे व्यक्तिगत आस्था और भावना की बात बता कर पल्ला झाड़ रहे हैं, वे भी मुल्लाओं से कमतर दोषी नहीं.

## डिप्रेशन की मरीज

कम ही लोग जानते होंगे कि जायरा वसीम बचपन से ही डिप्रेशन की मरीज है, और एंटी डिप्रेशन ड्रग्स का सेवन करती रही है. यानी वह एक असामान्य किशोरी है जो धर्म के उन सिद्धांतों से डरती है जो दुकानदारी के लिए बनाए और तोड़े जाते हैं. डिप्रेशन की बात वह खुद कुबूल कर चुकी है.

दरअसल जायरा चालाकी और दोहरापन दिखाती रही है. एक पोस्ट में उस ने लिखा था कि मुझे इस बात पर यकीन नहीं होता कि दुनिया में करीब साढ़े 3 करोड़ लोगों की उम्र और मरजी के बिना डिप्रेशन उन्हें चपेट में ले लेता है और खुद मैं भी इस बीमारी से जूझ रही हूं.

जायरा की कामयाबी और पलायन के मद्देनजर उस के ये शब्द भी अहम हैं कि डिप्रेशन का दौर बेहद तकलीफ भरा रहा. इस दौरान मैं ने काफी दवाइयां खाईं और कई बार अस्पताल के चक्कर काटने पड़े. हर रोज करीब 5 बार एंटी डिप्रेशन गोलियां खाना, आधी रात को अटैक आने पर अस्पताल भागना, हर समय खालीपन महसूस करना, कभी जरूरत से ज्यादा खाना, शरीर में दर्द महसूस होना और आत्महत्या का खयाल अहम बातें थीं. मेरा अपने दिमाग पर कोई नियंत्रण नहीं रह गया था.

तो क्या जायरा आंशिक मानसिक रोगी है? इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता. यह अच्छी बात थी कि उस ने इलाज कराया और 'दंगल' और 'सीक्रेट सुपर स्टार' की शूटिंग सामान्य तरीके से की. उस की तीसरी फिल्म जल्द प्रदर्शित होने वाली है, जो बिलाशक हिट साबित होगी.

जब तक वह मुंबई में रही, तब तक वह इस डिप्रेशन से बची रही लेकिन जैसे ही धर्म का खयाल और दीनईमान और कुरान की बातें उस के दिमाग में आईं तो उस ने फिल्मों से संन्यास लेने की घोषणा कर दी.

सीधेसीधे देखा और कहा जाए तो जायरा को ले कर उठे बवंडरों के कोई खास मायने नहीं हैं सिवाय इस के कि वह धार्मिक पाखंडों और कथित सिद्धांतों में उलझी एक ऐसी टीनएजर है, जो हर वक्त ग्लानि से भरी रहती है कि ऐसा या वैसा कर के उस ने धार्मिक मान्यताओं को तोड़ा है.

यह गिल्ट हर चौथे युवा में पाया जाता है जिस से अधिकतर वक्त रहते खुद को बचा लेते हैं. लेकिन कई लोग हमेशा इस अपराधबोध का शिकार हो कर आत्मघाती और बेवकूफी भरा कदम उठाते हैं. जायरा वसीम इस का अपवाद नहीं है. उसे खुद नहीं मालूम कि आखिरकार वह चाहती क्या है.

अकेले 'दंगल' फिल्म से उस ने करोड़ों की कमाई की थी, जिस का बड़ा हिस्सा मुमकिन है वह धार्मिक पश्चाताप में जाया कर चुकी हो.

समाज पर धर्मगुरुओं का दबदबा कितने गहरे तक पसरा है, इस की बेहतर मिसाल जायरा वसीम है, जो अब घर की रही न घाट की. ●

Vijay Bhatia

# 7 सहेलियों का खूबसूरत घर

35-40 साल पहले उत्तर प्रदेश के गांवों में आंचलिक कहानियों का खूब बोलबाला था. घर के कामकाज से निपट कर घर की बड़ीबूढ़ी महिलाएं किशोरावस्था की ओर छलांग लगाते बच्चों को कहानियां सुनाया करती थीं, जो बड़ी खट्टीमीठी होती थीं.

मसलन शैतान बच्चों को थोड़ी खट्टी कड़वी यानी भूतप्रेत, चुड़ैल और राक्षसों की कहानियां और अच्छे बच्चों को राजारानी, जंगली जानवरों, जादूगर और परियों की कहानियां. बच्चे सबसे ज्यादा परियों की कहानियां पसंद करते थे. इन्हीं कहानियों में एक कहानी 7 परियों की भी थी, जो आपस में सहेलियां थीं.

बाद में 1982 में दिलीप कुमार, शम्मी कपूर, पद्मिनी कोल्हापुरे और संजय दत्त स्टारर एक फिल्म आई थी 'विधाता'. इस फिल्म में एक गाना था 'सात सहेलियां खड़ीखड़ी, परियां बुझाएं घड़ीघड़ी.' द्विअर्थी बोल को ले कर उस समय इस गाने का विरोध भी हुआ था. संभवतः यह गाना 7 परियों वाली कहानी से प्रेरित था, जिस में थोड़ा सा अश्लीलता का छौंक लगा दिया गया था.

यहां हम 7 सहेलियों की अलग तरह की कहानी बता रहे हैं, जो आज के जमाने के हिसाब की हैं. ये 7 सहेलियां न तो अलौकिक हैं और न भारतीय, बल्कि चीन की हैं. इन की सोच या चिंता भी हालफिहाल की नहीं, भविष्य की है.

इन सातों सहेलियों ने सन 2008 में मजाकमजाक में तय किया था कि रिटायरमेंट के बाद साथसाथ रहेंगी. हालांकि उस वक्त सब ने इसे मजाक में लिया था. लेकिन अपनी पक्की दोस्ती के मद्देनजर अब इन सहेलियों ने तय किया है कि अपने एंजौयमेंट के लिए 30 साल तक इंतजार क्यों करें. बुढ़ापे में साथ रहने से आज जैसी फीलिंग नहीं आएगी. इसलिए सातों ने मिल कर 4 करोड़ रुपए में 7535 वर्गफुट का एक खूबसूरत तिमंजिला घर खरीदा है. इस शानदार घर में नीचे लिविंग एरिया है और ऊपर सातों के अलगअलग बैडरूम हैं.

खास बात यह है कि इन सातों फ्रैंड्स में से एक कुकिंग करती है, एक गार्डनिंग और तीसरी मेडिसिन की जानकार है. इन सहेलियों की कहानी सभी के लिए प्रेरणादायक है. वजह यह कि हम सब भविष्य के लिए प्लान तो बना लेते हैं, लेकिन पर्याप्त भविष्य निधि न होने के कारण वह पूरा नहीं हो पाता.

एक औनलाइन सर्वे के अनुसार, लोग हर महीने जितना चायकौफी पर खर्च करते हैं, उस से बहुत कम या बिलकुल भी रिटायरमेंट के लिए सेविंग नहीं करते. ●

Vikas Bhadauria

**सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश**

# प्यार की सूली पर अंजलि

❑ शैलेंद्र कुमार 'शैल'

Vikas Bhadu

25 वर्षीय अंजलि यादव 22 मई, 2019 को अपने कमरे में कुरसी पर अकेली बैठी गहन चिंतन में डूबी हुई थी. वह सिद्धार्थनगर जिले के मोहाना थाना स्थित गौहनिया बाजार में विजय कुमार के मकान में पहली मंजिल पर रहती थी. अंजलि और उस की सहकर्मी मित्र खुशबू सिद्धार्थनगर के कंचनपुर प्राइमरी पाठशाला में एक साथ पढ़ाती थीं. चूंकि उन दिनों विद्यालय में ग्रीष्मकालीन छुट्टियां हो गई थीं. इसलिए छुट्टियां होते ही खुशबू अपने घर चली गई थी. अंजलि भी अपने घर जाने की तैयारी में थी.

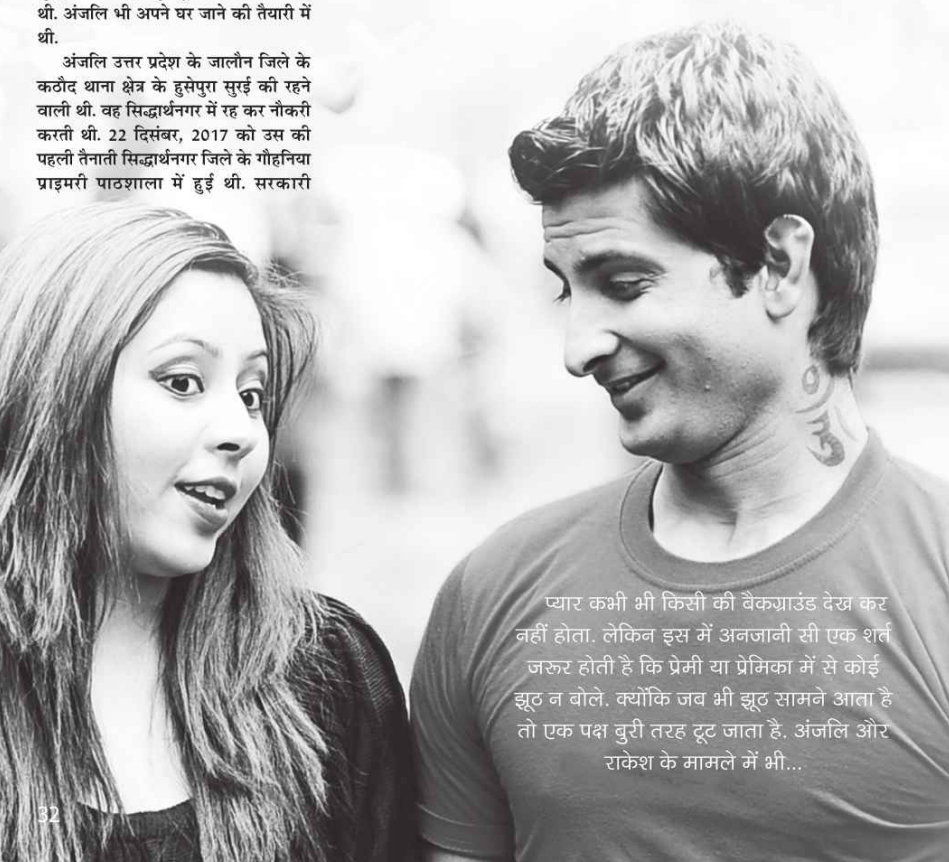

अंजलि उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के कठौद थाना क्षेत्र के हुसेपुरा सुरई की रहने वाली थी. वह सिद्धार्थनगर में रह कर नौकरी करती थी. 22 दिसंबर, 2017 को उस की पहली तैनाती सिद्धार्थनगर जिले के गौहनिया प्राइमरी पाठशाला में हुई थी. सरकारी



प्यार कभी भी किसी की बैकग्राउंड देख कर नहीं होता. लेकिन इस में अनजानी सी एक शर्त जरूर होती है कि प्रेमी या प्रेमिका में से कोई झूठ न बोले. क्योंकि जब भी झूठ सामने आता है तो एक पक्ष बुरी तरह टूट जाता है. अंजलि और राकेश के मामले में भी...

Vikas Bhadu

अध्यापिका बन कर अंजलि संतुष्ट नहीं थी. क्योंकि उस ने अपने जीवन के लिए इस से भी बड़ा लक्ष्य तय किया था. वह लक्ष्य था आईएएस अधिकारी बनने का. अपनी धुन की पक्की अंजलि विद्यालय से कमरे पर आने के बाद एग्जाम की तैयारी करती थी.

बहरहाल, 22 मई को अंजलि अपने कमरे में अकेली थी. उसे अकेली देख कंपनी देने के लिए मकान मालिक की दोनों बेटियां रिया और सीमा उस के कमरे में आ गईं. वैसे भी जब वह अकेली होती थी, रिया और सीमा अकसर उसे कंपनी देने उस के पास आ जाया करती थीं. उस दिन भी दोनों बहनें उसे कंपनी देने कमरे में आई थीं.

बातोंबातों में कब 2-3 घंटे बीत गए, उन्हें पता ही नहीं चला. शाम साढ़े 3 बजे के करीब रिया और सीमा अपने कमरे में लौट आईं तो अंजलि फिर अकेली रह गई थी.

एक घंटे बाद यानी शाम साढ़े 4 बजे के करीब अंजलि के कमरे से धुएं का तेज गुबार आसमान की ओर उठा तो उसे देख कर पासपड़ोस के लोग हैरान रह गए. कुछ ही देर में मौके पर सैकड़ों लोग जमा हो गए. अचानक घर के बाहर लोगों की भीड़ जुटते देख रिया और सीमा हैरान रह गईं. वे यह नहीं समझ पा रही थीं कि अचानक इतने लोग उन के घर के बाहर क्यों जमा हुए हैं. लेकिन जल्दी ही दोनों हकीकत समझ गईं. क्योंकि बाहर खड़े लोग आगआग चिल्ला रहे थे.

पड़ोस के 8-10 लोग पहली मंजिल पर अंजलि यादव के कमरे तक पहुंचे. उन के साथ रिया और सीमा भी थीं. लोगों ने देखा कि उस के कमरे के बाहर दरवाजे पर ताला लगा हुआ था. उन्होंने किसी तरह ताला तोड़ कर दरवाजा खोला.

कमरा खुलते ही भीतर का हृदयविदारक दृश्य देख कर सभी स्तब्ध रह गए. अंजलि की लाश पंखे से लटक रही थी. वह बुरी तरह जल चुकी थी. यह देख कर रिया और सीमा गश खा कर फर्श पर गिर गईं. उन्हें यह देख कर गहरा सदमा पहुंचा कि अभी थोड़ी देर पहले तीनों ने एक साथ बैठ कर घंटों बातें की थीं और अब ऐसे कैसा हो गया.

खैर, मौके पर ही भीड़ में से किसी ने 100 नंबर पर फोन कर के घटना की सूचना पुलिस कंट्रोलरूम को दे दी. चूंकि यह इलाका मोहाना थानाक्षेत्र के अंतर्गत आता है, इसलिए पुलिस कंट्रोलरूम द्वारा यह सूचना मोहाना थाने को दे दी गई.

## पुलिस भी कुछ नहीं समझ पाई

यह खबर मिलते ही थानाप्रभारी अंजनी राय पुलिस टीम के साथ गौहनिया बाजार स्थित मौके पर जा पहुंचे. क्राइम सीन देख कर थानाप्रभारी और अन्य लोग भौचक रह गए. बुरी तरह जली अंजलि की लाश पंखे से झूल रही थी. उस के गले में लोहे की तार और पैर में जंजीर बंधी हुई थी. जंजीर तख्त के पटरे के ऊपर बने सुराख में बंधी थी. तख्त से सटे कमरे में गैस सिलेंडर रखा था और किचन में लाल रंग के 2 बैग रखे थे.

थानाप्रभारी ने इस की जानकारी एसपी डा. धर्मवर सिंह और एएसपी मायाराम वर्मा को दे दी. सूचना पा कर दोनों अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए. उन्होंने भी घटनास्थल का बारीकी से मुआयना किया. थोड़ी देर बाद एफएसएल की टीम भी वहां आ गई. टीम ने वहां से सबूत जुटाए.

जांच करने के दौरान हैरान करने वाली यह बात सामने आई कि गैस सिलेंडर अंजलि के कमरे में कैसे पहुंचा? जबकि उसे किचन में होना चाहिए था. फिर उस के सामान से भरे 2 बैग किचन में क्यों रखे गए? जबकि बैग उस के कमरे में होने चाहिए थे.

परिस्थितियों से यह संकेत मिल रहे थे कि उस कमरे में अंजलि के अलावा कोई और भी था, जो उसे बेहद करीब से जानता रहा होगा और उस की पहुंच उस के कमरे तक रही होगी.

पते की बात तो यह थी कि अंजलि के कमरे तक पहुंचने के लिए घर के मुख्यद्वार से हो कर जाना होता था. ऐसे में कोई था तो कातिल घटना को अंजाम दे कर आसानी से बाहर कैसे चला गया था. उसे किसी ने देखा तक नहीं, यह बात बेहद चौंकाने वाली थी.

एसपी डा. धर्मवीर सिंह और एएसपी मायाराम वर्मा ने मकान मालिक विजय कुमार से घटना से संबंधित पूछताछ की. विजय ने बताया कि इस बारे में उन्हें कुछ पता नहीं,



छायांकन: मॉडलिंग

लेकिन उन की दोनों बेटियां रिया और सीमा अंजलि के साथ लंबा समय बिताती थीं. उन से जरूर कोई जानकारी मिल सकती है.

विजय कुमार ने अपनी दोनों बेटियों को बुला लिया. उस समय वे एकटक फर्श पर नजरें गड़ाए उसे ही देखे जा रही थीं. लग रहा था जैसे दोनों किसी गहरे सदमे में हों, उन्हें होश ही न हो. अधिकारियों ने उन से अंजलि की जिंदगी से जुड़े कुछ सवाल पूछे, लेकिन वे दोनों न तो कुछ बोल पाईं और न ही बता पाईं. उस के बाद पुलिस ने पड़ोसियों से घटना के बारे में जानकारी करनी चाही, लेकिन वे कुछ नहीं बता सके.

Vikas Bhadu

लाश और मौके की स्थिति देख कर यही अनुमान लगाया जा रहा था कि अंजलि की हत्या कर के हत्यारे ने उस के शव को पंखे से लटका दिया होगा. यह हत्या है या आत्महत्या, इस सच का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद लग सकता था.

पुलिस ने मौके की काररवाई निपटा कर लाश पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवा दी. उस के बाद पुलिस ने घटना की जानकारी उस के पिता अजय कुमार यादव को देते हुए उन्हें जल्दी पहुंचने के लिए कह दिया.

बेटी अंजलि की आकस्मिक मौत की सूचना मिलते ही घर में कोहराम मच गया. अंजलि की मां सावित्री देवी और छोटी बहन मनोरमा का रोरो कर बुरा हाल था. गांव वाले भी अंजलि की मौत की खबर सुन कर स्तब्ध थे. यकीन नहीं हो पा रहा था कि जो खबर उन्होंने सुनी, वह सच है. अंजलि थी ही ऐसी व्यवहारकुशल कि कोई भी उस की मौत को सच मानने के लिए तैयार ही नहीं था.

बहरहाल, बेटी की मौत की खबर मिलते ही अजय यादव अपने शुभचिंतकों को साथ ले कर जालौन से सिद्धार्थनगर चल दिए. उन के साथ में उन की छोटी बेटी मनोरमा भी थी. सिद्धार्थनगर पहुंच कर अजय यादव सीधा मोहाना थाने पहुंचे. उस समय शाम के 6 बज रहे थे.



अध्यापक राकेश कुमार यादव को गिरफ्तार कर प्रैस कौन्फ्रैंस करते पुलिस अधिकारी

इधर अंजलि की सहकर्मी और सहेली खुशबू को भी पुलिस ने फोन कर के सिद्धार्थनगर बुला लिया था ताकि उस की मौत की गुत्थी जल्द से जल्द सुलझाई जा सके. थानाप्रभारी अंजनी राय ने अजय यादव, उन की बेटी मनोरमा से पूछताछ की.

अजय यादव ने कहा, ''अंजलि बेहद खुशदिल और नेक किस्म की निडर लड़की थी. वह तो सपने में भी मौत को गले लगाने की बात नहीं सोच सकती थी. जरूर उस की हत्या की गई है. वह कई दिनों से परेशान सी थी. पूछने पर कुछ बताती भी नहीं थी.''

''पापा सच कह रहे हैं,'' बात काटती हुई मनोरमा बीच में बोली, ''दीदी, वाकई कुछ दिनों से परेशान थीं.''

अंजलि यादव की मौत रहस्य बन कर रह गई

''किस बात को ले कर परेशान थीं?'' थानाप्रभारी ने मनोरमा से सवाल किया.

''मैं ने इस बारे में दीदी से बात की थी. वह कुछ बताने को तैयार ही नहीं थीं. बस इतना कह रही थीं कि घर आने पर सारी बातें बताऊंगी. इतना कहने के बाद वह रोने लगी थीं. घटना वाले दिन शाम 4 बजे दीदी से मेरी बात हुई थी. उस समय वह कुछ ज्यादा ही परेशान लग रही थीं और फोन पर रो भी रही थीं. उस के बाद तो...'' कह कर मनोरमा रो पड़ी.

## मुकदमा हुआ दर्ज

थानाप्रभारी ने उसे प्यार से चुप कराया. तब तक मृतका की सहेली खुशबू भी वहां आ गई. पुलिस ने उस से भी पूछताछ की. तीनों से पूछताछ करने के बाद थानाप्रभारी अंजनी राय ने अजय यादव की तरफ से अज्ञात के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मुकदमा दर्ज कर लिया.

यह बात 22 मई, 2019 की है. मुकदमा दर्ज करने के बाद पुलिस जांच में जुट गई. पुलिस ने अंजलि के मोबाइल नंबर की काल डिटेल्स निकलवाई. काल डिटेल्स में एक नंबर ऐसा मिला, जिस पर अंजलि की अकसर लंबीलंबी बातें होती थीं.

जांच में वह नंबर अंजलि के साथ विद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षक राकेश कुमार यादव का निकला. दोनों के रिश्तों के बारे में जब पुलिस पड़ताल की गई तो चौंकाने वाले

Vikas Bhadur

राज्य महिला आयोग की सचिव अंजू चौधरी

तथ्य खुल कर सामने आए. अंजलि यादव और राकेश कुमार यादव के बीच काफी समय से मधुर संबंध थे.

दोनों एकदूसरे से प्यार करते थे और जल्द ही शादी करने वाले थे. यह बात अंजलि के घर वाले, उस की सहेली खुशबू और विद्यालय के अन्य शिक्षक जानते थे. पुलिस ने जब यह बात मृतका के पिता अजय यादव को बताई तो उन्होंने कहा कि इस बारे में उन्हें सारी बातें पता हैं.

उन्होंने पूरे विश्वास के साथ कहा कि उन की बेटी की मौत में उसी शिक्षक का हाथ है, जिस से वह प्यार करती थी. उस से सख्ती से पूछताछ की जाए तो मामला सामने आ जाएगा. काल डिटेल्स और अन्य जांच के बाद यह मामला प्रेम में धोखा मिलने के रूप में सामने आया.

काल डिटेल्स और मृतका के पिता अजय कुमार यादव के बयान के आधार पर पुलिस ने शिक्षक राकेश कुमार यादव को 26 मई, 2019 को उस के घर से गिरफ्तार कर लिया.

राकेश देवरिया के थाना कोतवाली सदर स्थित गांव चकरवाधुस पनसरही का मूल निवासी था और मोहाना में किराए का कमरा ले कर रहता था. ग्रीष्मकालीन अवकाश होने की वजह से वह अपने घर चला गया था.

पूछताछ में उस ने पुलिस के सामने यह बात तो कबूल कर ली कि वह और अंजलि एकदूसरे से प्यार करते थे लेकिन उस की मौत में मेरा कोई हाथ नहीं है. मुझे नहीं पता कि अंजलि ने किस वजह से मौत गले लगाई या उस की किस ने हत्या की. मैं निर्दोष हूं.

पुलिस ने राकेश की एक नहीं सुनी. चूंकि अजय यादव ने उस के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाई थी, इसलिए पुलिस ने राकेश को गिरफ्तार कर के जेल भेज दिया. चूंकि अध्यापक राकेश यादव खुद को निर्दोष बता रहा था, इसलिए यह मामला हत्या और आत्महत्या के बीच उलझ कर रह गया था.

पुलिस गुत्थी को सुलझाने में जुटी हुई थी. जब तक पुलिस गुत्थी को सुलझाने का प्रयास करती है, तब तक कहानी को आगे बढ़ाने के लिए अंजलि की निजी जिंदगी की डायरी के पन्नों को पलटते हैं.

25 वर्षीय अंजलि यादव मूलरूप से उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के थाना कठौद के हुसेपुरा सुरई की रहने वाली थी. उस के पिता अजय कुमार यादव किसान थे. उन के पास 8 बीघा जमीन थी.

उन के परिवार में पत्नी सावित्री के अलावा 5 बेटियां मनीषा, बेबी, रूपाली, अंजलि और मनोरमा थीं. खेती के अलावा अजय की हुसेपुरा सुरई बाजार में दवाई की दुकान थी. इस तरह वह इतना कमा लेते थे, जिस से उन की गृहस्थी मजे से चल रही थी.

## अंजलि अध्यापिका नहीं कुछ और बनना चाहती थी

बेहद समझदार और सुलझे अजय यादव ने कभी बेटा और बेटियों में फर्क महसूस नहीं किया था. वह भले ही गांव में रहते थे, लेकिन बच्चों को संस्कार देने में कभी पीछे नहीं हटे. बच्चों को सामाजिक मानमर्यादा का पाठ पढ़ाना तो जैसे उन की दैनिक क्रियाओं में शामिल था.

यही वजह थी कि उन की पांचों बेटियां बेहद संस्कारी और गुणी निकलीं. पांचों बेटियां पढ़ने में होशियार थीं, जिन में चौथे नंबर की बेटी अंजलि और बहनों से ज्यादा समझदार थी.

अंजलि का सपना बड़े हो कर कलेक्टर बनने का था यह सपना उस ने सिर्फ खुली आंखों से देखा ही नहीं था बल्कि वह उसे सच करने के लिए रातदिन कमरतोड़ मेहनत करती थी. उसी तैयारी के बीच उस की शिक्षा विभाग में नौकरी लग गई. उस ने यह नौकरी यह सोच कर जौइन कर ली कि यहां से मिलने वाली सैलरी से उस के और मातापिता के खर्च पूरे हो सकेंगे और वह समय मिलने पर प्रशासनिक सेवा परीक्षा की तैयारी भी करती रहेगी.

सितंबर, 2017 में अंजलि की सिद्धार्थनगर के गौहनिया में पहली तैनाती हुई थी. चंचल और चुलबुली अंजलि ने थोड़े ही समय में विद्यालय के सभी शिक्षकों को अपना बना लिया था. उस का बच्चों को पढ़ाने का तरीका भी अलग था. वह बच्चों को हंसाते गुदगुदाते हुए पढ़ाती थी. उस की इस कलात्मक और अनोखी शैली से बच्चे जल्द ही अपना पढ़ाई का काम पूरा कर लेते थे.

बच्चे तो बच्चे, शिक्षक राकेश कुमार यादव भी अंजलि के खुशमिजाज का मुरीद था. अंजलि कब आंखों के रास्ते उस के दिल में उतर आई, उसे पता ही नहीं चला. जब पता चला तो अंजलि उस की कमजोरी बन चुकी थी. कहने का मतलब यह है कि राकेश अंजलि की खूबसूरती पर फिदा था और उस से प्यार करने लगा था.

यह बात अंजलि को पता नहीं थी कि कोई उस का दीवाना बना हुआ है, जो उस पर जान छिड़कता है. वैसे भी अंजलि ऐसीवैसी युवती नहीं थी जो सामाजिक दायरों को लांघे. उसे तो बस अपने काम से मतलब था.

शिक्षक राकेश कुमार यादव अंजलि से उम्र में काफी बड़ा था और शादीशुदा भी. लेकिन खुद को उस ने कुंवारा बताया था. धीरेधीरे अंजलि को राकेश के चाहत भरे इरादों का पता चल गया. तब उस ने राकेश से साफसाफ कह दिया कि उसे प्यार जैसी बातों में अभी कोई दिलचस्पी नहीं है. वह उसी लड़के से शादी करेगी, जिस से उस के मांबाप करना चाहेंगे.

अंजलि की यह बात राकेश को बुरी नहीं लगी, बल्कि उसे उस पर और भी प्यार उमड़ आया था. अंजलि की एक खास सहेली खुशबू थी, वह अपने दिल की हर बात उसी से शेयर करती थी. उस ने उसे यह भी बता दिया था कि राकेश उस पर फिदा है.

राकेश ने जब देखा कि उस की दाल नहीं गल रही है तो उस ने उस की सहेली खुशबू को पटा कर उसे सीढ़ियां बनाया. राकेश ने खुशबू से अंजलि तक अपने प्यार का पैगाम भिजवा दिया.

खुशबू ने अंजलि के सामने राकेश की ऐसी जोरदार वकालत की कि उस ने राकेश के प्यार को स्वीकृति दे दी. पते की बात यह थी कि राकेश ने खुशबू से भी अपने शादीशुदा होने की बात छिपा ली थी. खुशबू के जरिए राकेश और अंजलि एकदूसरे के करीब आए. दोनों ही एकदूसरे से प्रेम करने लगे थे.

Vikas Bhadu



आरोपी अध्यापक राकेश कुमार यादव

राकेश अंजलि का पहला प्यार था. उस का प्रेम निश्छल और पाकीजा था. वह उसे जीजान से प्यार करने लगी थी. जबकि राकेश शातिर और छलिया था. उसे अंजलि से नहीं बल्कि उस के गोरे बदन से प्रेम था. वह सिर्फ उस के जिस्म का भूखा था और जिस्मानी रिश्ता बना कर उसे छोड़ देना चाहता था.

इस के लिए वह किसी भी हद तक जाने को तैयार था. उस ने उस के सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो अंजलि उस के इस प्रस्ताव को ठुकरा नहीं सकी और शादी के लिए हां कर दी. इधर अंजलि के मांबाप ने उस की शादी झांसी के एक इंजीनियर के साथ पक्की कर दी थी. यह बात अंजलि को तब पता चली जब उसे गोदभराई की तारीख बताई



अंजलि की मौत की खबर सुनने के बाद उस के घर में छाया मातम

गई. यह सुन कर अंजलि को झटका लगा. अपने प्यार की बात वह मांबाप से बताने ही वाली थी कि उसे अपनी शादी तय होने की खबर मिल गई.

## राकेश ने धोखा किया था अंजलि के साथ

अंजलि अपनी शादी तय होने वाली बात राकेश को बताने ही जा रही थी कि उसे राकेश के शादीशुदा होने की बात पता चली. यह जान कर अंजलि को बड़ा दुख हुआ. अपने साथ होने वाले इस धोखे की बात पता चलते ही अंजलि टूट सी गई और परेशान रहने लगी. उसे राकेश से ऐसी उम्मीद नहीं थी कि वह उसे इतना बड़ा धोखा दे सकता है.

प्यार में धोखा खाने के बाद अंजलि टूट सी गई थी. फरवरी, 2019 में उस की गोदभराई थी. गोदभराई में अंजलि घर आई तो जरूर थी, लेकिन उसे इस शादी से कोई खास दिलचस्पी नहीं थी. शादी को ले कर जो उत्साह उस के चेहरे पर होना चाहिए था, वह नदारद था. इसे मांबाप के साथ उस की बहनों ने भी महसूस किया था.

खैर, गोदभराई की रस्म पूरी होने के बाद 5 मई, 2019 को अंजलि की शादी की तारीख पक्की हुई थी. इत्तफाक से उस तारीख पर चुनाव होना था, इसलिए शादी की तारीख आगे बढ़ा दी गई. गोदभराई की रस्म पूरी होने के बाद अंजलि नौकरी पर लौट आई थी.

प्यार में धोखा खाने के बाद अंजलि का मन किसी काम में नहीं लग रहा था. वह हमेशा उदास रहती थी. अंजलि को अकेली या उदास देख कर उस के मकान मालिक की दोनों बेटियां रिया और सीमा उस के पास जा कर बैठ जाती थीं. दोनों के आ जाने से अंजलि का मन लग जाता और थोड़ा समय अच्छे से कट जाया करता था.

20 मई, 2019 को स्कूलों में 45 दिन का ग्रीष्मकालीन अवकाश हुआ. छुट्टी होते ही विद्यालय के सभी अध्यापक अपनेअपने घर चले गए. अंजलि की सहेली खुशबू भी अपने घर आ गई थी. अंजलि ने भी 22 मई को घर जाने की तैयारी कर ली थी.

21 मई, 2019 के दिन अंजलि के कमरे पर कई लोग आतेजाते रहे. दोपहर बाद जब अंजलि काम से फारिग हुई तो रोज की तरह रिया और सीमा उस के कमरे में चली गईं. तीनों बैठ कर घंटों इधरउधर की बातें करती रहीं. साढ़े 3 बजे के करीब दोनों बहनें अपने कमरे में वापस लौट आई थीं.

## क्या रहस्य बन कर रह जाएगी अंजलि की मौत

रिया और सीमा के वहां से जाने के बाद अंजलि के पास उस की छोटी बहन मनोरमा का फोन आया था. वह उस से पूछ रही थी कि विद्यालय में छुट्टियां हो गई हैं, घर कब आ रही हो. उस ने छोटी बहन से कहा कि आज शाम को घर के लिए रवाना होऊंगी.

इस के बाद अंजलि फोन पर ही रोने लगी. मनोरमा ने उस से रोने की वजह पूछी तो उस ने फोन पर कुछ नहीं बताया. बस इतना ही कहा कि घर आने के बाद सब बताऊंगी. इस

Vikas Bhadu

घटनास्थल की जांच करती पुलिस

के बाद फोन कट गया. इस के ठीक आधे घंटे बाद रहस्यमय तरीके से अंजलि के कमरे से धुएं का बड़ा गुबार उठा. बाद में रहस्यमय तरीके से पंखे से झूलती उस की लाश मिली.

बहरहाल, मोहना पुलिस की करतूत से बेसिक शिक्षा अधिकारी राम सिंह भी आहत हैं. बीएसए राम सिंह ने आरोप लगाया कि मंगलवार 21 मई को जब घटना की जानकारी हुई तो वह शाम करीब 6 बजे गौहनिया स्थित अंजलि यादव के कमरे पर पहुंचे. वहां मौजूद एक दरोगा ने उन्हें नीचे ही रोक दिया. जब उन्होंने परिचय दिया तब जा कर परिसर में बैठने की अनुमति दी गई. एसपी डा. धर्मवीर सिंह से बात करने के बाद उन्हें कमरे में जाने दिया गया.

वहां पर 5 पुलिस वाले बैठे हुए थे. शव के गले में लोहे का तार बंधा हुआ था. पैर जंजीर से बांधा गया था. सवाल यह है कि अगर अंजलि को आत्महत्या करनी थी तो उस ने गला व पैर क्यों बांधा था. फिर उस ने दरवाजे पर बाहर ताला कैसे लगा लिया.

इस सवाल का जवाब पुलिस के पास नहीं था. सवाल सुन कर पुलिस का बस इतना ही कहना था कि पुलिस हत्या और आत्महत्या दोनों पहलू पर जांच कर रही है. इस के लिए स्वाट टीम को भी लगा दिया गया है. महिला पुलिस भी अलग से जांच कर रही है. दोषियों को किसी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा.

उधर 24 मई, 2019 को राज्य महिला आयोग की सचिव अंजू चौधरी ने शिक्षिका अंजलि यादव कांड का संज्ञान लिया. आयोग की टीम ने गौहनिया बाजार स्थित घटनास्थल का निरीक्षण किया. पूरे मामले को संदिग्ध मानते हुए महिला आयोग ने प्रदेश सरकार से उच्चस्तरीय जांच करने की अनुशंसा की.

आयोग की सचिव अंजू चौधरी ने पहले दिन से ही इस मामले को आत्महत्या मानने पर पुलिस विभाग को आड़े हाथों लिया. उन्होंने फोन पर परिजनों से बात की और उन्हें न्याय दिलाने का आश्वासन दिया.

खैर, अंजलि की मौत पूरी तरह रहस्य बन कर रह गई है. उस ने आत्महत्या की या किसी ने उस की हत्या कर के आत्महत्या का रूप दिया, पुलिस दोनों पहलुओं से जांच कर रही है.

अंजलि से राकेश के प्रेम संबंध थे, यह सच था. उस ने उसे धोखा दिया, यह भी सच था. पुलिस ने राकेश को अंजलि को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने के आरोप में जेल भेज दिया. शायद पुलिस ने यह इसलिए किया होगा कि जनाक्रोश को शांत किया जा सके.

कथा लिखे जाने तक पुलिस अंजलि कांड की गुत्थी को सुलझाने में जुटी हुई थी. क्या पुलिस इस गुत्थी को सुलझा पाएगी, यह अभी कहा नहीं जा सकता. ●

—कथा में रिया और सीमा परिवर्तित नाम है. कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

पटना, बिहार

# पटना की सब से बड़ी डकैती सरगना की गर्लफ्रैंड से मिला सुराग

❑ प्रतिनिधि

उस दिन तारीख थी 21 जून. दोपहर करीब एक बजे का समय रहा होगा. सूरज अपने पूरे तेवर दिखा रहा था. लगता था जैसे आसमान से आग बरस रही हो. तेज गरमी और उमस के कारण बाजारों में ज्यादा भीड़भाड़ नहीं थी.

बिहार की राजधानी पटना में दीघा-आशियाना रोड पर आभूषणों का नामी शोरूम पंचवटी रत्नालय है. इस शोरूम में उस समय कोई ग्राहक नहीं था. शोरूम मालिक रत्नेश शर्मा को भूख लगी थी. वैसे भी दोपहर के भोजन का समय हो गया था.

उन्होंने सोचा कि कोई ग्राहक नहीं है तो क्यों न इस समय का सदुपयोग कर के भोजन

पटना के पंचवटी रत्नालय शोरूम में दिनदहाड़े 5 करोड़ की डकैती पड़ी थी. जिस तरह से वारदात को अंजाम दिया गया था, उस से लग नहीं रहा था कि पुलिस बदमाशों तक पहुंच पाएगी. लेकिन पुलिस के हाथ लगी एक बदमाश की गर्लफ्रैंड के सहारे...

Vivas Bhadu

कर लें. शोरूम में 8 कर्मचारी अपनीअपनी सीट पर बैठे ग्राहकों का इंतजार कर रहे थे. गार्ड दीपू श्रीवास्तव शोरूम के अंदर गेट पर बैठा हुआ था.

रत्नेश शर्मा इसी उधेड़बुन में थे कि भोजन करने बैठें या कुछ देर और रुकें. इतनी देर में 2 ग्राहक गेट खोल कर शोरूम में आए. ग्राहकों को देख कर रत्नेश शर्मा और शोरूम के कर्मचारियों के चेहरे पर खुशी आ गई. दोनों ग्राहकों ने एक शोकेस पर पहुंच कर कहा, ''भैया, हमें डायमंड के ईयरिंग्स लेने हैं, कोई लेटेस्ट डिजाइन वाले दिखाओ.''

शोरूम के कर्मचारी ने दोनों ग्राहकों को शोकेस के सामने रखी आरामदायक कुरसी पर बैठने का इशारा किया और अलमारी से डायमंड के ईयरिंग्स निकालने लगा. शोरूम कर्मचारियों को अचानक याद आया कि ये ग्राहक तो 1-2 बार पहले भी आए थे, लेकिन खरीदारी कुछ नहीं की थी.

कर्मचारियों ने उन में से एक ग्राहक को पहचान लिया था, लेकिन आमतौर पर कई बार ऐसा होता है कि ग्राहक को भले ही किसी दुकान पर कोई चीज पसंद न आए. लेकिन वह दोबारा उस दुकान पर खरीदारी करने पहुंचता है.

उसी दौरान 8-10 युवक तेजी से शोरूम के अंदर घुस आए. इन में से 3 युवकों के चेहरे हेलमेट से ढंके हुए थे. 2-3 युवकों ने चेहरा गमछे से इस तरह ढंका हुआ था, जैसे गरमी से परेशान लोग ढंक लेते हैं. उन में से 2-3 युवकों के चेहरे खुले हुए थे. इन सभी युवकों के पास हाथ में या पीठ पर बैग था. इन में से कुछ युवक जींस और कुछ पैंट टीशर्ट पहने हुए थे.

शोरूम में घुसते ही 3-4 युवकों ने पिस्टल वगैरह निकाल ली. बाद में आए युवकों को देख कर डायमंड के ईयरिंग्स खरीदने आए दोनों युवकों ने भी अपने बैग से हथियार निकाल लिए. उन लोगों के हाथ में पिस्टल देख कर गार्ड दीपू श्रीवास्तव ने विरोध करने का प्रयास किया, तो एक युवक ने उस के सिर पर पिस्टल के बट से हमला कर दिया. इस से दीपक के सिर से खून बहने लगा.

गार्ड दीपू पर हमला होते देख कर शोरूम मालिक रत्नेश शर्मा आगे बढ़े तो एक युवक ने उन के सिर में भी पिस्टल से हमला कर दिया. उन के सिर से भी खून रिसने लगा. रत्नेश समझ गए कि वे लोग बदमाश हैं और शोरूम में डाका डालने आए हैं.

रत्नेश ने दुनिया देखी थी, उन्हें पता था कि ऐसे मौके पर विरोध करने का मतलब अपनी जान जोखिम में डालना होता है. इसलिए उन्होंने बदमाशों से कहा, ''तुम्हें जो ले जाना है, ले जाओ लेकिन ये पिस्टल, तमंचे वगैरह दूर रखो.''

ज्वैलरी शोरूम के मालिक रत्नेश शर्मा और घायल सुरक्षा गार्ड दीपू श्रीवास्तव और बाएं पेज पर शोरूम में डकैती के बाद जांच करती पुलिस

शोरूम मालिक की बात सुन कर उन युवकों में हावभाव से सरगना नजर आ रहे अच्छी कदकाठी और खुले चेहरे वाले युवक ने कहा, ''सेठजी, समझदार हो. तुम इस दुकान का बीमा करवाए हो न, ज्यादा होशियार बनोगे तो यहीं ठोंक देंगे.''

ठोंकने की धमकी सुन कर शोरूम के कर्मचारी सहम गए. सरगना ने शोरूम के कर्मचारियों से अपनेअपने मोबाइल देने को कहा. कर्मचारियों ने अपने मोबाइल दे दिए तो सरगना ने शोरूम के कर्मचारियों को एक तरफ जमीन पर बैठा दिया.

इस के बाद सरगना ने शोरूम का गेट अंदर से बंद कर लिया और गेट पर एक कुरसी लगा कर बैठ गया. उस के निर्देशों पर उन बदमाशों ने शोरूम की एकएक अलमारी और शोकेसों को खंगाल कर सारे कीमती आभूषण निकाल लिए. इस बीच सरगना अपने गुर्गों को लगातार हिदायत देता रहा कि जल्दी करो और शांत रहो.

वह शोरूम के कोने में जमीन पर बैठे कर्मचारियों को भी बीचबीच में धमकाता रहा कि हिलोगे तो गोली मार दूंगा.

सरगना के कहे अनुसार बदमाशों ने सारे आभूषण अपने साथ लाए बैगों में भर लिए. तभी सरगना ने शोरूम मालिक रत्नेश से तिजोरी की चाबी मांगी. तिजोरी खोल कर सारे कीमती रत्नजवाहरात, डायमंड और सोने के आभूषण निकाल लिए. ये सभी जेवर भी एक बैग में भर लिए.

करीब आधे घंटे तक लूटपाट करने के बाद बदमाश जेवरों से भरे बैग ले कर एकएक कर शोरूम से बाहर निकल गए. सरगना नजर आ रहे खुले मुंह वाले बदमाश ने जाते समय शोरूम मालिक रत्नेश से कहा, ''मुझे पहचान लो. हम मोस्टवांटेड हैं. पटना की पुलिस कई साल से हमारे पीछे पड़ी हुई है.'' सरगना की भाषा लोकल थी. उस के गुर्गे भी स्थानीय भाषा में बात कर रहे थे.

भागने से पहले एक बदमाश ने शोरूम में लगे सीसीटीवी कैमरों का रिकौर्डर निकाल कर अपने बैग में रख लिया. जाते समय सरगना ने शोरूम के गार्ड दीपू श्रीवास्तव के सिर से खून बहता देख कर अपना गमछा उसे देते हुए कहा सिर पर बांध लो. इस के बाद सरगना व बाकी बदमाश शोरूम का गेट बाहर से बंद

Vikas Pandey

कर फरार हो गए. शोरूम मालिक व कर्मचारियों के मोबाइल वे अपने साथ ही ले गए थे.

डकैतों के भागने के बाद शोरूम कर्मचारियों ने शोर मचा कर गेट खुलवाया. गेट खुला तो आसपास के लोगों को पता चला कि दिनदहाड़े ज्वैलरी शोरूम में डकैती डाली गई है. आसपास के दुकानदार और राहगीर वहां एकत्र हो गए.

Vikas Bhadu

पुलिस को सूचना दी गई तो करीब आधे घंटे बाद पुलिस पहुंची. पुलिस ने शोरूम मालिक रत्नेश शर्मा से पूछताछ की. रत्नेश ने मोटे तौर पर हिसाब लगा कर बताया कि डकैत लगभग 5 करोड़ रुपए के हीरेजवाहरात और कीमती आभूषणों के अलावा 13 लाख रुपए नकद लूट कर ले गए हैं. यह पटना की सब से बड़ी डकैती बताई गई.

दिनदहाड़े 5 करोड़ की डकैती की वारदात का पता चलने पर आईजी (जोन) सुनील कुमार, डीआईजी (सेंट्रल) राजेश कुमार, सीआईडी के डीआईजी पी.एन. मिश्रा और एसएसपी गरिमा मलिक सहित पुलिस के तमाम अफसर मौके पर पहुंच गए. शोरूम कर्मचारियों ने अधिकारियों से शिकायत करते हुए कहा कि अगर बाजार में पुलिस गश्त कर रही होती लुटेरे पकड़ लिए जाते.

पुलिस ने जांचपड़ताल शुरू करते हुए शोरूम मालिक और कर्मचारियों से पूछताछ की. शोरूम के आसपास के लोगों से भी पूछताछ की गई. पूछताछ में पता चला कि शोरूम में घुसे 10 बदमाशों की उम्र 20 से 35 साल के बीच थी. वे स्थानीय भाषा में बोल रहे थे.

## सुराग की तलाश

मौके पर पुलिस को बदमाशों द्वारा गार्ड को दिया गया केवल एक गमछा ही मिला. बदमाश इस के अलावा कोई चीज वहां नहीं छोड़गए थे, जिस से उन का सुराग मिलता. पुलिस ने बदमाशों का सुराग लगाने और साक्ष्य जुटाने के लिए एफएसएल टीम और डौग स्क्वायड को भी मौके पर बुला लिया.

बदमाशों का सुराग लगाने के लिए पुलिस ने बाजार में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली. आसपास के लोगों से पूछताछ में प्रारंभिक तौर पर पता चला कि बदमाश 3 बाइकों और एक कार में सवार हो कर भागे थे. ये बाइक और कार ज्वैलरी शोरूम से कुछ दूर खड़ी की गई थीं.

इस का मतलब था कि बदमाश अपने वाहनों को शोरूम से दूर खड़ा कर पैदल ही डकैती डालने पहुंचे थे और डकैती डालने के बाद आराम से पैदल ही अपने वाहनों तक गए थे. पुलिस ने अनुमान लगाया कि शोरूम में घुसे बदमाशों के अलावा एकदो बदमाश बाहर भी जरूर रहे होंगे. इस तरह वारदात में 10 से 12 बदमाश शामिल होने का अनुमान लगाया गया.

उसी दिन शोरूम मालिकों की ओर से पटना के राजीव नगर थाने में डकैती की रिपोर्ट दर्ज करा दी गई. दिनदहाड़े सरेबाजार शोरूम मालिक और कर्मचारियों को बंधक बना 5 करोड़ रुपए की ज्वैलरी लूट कर बदमाशों ने पुलिस के सामने चुनौती पैदा कर दी. इस पर आईजी ने बदमाशों का सुराग लगाने के लिए एसएसपी गरिमा मलिक के नेतृत्व में एसआईटी का गठन किया.

एफएसएल टीम ने जांचपड़ताल कर पंचवटी रत्नालय से बदमाशों के करीब 25-30 फिंगरप्रिंट लिए. डौग स्क्वायड को वह गमछा सुंघाया गया, जिसे बदमाश गार्ड को दे गया था. गमछा सूंघ कर खोजी कुत्ता दुकान से बाहर निकला और कुछ दूर दीघा रोड तक जा कर वापस लौट आया.

प्रारंभिक जांच में यह बात भी सामने आई कि बदमाशों ने पंचवटी रत्नालय में डकैती डालने से पहले कई दिन रेकी की थी. वारदात से 2 दिन पहले 2 लोग शोरूम पर खरीदारी करने आए थे. उस दिन उन्होंने डायमंड के आभूषण देखे और बाद में आ कर लेने की बात कही थी.

इस के दूसरे दिन भी वे दोनों दोपहर में करीब एकसवा बजे आए थे और सोने की चेन देखने के बाद एटीएम से पैसा निकालने की बात कह कर चले गए थे. इन में से एक व्यक्ति डकैती डालने वालों में शामिल था. मुंह ढंका न होने से कर्मचारियों ने उसे पहचान लिया था.

वारदात का तरीका जान कर पुलिस अफसर समझ गए कि इस में किसी प्रोफेशनल गिरोह का हाथ है. पुलिस ने बदमाशों का सुराग लगाने के लिए सब से पहले सोना और ज्वैलरी लूटने वाले गिरोहों का रिकौर्ड निकलवाया. उन गिरोहों के सरगनाओं की ताजा गतिविधियों की जानकारी जुटाने के लिए मुखबिर लगा दिए गए.

पता चला कि देश के सब से चर्चित सोना लूटने वाले गिरोह का सरगना सुबोध सिंह पटना के राजीव नगर इलाके का ही रहने वाला है और आजकल जेल में बंद है. लेकिन उस का गिरोह सक्रिय है. सुबोध सिंह कई राज्यों में सोना लूट की बड़ीबड़ी वारदातें कर चुका था. उस के गिरोह के एक बदमाश मनीष को एसटीएफ ने कुछ दिन पहले वैशाली जिले में मुठभेड़ में मार गिराया था.

नालंदा का रहने वाला सुबोध सिंह कुछ महीने पहले रूपसपुर में गिरफ्तार किया गया था. इस के बाद उसे सोना लूट की वारदातों के सिलसिले में जयपुर, कोलकाता, भुवनेश्वर व आसनसोल जेल ले जाया गया था. बाद में उसे आसनसोल से पटना की बेउर जेल में भेज दिया गया था.

बदमाशों की बातचीत के लहजे और वारदात के तरीके से पुलिस ने अनुमान लगाया कि इस में राजीव नगर के 5 किलोमीटर के दायरे में आने वाले फुलवारी शरीफ और दानापुर के बदमाशों का हाथ हो सकता है.

वारदात वाले दिन पुलिस बदमाशों की तलाश, नाकेबंदी और इस तरह की वारदात करने वाले बदमाशों की धरपकड़ व पूछताछ की छापेमारी में जुटी रही, लेकिन कहीं से कोई सुराग नहीं मिला. दूसरे दिन पुलिस अधिकारी फिर से इस वारदात को सुलझाने की मशक्कत करने लगे.

पुलिस को शोरूम के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की रिकौर्डिंग से बदमाशों के बारे में कुछ सुराग जरूर मिले, लेकिन उन के चेहरे साफ नहीं हुए. पुलिस को इतना जरूर पता चला कि बदमाशों ने वारदात में 3-4 बाइकों और एक फार्च्युनर गाड़ी इस्तेमाल की थी. बदमाशों के वाहनों की तसवीर रामनगरी से ले कर रूपसपुर नहर तक कैमरों में कैद हुई. रूपसपुर नहर से कुछ बदमाश जेपी सेतु से फरार हो गए और कुछ खगोल की ओर चले गए.

शोरूम मालिक और कर्मचारियों की ओर से बताए गए हुलिए के आधार पर पुलिस ने 2 बदमाशों के स्कैच बना कर जारी किए. ये स्कैच शोरूम में डकैती डालने वाले गिरोह के सरगना नजर आ रहे बदमाशों के थे.

पुलिस अधिकारियों ने स्कैच बनने के बाद अपराधियों की पहचान कर लेने का दावा किया, लेकिन उन के नामपते का खुलासा नहीं किया. पुलिस इन बदमाशों की तलाश में जुटी रही. इस के लिए अलगअलग जगहों से पचासों बदमाशों को थाने ला कर पूछताछ की गई.

वारदात के दूसरे ही दिन पंचवटी रत्नालय से करीब एक किलोमीटर दूर राजीव नगर नाला रोड साकेत भवन के पास लावारिस हालत में एक अपाचे बाइक खड़ी मिली. जांच में इस बाइक का नंबर फरजी निकला.

अपाचे बाइक पर रौयल एनफील्ड बुलेट का नंबर था. यह बाइक पटना के एक व्यक्ति के नाम पंजीकृत थी. पुलिस ने अनुमान लगाया कि यह बाइक बदमाशों के उन साथियों की हो सकती है, जो वारदात में लाइनर बन कर सहयोग कर रहे थे.

दिनदहाड़े 5 करोड़ की ज्वैलरी की लूट की वारदात को ले कर सर्राफा व्यापारियों में भारी आक्रोश था. पाटलिपुत्र सर्राफा संघ व अन्य व्यावसायिक संगठनों ने बिहार में आए दिन हो रही इस तरह की लूट की वारदातों के खिलाफ राज्यव्यापी अनिश्चित कालीन हड़ताल पर जाने की चेतावनी दी.

## पुलिस पहुंची गर्लफ्रैंड तक

तीसरे दिन भी पटना पुलिस, सीआईडी और एसटीएफ अपने तरीके से जांचपड़ताल और कई जिलों में छापेमारी कर बदमाशों का सुराग लगाने में जुटी रही, लेकिन इस का कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया. पुलिस ने बेउर जेल में बंद सोना लूटने वाले गिरोह के सरगना सुबोध सिंह से भी कई घंटों तक पूछताछ की. सुबोध से पूछताछ के बाद पुलिस ने बेउर जेल से पिछले दिनों छूटे 3-4 कुख्यात बदमाशों को संदिग्ध मानते हुए उन की तलाश शुरू की.

पुलिस ने 3 दिन में एक अपाचे बाइक के अलावा एक स्कौर्पियो और एक आई20 कार

मुख्य आरोपी रवि प्रशांत

लावारिस हालत में बरामद की. इन वाहनों के नंबरों और चेसिस नंबरों के आधार पर भी पुलिस जांच करती रही. इस में अपाचे बाइक का वारदात में उपयोग होने की ज्यादा आशंका जताई गई.

चौथे दिन पुलिस को इस तरह की वारदात करने वाले एक कुख्यात बदमाश की गर्लफ्रैंड के बारे में पता चला. पुलिस ने दीघा इलाके में रहने वाली इस युवती से पूछताछ की. इस से पुलिस को कई अहम जानकारियां मिलीं. यह भी तय हो गया कि वारदात करने वाले कुछ बदमाश पटना सिटी और फुलवारी शरीफ के रहने वाले हैं.

पुलिस की कुछ टीमों ने इन बदमाशों पर फोकस कर दिया और उन की तलाश में जुट गईं. दूसरी तरफ एसटीएफ की टीमें नेपाल की सीमाओं, कोलकाता और ओडिशा में बदमाशों की तलाश करती रहीं.

एसटीएफ ने लूटे गए सोने की डीलिंग नेपाल के कसीनो में होने की आशंका में नेपाल पुलिस से भी सहयोग लिया. इस का कारण यह था कि सोना लूट के कुख्यात सरगना सुबोध सिंह का पुलिस मुठभेड़ में मारा गया साथी मनीष सिंह कुछ पार्टनरों के साथ नेपाल में कसीनो भी चलाता था.

पांचवें और छठे दिन भी पुलिस दावा करती रही कि बदमाशों की पहचान कर ली गई है, उन की तलाश में छापेमारी की जा रही है. लेकिन तमाम प्रयासों के बावजूद बदमाश पुलिस की पकड़ से दूर थे. उन का कोई अतापता नहीं मिल रहा था. पुलिस इस तरह की वारदात करने वाले 2-3 गिरोह के बदमाशों को ढूंढने में जुटी हुई थी.

इस बीच, 6 दिन से बंद रहे पंचवटी रत्नालय शोरूम की 27 जून को री-ओपनिंग की गई. शोरूम मालिक रत्नेश शर्मा ने अपने पुराने ग्राहकों, दोस्तों व रिश्तेदारों को बुलाया था. शोरूम को सजाया गया. ग्राहकों के आने से शोरूम में फिर से व्यापार शुरू कर दिया गया. पुलिस ने सुरक्षा के लिहाज से शोरूम पर 2 जवान तैनात कर दिए.

एक कुख्यात बदमाश की गर्लफ्रैंड से लगातार कई दिन की गई पूछताछ से 28 जून को पुलिस को भरोसा हो गया कि वारदात रवि गुप्ता और उस के गिरोह ने की है. पुलिस की ओर से बनवाए गए स्कैच भी रवि की शक्ल से मिलान कर रहे थे. सीसीटीवी फुटेज में भी रवि की तसवीर कुछ जगह नजर आई थी. पुलिस ने रवि के साथ वारदात करने वाले कुछ अपराधियों को सीसीटीवी फुटेज और स्कैच दिखाए तो उस की पुष्टि भी हो गई.

## आखिर मिल गई सफलता

इस के बाद पुलिस ने रवि गुप्ता उर्फ नेताजी उर्फ रवि पेशेंट उर्फ मास्टरजी के साथ उस के गिरोह को तलाशने में अपनी सारी ऊर्जा लगा दी. रवि अपने ठिकानों पर नहीं मिला. वह अपनी गर्लफ्रैंड से भी काफी समय से नहीं मिला था. उस के मोबाइल व वाट्सऐप वगैरह भी बंद मिले. पुलिस लगातार जुटी रही. अंततः उस की मेहनत का परिणाम सामने आ गया.

पंचवटी रत्नालय में हुई डकैती के मामले में पुलिस ने पहली जुलाई को रवि गुप्ता उर्फ रवि पेशेंट के अलावा उस के 2 साथी बदमाशों विकास कुमार और सिपू कुमार को गिरफ्तार कर लिया. एडीजी ( मुख्यालय ) जितेंद्र कुमार, डीआईजी राजेश कुमार और एसएसपी गरिमा मलिक ने पटना स्थित पुलिस मुख्यालय में प्रैस कौन्फ्रैंस कर वारदात का खुलासा कर दिया.

पुलिस अफसरों ने बताया कि उन के पास सूचना थी कि रवि गुप्ता और उस के गुर्गे दीघा थाना क्षेत्र के कुर्जी बालू में आएंगे. इस सूचना पर घेराबंदी और छापेमारी कर के रवि, विकास और सिपू को पकड़ लिया गया. जबकि इन के कुछ साथी बदमाश भाग गए.

पुलिस ने पूछताछ के बाद इन बदमाशों की निशानदेही पर कुर्जी बालू के विकास नगर में सिपू के ठिकाने से करीब एक करोड़

Vikas Bharati

Vikas Bhadu

बिहार की सब से बड़ी ज्वैलरी लूट का खुलासा होने पर प्रैस कौन्फ्रैंस करते पुसिस अधिकारी

11 लाख रुपए के सोनेचांदी के आभूषण बरामद किए. बदमाशों से करीब एक लाख रुपए के रत्न, 6 लाख 30 हजार रुपए नकद, एक बाइक, एक बैग, 3 देसी पिस्तौल और 7 कारतूस भी बरामद किए.

डकैत गिरोह के सरगना रवि गुप्ता उर्फ रवि पेशेंट पर डकैती, हत्या, लूट आदि के 17 मामले दर्ज थे. वह पटना में आलमगंज थाना इलाके के मछुआ टोली में रहता है. दूसरे बदमाश विकास कुमार पर डकैती, लूट, आर्म्स एक्ट व अन्य गंभीर अपराधों के 19 मुकदमे चल रहे थे. वह पटना के आलमगंज में माली गायघाट दक्षिणी गली का रहने वाला था.

तीसरे बदमाश सिपू कुमार के खिलाफ पुलिस रिकौर्ड में लूट का केवल एक मामला दर्ज था. वह मूलरूप से सारण का रहने वाला था और फिलहाल पटना के दीघा इलाके में कुर्जी बालू के विकास नगर में रहता था.

पुलिस की ओर से गिरफ्तार तीनों बदमाशों से की गई पूछताछ में रवि गुप्ता के कुख्यात अपराधी बनने और पंचवटी रत्नालय में डकैती डालने की जो कहानी सामने आई, वह इस प्रकार है—

रवि मूलरूप से अररिया के जोगबन का रहने वाला था. उस के पिता हिंदू और मां मुसलिम थी. रवि के जवान होने से पहले ही उस के मातापिता की हत्या हो गई थी. इस के बाद वह अररिया के अपराधियों के संपर्क में आया और छोटेमोटे अपराध करने लगा. बाद में वह पटना आ गया. पटना आ कर वह राजधानी और अन्य जिलों में बड़ी वारदातें करने लगा.

दिनदहाड़े डकैती डालना और विरोध करने पर गोलियां चलाना उस की फितरत थी. वह पटना से ले कर पूरे बिहार, झारखंड, ओडिशा और कोलकाता तक वारदातें करता था. इन सभी राज्यों के कुख्यात अपराधी उस के संपर्क में रहते थे.

वह अलगअलग वारदातों में दूसरे राज्यों के बदमाशों को शामिल करता था, ताकि पुलिस उन को पहचान न सके. आपराधिक वारदातों के बाद वह इन्हीं बदमाशों के जरिए दूसरे राज्यों में छिप जाता था.

रवि कई बार जेल जा चुका था. सन 2010 में उसे पटना की आलमगंज थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया था. बाद में उसे जेल भेज दिया गया. जमानत पर छूटने के बाद वह फिर से एक अन्य आपराधिक मामले में जेल चला गया. सन 2017 में वह जेल से बाहर आया था. इस के बाद से वह फरार था. पुलिस उसे कई वारदातों में तलाश रही थी.

कुख्यात लुटेरा होने के साथ रवि अव्वल दरजे का अय्याश भी था. जेल से बाहर होने पर उस की अधिकांश रातें महंगे होटलों में अय्याशी करते हुए बीतती थीं. उस की एक गर्लफ्रैंड पटना सिटी में दीघा इलाके में रहती थी.

## गर्लफ्रैंड के माध्यम से मिली सफलता

पुलिस ने इस युवती से पूछताछ की, तो पता चला कि रवि ने पिछले कई महीनों से कोई बड़ी वारदात नहीं की. इसलिए वह पैसे की तंगी से गुजर रहा था. वारदात के बाद रवि का अपनी गर्लफ्रैंड से संपर्क बना हुआ था. इसी से पुलिस को रवि का सुराग मिला था.

वारदात से करीब एक महीने पहले रवि ने पटना में ही बड़ी वारदात की योजना बनाई. इस के लिए उस ने राजधानी की करीब 10 ज्वैलरी शोरूमों की रैकी की. कई बार की रैकी के बाद उस ने पंचवटी रत्नालय को अपना निशाना बनाने का फैसला किया. यह बात रवि की गर्लफ्रैंड को पता थी.

वारदात में किनकिन बदमाशों को शामिल करना है, यह भी रवि ने तय कर लिया. इस में अधिकांश बदमाश धनबाद और झारखंड के थे. वारदात के लिए हथियार और गाड़ियों की व्यवस्था भी रवि ने ही की थी. वारदात से पहले सभी बदमाश दीघा के कुर्जी इलाके में एकत्र हुए. वहां रवि ने सभी बदमाशों को पूरी प्लानिंग समझाई. पंचवटी रत्नालय पहुंचने और वहां से फरार होने का रास्ता भी बताया.

रवि की अगुवाई में कुल 10 बदमाशों की ओर से की गई इस वारदात में एक कार और 3 बाइकों का उपयोग किया गया. वारदात के बाद रवि व सिपू के साथ 2 अन्य बदमाश कार में बैठ कर फरार हुए. बाकी 6 बदमाश बाइकों से भागे. फरार होने के तुरंत बाद रवि ने कार में बैठेबैठे ही उन के पास मौजूद लूट के आभूषणों और नकदी का बंटवारा कर दिया.

कुछ किलोमीटर चलने के बाद बदमाश अलगअलग दिशाओं में बंट गए. जेपी सेतु पार कर रवि, सिपू और 2 अन्य बदमाश कार से छपरा की ओर भाग गए, जबकि बाइक पर सवार बदमाश रूपस नहर के सहारे खगोल स्टेशन की ओर चले गए. बाद में रवि और विकास धनबाद चले गए और सिपू अपने पैतृक गांव सारण चला गया. रवि बाद में गिरिडीह और कोलकाता भी गया था.

रवि ने अपने पास जो आभूषण रखे थे, उन में से कुछ गहने उस ने 20 लाख रुपए में एक दुकानदार को बेच दिए थे. रवि से बरामद 6 लाख 30 हजार रुपए उसी रकम में से बचे हुए थे. बाकी रकम रवि ने खर्च कर दी थी. रवि ने पुलिस को बताया कि लूट के बाकी जेवरात दूसरे फरार बदमाशों के पास हैं.

गिरफ्तार बदमाशों से पूछताछ में पुलिस को पता चला कि वारदात में शामिल रहे 4 बदमाश झारखंड के धनबाद व बोकारो के रहने वाले हैं, जबकि सारण के 2 और पटना का एक अन्य बदमाश भी पंचवटी रत्नालय की डकैती में शामिल था. कथा लिखे जाने तक ये सातों बदमाश फरार थे. पुलिस इन की तलाश कर रही थी. अभी करीब 4 करोड़ रुपए के जेवरात बरामद नहीं हुए हैं. ●

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

# असंभव के पार झांकने की भूल

❑ शैलेंद्र सिंह

देश में आज भी 90 प्रतिशत ऐसे गांव हैं, जिन में गांव के लड़के और लड़की की शादी नहीं होती, भले ही दोनों सजातीय हों. इस के बावजूद प्यार के नाम पर एक ही गांव के कई लड़केलड़कियां शादी का सपना संजो बैठते हैं. निस्संदेह ऐसे प्यार का अंजाम ठीक नहीं होता. यतीश और नेहा के साथ भी...

24 जून, 2019 की बात है. लखनऊ के शेरपुर लवल गांव में सुबह 6 बजे रोज की तरह प्रभातफेरी निकल रही थी. प्रभातफेरी जब गांव में ही रहने वाले शिवप्रसाद के घर से 100 मीटर दूर पहुंची तो सड़क किनारे पीपल के पेड़ के नीचे एक लड़के का नंगा शव पड़ा दिखाई दिया. शव को देखने से लग रहा था कि किसी ने धारदार हथियार से उस की हत्या की है.

प्रभातफेरी में जगदीश भी शामिल था. जगदीश जैसे ही लाश के पास गया, तो चिल्लाने लगा कि यह तो मेरा भतीजा यतीश है. इस का यह हाल किस ने कर दिया. लाश की शिनाख्त जगदीश ने अपने भतीजे यतीश के रूप में की.

उस ने इस बात की सूचना अपने भाई शिवप्रसाद और परिवार के अन्य लोगों को दे दी. घटना का पता चलते ही पूरे गांव में कोहराम मच गया. गांव के लोग घटनास्थल की तरफ भागे. यतीश का शव देख कर सभी लोग सन्न रह गए.

24 वर्षीय यतीश की मां सरला उस के शव से लिपट कर रोने लगी. गांव की महिलाएं और दूसरे लोग उसे ढांढस बंधा रहे थे. वह

बारबार दहाड़ें मार कर रोतेरोते बेहोश हो रही थी.

घटना की जानकारी लखनऊ जनपद के निगोहा थाने को दी गई. शेरपुर लवल गांव इसी थाने के तहत आता था. निगोहा लखनऊ जिले का अंतिम थाना है. इस के बाद रायबरेली जिला शुरू हो जाता है. पुलिस ने यतीश की नंगी लाश देखने और गांव वालों से बात करने के बाद अनुमान लगाया कि उस की हत्या की वजह अवैध संबंध हो सकते हैं

इंसपेक्टर निगोहां जगदीश पांडेय ने लखनऊ के एसएसपी कलानिधि नैथानी को घटना के बारे में बताया. एसएसपी कलानिधि नैथानी ने एसपी (क्राइम) सर्वेश कुमार मिश्रा और सीओ (मोहनलालगंज) राजकुमार शुक्ला को मौके पर जा कर घटना की तहकीकात और खुलासा करने को कहा.

पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया, तो पता चला कि मृतक यतीश पर किसी धारदार हथियार से वार किए गए थे. मौके पर काफी मात्रा में खून फैला हुआ था. लाश के मुआयने में लगा कि हत्यारे एक से अधिक रहे होंगे.

वहां मौजूद मृतक की मां सरला ने पुलिस को बताया कि यतीश कल रात अपने दोस्तों के साथ गांव के बाहर मोबाइल फोन पर गेम खेलने की बात कह कर आया था. मैं ने इसे मना भी किया पर यह नहीं माना. यह जानकारी मिलने के बाद पुलिस को यह पता लगाना था कि यतीश किन दोस्तों के साथ आया था. पुलिस ने मौके की काररवाई निपटा कर लाश पोस्टमार्टम के लिए भेज दी.

## जांच में सामने आया नेहा का नाम

एसएसपी ने इस केस को सुलझाने के लिए एक पुलिस टीम बनाई. इसी दौरान पुलिस टीम को मुखबिर से पता चला कि मृतक के गांव की ही नेहा से प्रेम संबंध थे. इस सूचना में पुलिस को दम नजर आया, क्योंकि जिस तरह से यतीश की नंगी लाश मिली थी, उस से हत्या की यही वजह नजर आ रही थी.

टीम ने यतीश के फोन की काल डिटेल्स निकलवाई तो उस में एक नंबर ऐसा मिल गया, जिस पर यतीश काफी देर तक बातें करता था. वह फोन नंबर नेहा का ही निकला.

इस के बाद पुलिस को यकीन हो गया कि यतीश की हत्या के तार जरूर नेहा से जुड़े हैं. इसलिए पुलिस टीम नेहा के घर पहुंच गई. पुलिस नेहा और उस के भाई को पूछताछ के लिए थाने ले आई. पूछताछ करने पर नेहा ने यह तो कबूल कर लिया कि यतीश के साथ उस के प्रेम संबंध थे लेकिन उस के अनुसार, हत्या के बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी.

सख्ती से पूछताछ करने पर नेहा के भाई शिवशंकर ने स्वीकार कर लिया कि यतीश ने उस के घर वालों का जीना हराम कर दिया था. इसीलिए उसे ठिकाने लगाने के पर मजबूर होना पड़ा. शिवशंकर ने यतीश की हत्या की जो कहानी बताई वह इस प्रकार थी—

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 40 किलोमीटर दूर एक गांव है शेरपुर लवल. यहां की आबादी मिलीजुली है. ज्यादातर परिवार खेतीकिसानी पर निर्भर हैं. इन्हीं लोगों में शिवप्रसाद तिवारी का भी परिवार था.

यतीश तिवारी शिवप्रसाद का ही बेटा था. यतीश 2 भाई थे. मनीष बड़ा था और यतीश छोटा. मनीष होमगार्ड की नौकरी करता है. उस की ड्यूटी लखनऊ सचिवालय में लगी थी. मनीष अपने परिवार के साथ लखनऊ के पास ही तेलीबाग में रहता था. यतीश की एक बहन है प्रीति, जिस की शादी हो चुकी है. यतीश अकेला अपने मातापिता के साथ रहता था. मां सरला देवी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता है.

यतीश भारतीय सेना में शामिल हो कर देश की सेवा करना चाहता था. इस के लिए वह अपनी तैयारी भी कर रहा था. वह रोजाना


यतीश: आशिकी में गंवाई जान

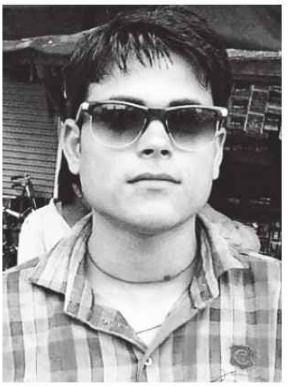

गांव के बाहर दौड़ लगाता था और एक्सरसाइज भी करता था. शारीरिक रूप से फिट 24 साल के यतीश ने कई प्रतियोगी परीक्षाएं पास की थीं. लेकिन फिजिकल टेस्ट में वह रह जाता था.

यतीश अपनी मां से कहता था कि अगर मैं आर्मी में नहीं जा पाया तो दूसरी फोर्स या पुलिस में तो मेरा चयन हो ही जाएगा. मां को भी बेटे की बात पर यकीन था. मां ही नहीं गांव और घर के दूसरे लोग भी यही मान रहे थे. यही वजह थी कि बिना नौकरी किए भी यतीश के रिश्ते आने लगे थे.

लेकिन यतीश अभी शादी नहीं करना चाहता था. उस ने मां से कहा, ''मां शादी की अभी क्या जल्दी है, नौकरी लगने दो फिर शादी कर लूंगा.''

''शादी के लायक उम्र हो गई है. तू ही बता, अभी नहीं तो कब होगी तेरी शादी? तुझे पता नहीं है गांव के लोग तमाम तरह की बातें करते हैं. ऐसे में उन को भी कहने का मौका नहीं मिलेगा.

''जिस जगह से रिश्ता आया है वहां लड़की और घरपरिवार सभी अच्छा है. कई बार लड़की की किस्मत अच्छी होती है तो पति की नौकरी जल्दी लग जाती है.'' मां ने यतीश को समझाया तो वह भी मां की बात टाल नहीं सका. इस के बाद मांबाप ने यतीश की शादी तय कर दी.

सख्ती से पूछताछ करने पर नेहा के भाई शिवशंकर ने स्वीकार कर लिया कि यतीश ने उस के घर वालों का जीना हराम कर दिया था. इसीलिए उसे ठिकाने लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा.

Vikas Bhadu

प्रैस कौन्फ्रैंस करते एसएसपी कलानिधि नैथानी

उस की शादी हैदरगढ़ के रहने वाले एक परिवार में तय हो गई. शादी और तिलक की तारीख भी तय हो गई थीं. इसी साल यानी 2019 में ही 22 नवंबर को तिलक और 28 नवंबर को उस की बारात जानी थी.

दूसरी ओर यतीश का चक्कर गांव की ही नेहा से चल रहा था. वह नेहा के साथ शादी करना चाहता था. नेहा के पिता मिस्त्री का काम करते थे. नेहा और यतीश अलगअलग बिरादरी के थे. इसलिए दोनों परिवारों के बीच शादी विवाह की बात किसी भी हालत में संभव नहीं था. यतीश और नेहा के बीच लंबे समय से संबंध थे. यह बात नेहा के घर वालों को भी पता चल गई थी.

उन्होंने नेहा को समझाया लेकिन वह प्रेमी को किसी भी हालत में नहीं छोड़ना चाहती थी. नेहा के मातापिता और परिवार के लोग इस बात का विरोध कर रहे थे. इस के बाद भी यतीश और नेहा मानने को तैयार नहीं थे.

जब नेहा और यतीश का मिलनाजुलना बंद नहीं हुआ तो नेहा के पिता शिवप्रसाद ने अपने परिवार को गांव से दूर पीजीआई अस्पताल के पास वेदावन कालोनी में किराए का घर ले कर दे दिया. पूरा परिवार किराए के उसी मकान में रहने लगा. लेकिन वहां जाने के बाद भी यतीश ने नेहा से मिलना नहीं छोड़ा.

शिवप्रसाद को यह बात पता चल गई थी कि नेहा और यतीश अब भी छिपछिप कर मिलते हैं. लिहाजा उस ने अपने बेटे शिवशंकर से कहा कि यतीश की हरकतें बढ़ती जा रही हैं. गांव छोड़ने के बाद भी वह नेहा का पीछा नहीं छोड़ रहा है. अब उसे सबक सिखाना ही पड़ेगा.

''हम तो पहले ही कह रहे थे कि गांव छोड़ने से कुछ नहीं होगा. लेकिन आप ही नहीं माने. अब जो भी करना है, जल्दी करो. कहीं ऐसा न हो कि वह कोई दूसरा कदम उठा ले.'' बेटे शिवशंकर ने कहा.

इस के बाद दोनों ने तय कर लिया कि यतीश को रास्ते से हटाना है. शिवप्रसाद और उस के बेटे शिवशंकर ने मिल कर यतीश की हत्या की योजना बना ली. शिवशंकर ने इस के लिए गांव में रहने वाले अपने दोस्त हनुमान को भी अपनी योजना में शामिल कर लिया.

हनुमान ने सतीश पर नजर रखनी शुरू कर दी ताकि काम आसानी से हो सके. यतीश की दिनचर्या से पता चला कि रात को वह गांव के बाहर पीपल के पेड़ के पास चबूतरे पर बैठ कर मोबाइल फोन पर पबजी गेम खेलता है. यह पूरी जानकारी हनुमान ने शिवशंकर को दे दी. इस के बाद शिवशंकर, शिवप्रसाद और हनुमान ने अपनी योजना को अंजाम देने की तैयारी कर ली.

शिवप्रसाद और उस के बेटे शिवशंकर ने मिल कर यतीश की हत्या की योजना बना ली. शिवशंकर ने इस के लिए गांव में रहने वाले अपने दोस्त हनुमान को भी अपनी योजना में शामिल कर लिया.

23 जून को गांव में किसी की तेरहवीं का भोज था. शिवप्रसाद और शिवशंकर भोज में शामिल होने के लिए घर से निकले. वहां जाने से पहले दोनों ने हनुमान के साथ शराब पी, फिर खाना खाया. रात करीब एक बजे तीनों गांव के बाहर उस चबूतरे के पास पहुंच गए जहां पर यतीश मोबाइल के स्क्रीन पर नजरें जमाए बड़े ध्यान से गेम खेल रहा था.

शिवप्रसाद और हनुमान ने यतीश को पीछे से दबोच लिया. उस का मुंह दबा कर वे लोग उसे वहीं स्थित पुलिया के नीचे ले गए. इस के बाद शिवशंकर ने साथ लाए चापड़ से उस के गले और सिर पर कई वार किए. कुछ ही देर में वह मर गया. उस की हत्या करने के बाद इन लोगों ने उस के कपड़े उतार कर सड़क के किनारे फेंक दिया. यतीश के कपड़ों में तो खून लगा ही था. पुलिया के दोनों किनारों पर भी खून के छींटे गिर गए थे. शिवशंकर से पूछताछ करने के बाद पुलिस ने उस के दोस्त हनुमान को भी गिरफ्तार कर लिया, जबकि नेहा को छोड़ दिया गया.



इंसपेक्टर जगदीश पांडेय

शिवशंकर की निशानदेही पर पुलिस ने उस के घर से हत्या में प्रयुक्त चापड़ और यतीश के खून सने कपड़े बरामद कर लिए. पुलिस ने दोनों आरोपियों शिवशंकर और हनुमान को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया. कहानी लिखे जाने तक शिवप्रसाद की तलाश जारी थी. साफ जाहिर है कि अपराध छिपाने की कितनी भी कोशिश की जाए, अपराध छिपता नहीं है. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित. कथा में नेहा परिवर्तित नाम है.

बेंगलुरु, कर्नाटक

# इसलाम के नाम पर 4 हजार करोड़ की ठगी

❑ शैलेंद्र कुमार 'शैल'

पोंजी स्कीम द्वारा आईएमए और उस की सहयोगी कंपनियों में हजारों मुसलिम निवेशकों के 4 हजार करोड़ रुपए जमा करा कर फरार हो गया था मोहम्मद मंसूर खान

पिछले कई दशकों से पोंजी स्कीमों में करोड़ोंकरोड़ों की ठगी हुई हैं, लेकिन सच कुछ जाननेसमझने के बाद भी लोग फंस जाते हैं. मंसूर खान ने केवल मुसलिम समाज को टारगेट बना कर करीब 4000 करोड़ की ठगी की और...

Vikas Bhadu

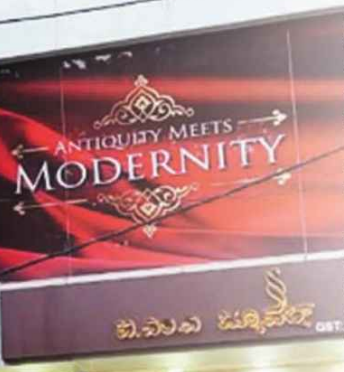


बेंगलुरु की आई मोनेटरी एडवाइजरी (आईएमए) का मैनेजिंग डायरेक्टर मोहम्मद मंसूर खान नोटों के बिस्तर पर सोने वाला इंसान था उस ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि उस के सामने एक दिन ऐसा भी आएगा, जब सारे सुख त्याग कर किसी गुमनाम सी गली में मुंह छिपा कर जीने के लिए मजबूर हो जाएगा और लोग उसे भगोड़े की संज्ञा से नवाजेंगे.

45 वर्षीय मोहम्मद मंसूर खान बेंगलुरु के शिवाजीनगर का रहने वाला था. उस ने सन 2006 में बेंगलुरु के शिवाजीनगर में 6 निदेशकों नासिर हुसैन, नाविद अहमद, निजामुद्दीन अजीमुद्दीन, अफसाना तबस्सुम, अफसर पाशा और अरशद खान के साथ मिल कर आई मोनेटरी एडवाइजरी के नाम से एक इसलामिक बैंक की नींव डाली थी.

इसलामिक बैंक की नींव डालने के पीछे उस का मकसद था कि इस बैंक में मुसलिम समाज का ही पैसा जमा हो.

इस के लिए उस ने ऐसे लोगों को टारगेट कर के एक पोंजी स्कीम चलाई कि अगर वह उस की आईएमए कंपनी में पैसा निवेश करेंगे तो कंपनी उन्हें मूल धन के साथ हर महीने ढाई से 3 प्रतिशत और साल में 14 से 18 प्रतिशत का मुनाफा देगी.

वे खुद भी कंपनी के मालिक होंगे और उन की कंपनी में अच्छी हिस्सेदारी होगी, उस ने इस स्कीम को ब्याजमुक्त हलाल निवेश का नाम दिया था.

आज भी मुसलिम समाज में अधिकांश लोग ऐसे हैं जो ब्याज को हराम समझते हैं. जो लोग सूद को हराम समझते थे, उन्हें लगा कि एक तरह से वह कंपनी के हिस्सेदार हैं, मालिक हैं और हिस्सेदारी भी अच्छी भली है. लिहाजा कर्नाटक राज्य में रहने वाले सिर्फ मुसलिम समुदाय के तमाम लोगों ने अपनी बड़ीबड़ी रकम मोहम्मद मंसूर खान की आईएमए कंपनी में निवेश करनी शुरू कर दी.

समय आने पर कंपनी ने अपने निवेशकों को वादे के अनुसार मुनाफे के साथ पैसे लौटाए. इस से कंपनी के प्रति निवेशकों का भरोसा बढ़ गया और कंपनी में रकम जमा करने वालों की संख्या भी बढ़ गई. 4-5 साल के भीतर कंपनी में निवेशकों की संख्या करीब 40 हजार हो गई थी.

आईएमए कंपनी में पैसे जमा होने के बाद मैनेजिंग डायरेक्टर मोहम्मद मंसूर खान और उस के निदेशकों ने कंपनी का विस्तार किया. इन लोगों ने इसलामिक बैंक के साथसाथ अच्छा मुनाफा कमाने के लिए कई और कंपनियों की बुनियाद डाल दी थी.

इन नई कंपनियों के नाम थे आई मोनेटरी एडवाइजरी प्राइवेट लिमिटेड, आईएमएम दबाब सेंटर, आईएमए बिल्डर्स ऐंड डेलवपर्स, आईएमए बुलियन ऐंड ट्रेडिंग सर्विस

लिमिटेड, आईएमए बुलियन ऐंड ट्रेडिंग एलएलपी, आईएमए इंस्टीट्यूट औफ एजुकेशन, आईएमए ओमन इनवायरमेंट बिजनैस माड्यूल, आईएमए डब्ल्यू ज्वैलरी और आईएमए काउंसलिंग चैरिटेबल सोसायटी. कंपनी का विस्तार होने के साथ साथ मोहम्मद मंसूर खान दोनों हाथों से धन बटोरने लगा.

Vikas Bhadu

वादे के मुताबिक कुछ सालों तक मंसूर खान निवेशकों को मासिक और वार्षिक मुनाफे देता रहा. धीरेधीरे यह रिटर्न गिर कर पहले 14 से 9 प्रतिशत पर आया, फिर 7 से 5 प्रतिशत तक आ गया. सन 2018 आतेआते रिटर्न सिर्फ 3 फीसदी ही रह गया.

इस साल फरवरी में जब रिटर्न घट कर 1 फीसदी रह गया तो निवेशकों के सब्र का बांध टूट गया. निवेशकों के दिमाग तब बिलकुल घूम गए जब मई, 2019 तक एक फीसदी रिटर्न भी खत्म हो गया.

निवेशकों को तगड़ा झटका मई, 2019 में तब लगा, जब उन्हें पता चला कि आईएमए का औफिस ही बंद हो गया है. निवेशकों ने जब इस मुद्दे पर बात की तो मंसूर खान ने निवेशकों को भरोसा दिलाया कि वे चिंता न करें, उन के रुपए सुरक्षित हैं.

मंसूर खान ने पहले तो कहा कि ईद के चलते औफिस बंद था, मगर जब लगातार विदड्रौल रिक्वेस्ट आने लगीं तो वह अंडरग्राउंड हो गया. मंसूर के अंडरग्राउंड होते ही निवेशकों में खलबली मच गई. अपने रुपयों को ले कर वे सड़क पर उतर आए.

तब और ज्यादा हैरानी हुई जब कंपनी पार्टनर और मंसूर खान के करीबी दोस्त खालिद अहमद ने 4 जून, 2019 को बेंगलुरु के कार्शियल स्ट्रीट थाने में मुकदमा दर्ज करा दिया. उन्होंने आईएमए के एमडी मंसूर पर 4 करोड़ 80 लाख रुपए की ठगी का आरोप लगाया था. खालिद अहमद की शिकायत पर भादंसं की धारा 406, 420 के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया.

मुकदमा दर्ज होने के बाद इस मामले ने तूल पकड़ लिया. बात कर्नाटक के डीजीपी नीलमणि राजू तक पहुंची तो उन के कान खड़े हो गए. मामला अमानत में खयानत से जुड़ा हुआ था, उन्होंने इसे काफी गंभीरता से लिया और एएसपी (क्राइम) आलोक कुमार को मामले की जांच कर के रिपोर्ट देने को कहा.

6 जून, 2019 को आलोक कुमार ने एमडी मंसूर खान को पूछताछ के लिए औफिस बुलाया. मंसूर खान आ गया तो एएसपी कुमार ने उस से उस के बिजनैस पार्टनर खालिद अहमद द्वारा दर्ज कराए गए मुकदमे की बाबत एक घंटे तक पूछताछ की.

पूछताछ के बाद उन्होंने मंसूर खान से कंपनी की बैलेंस शीट और अन्य दस्तावेज पेश करने को कहा. इस पर मंसूर खान ने कंपनी की बैलेंस शीट और अन्य दस्तावेज पेश करने के लिए 9 जून तक का समय मांगा. एएसपी आलोक कुमार ने उसे 3 दिन की मोहलत दे दी.

इसी बीच कहानी में एक नया मोड़ आ गया. 7 जून को मंसूर खान की एक औडियो क्लिप वायरल हुई. औडियो में खान ने कहा कि वह अधिकारियों की प्रताड़ना से आजिज आ कर आत्महत्या करने जा रहा है. उसे ढूंढने की कोशिश न की जाए. औडियो के वायरल होने के बाद उग्र लोगों ने आईएमए के औफिस पर हमला बोल दिया, लेकिन पुलिस ने किसी तरह स्थिति संभाल ली.

### देश से भागने की तैयारी पहले से ही थी

पुलिस मंसूर खान के वायरल औडियो की सच्चाई जानने में जुटी हुई थी कि 8 जून को एक और चौंकाने वाली बात पता चली तो पुलिस के पैरों तले से जमीन खिसक गई. पता चला कि मंसूर खान 8 जून की रात पौने 9 बजे की फ्लाइट से देश छोड़ कर दुबई चला गया.

छानबीन में जानकारी मिली कि उस ने प्रशासनिक अधिकारियों की मिलीभगत से शाम के पौने 7 बजे इमिग्रेशन क्लियर करा लिया था और रात पौने 9 बजे उस ने दुबई की फ्लाइट पकड़ ली.

एयरपोर्ट के सीसीटीवी कैमरे की जांच करने पर पता चला कि शाम के समय मोहम्मद मंसूर खान अपनी कार खुद चला कर एयरपोर्ट पहुंचा था. अपनी कार उस ने एयरपोर्ट के बाहर खड़ी कर दी और पुलिस की गिरफ्त से बचने के लिए देश छोड़ कर फरार हो गया.

उस के देश छोड़ कर फरार होते ही निवेशकों में बेचैनी छा गई. निवेशक अपने पैसों को ले कर बुरी तरह परेशान थे. परेशानी स्वाभाविक ही थी, क्योंकि निवेशक परेशान क्यों न हों? कंपनी में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना

## गिरफ्त में आया मंसूर खान

इसलाम में सूद को हराम माना जाता है, भले ही वह किसी भी माध्यम से आए. ज्यादातर मुसलमान इस बात को मानते भी हैं और अमल भी करते हैं. लेकिन ऐसा नहीं है कि मुसलिम समुदाय ज्यादा आय का पक्षधर न हो. हर कोई चाहता है कि उस की नियमित आय के अतिरिक्त भी आय का कोई साधन हो. हराम माने जाने वाले सूद के पैसे को अपने तरीके से हलाल बता कर हैदराबाद की डाक्टर नौहेरा शेख ने देशविदेश के मुसलिम निवेशकों से 3000 करोड़ रुपए की ठगी की थी.

भले ही नौहेरा पकड़ी गई हो, लेकिन निवेशकों की खूनपसीने की कमाई का पैसा तो मिलने से रहा. इसी तरह इसलामिक बैंक (आई मोनेटरी एडवाइजरी) के नाम पर 4000 करोड़ रुपए की ठगी करने वाला मंसूर खान पल्ला झाड़ कर 8 जून, 2019 को दुबई भाग गया था. जाने से पहले उस ने एक वीडियो जारी कर के सुसाइड करने की धमकी भी दी थी. उस के खिलाफ जांच कर रही एसआईटी और ईडी ने लुकआउट सरकुलर भी जारी किया था.

एसआईटी ने दुबई में अपने सूत्रों से उस का पता लगा कर उस से कहा कि वह भारत लौट आए और खुद को कानून के हवाले कर दे. गनीमत है कि इस चेतावनी पर 19 जुलाई को वह भारत लौट आया. अब एसआईटी और ईडी उस से पूछताछ भी करेंगी और उस की धोखाधड़ी की जांच भी.

और तमिलनाड़ के मुसलिम समाज के करीब 40 हजार निवेशकों ने कंपनी में पैसे जमा किए थे, जिस में 200 करोड़ रुपए तो सिर्फ मुसलिम महिलाओं द्वारा निवेश किए गए थे.

एमडी मोहम्मद मंसूर खान के फरार होते ही पुलिस सतर्क हो गई और अगले दिन यानी 9 जून को आईएमए के 6 अन्य डायरेक्टरों नासिर हुसैन, नाविद अहमद, निजामुद्दीन अजीमुद्दीन, अफसाना तबस्सुम, अफसर पाशा और अरशद खान को गिरफ्तार कर लिया. शिवाजीनगर स्थित मंसूर खान के आवास से उस की लग्जरी एसयूवी कार भी जब्त कर ली गई.

आईएमए के निदेशकों को पुलिस ने गिरफ्तार तो कर लिया लेकिन यह पता नहीं चल पा रहा था कि कंपनी ने लोगों को कितने का चूना लगाया है मोटे तौर पर 15 हजार करोड़ की ठगी का अनुमान लगाया जा रहा था. मंसूर खान के देश छोड़ कर फरार होते ही कर्नाटक सरकार की नींद टूटी.

सरकार ने मामले की जांच के लिए डीजीपी नीलमणि राजू को पत्र लिखा. मामले की जांच के लिए डीजीपी नीलमणि ने जांच के लिए 3 पुलिस टीमें बनाईं.

एक टीम थाना स्तर से बनाई गई, जहां बड़े पैमाने पर निवेशकों ने थाने में कंपनी के खिलाफ मुकदमे दर्ज कराए थे. दूसरी टीम 11 सदस्यों की एसआईटी का गठन कर बनाई गई. तीसरी जांच टीम प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की बनाई गई थी. गिरफ्तार सभी निदेशकों से पुलिस और अन्य जांच कमेटी ने अलगअलग पूछताछ की. पूछताछ के बाद कहानी कुछ इस तरह सामने आई—

थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने पहुंचीं महिला निवेशक

बेंगलुरु के शिवाजीनगर का रहने वाला मोहम्मद मंसूर खान एक पढ़ालिखा जहीन इंसान था. पढ़लिख कर वह अच्छी नौकरी करना चाहता था. इस के लिए उस ने कई जगह हाथपैर मारे, लेकिन तकदीर के मारे मंसूर खान को कहीं अच्छी नौकरी नहीं मिली. इस के बाद उस ने नौकरी के पीछे दौड़ना छोड़ दिया. वह सोचने लगा कि क्यों न कुछ ऐसा किया जाए, जिस से 2 पैसे उसे भी मिलें और दूसरों के घर के भी चूल्हे जलते रहें.

शातिर दिमाग के मंसूर खान ने जल्द ही इस का भी उपाय ढूंढ लिया. उस ने एक ऐसा बैंक स्थापित करने की योजना बनाई जिस में सिर्फ मुसलिम समाज का ही पैसा निवेश हो और उन्हें ब्याज भी न देना पड़े.

मंसूर खान ने योजना बनाई ही नहीं बल्कि सन 2006 में उसे धरातल पर भी उतार लिया. चूंकि इसलाम में ब्याज से मिली रकम को अनैतिक और इसलाम विरोधी माना जाता है. इस धारणा को तोड़ने के लिए मंसूर ने धर्म का कार्ड खेला और निवेशकों को बिजनैस पार्टनर का दरजा दिया.

साथ ही उन्हें भरोसा दिलाया कि 50 हजार के निवेश पर उन्हें मासिक ढाई से 3 प्रतिशत और वार्षिक 14 से 18 प्रतिशत रिटर्न दिया जाएगा. इस तरह वह मुसलमानों के बीच 'ब्याज हराम है' वाली धारणा तोड़ने में कामयाब रहा. अपनी स्कीम को आम मुसलमानों तक पहुंचाने के लिए उस ने स्थानीय मौलवियों और मुसलिम नेताओं को साथ लिया. सार्वजनिक तौर पर मंसूर खान और उस के कर्मचारी हमेशा साधारण कपड़ों में ही दिखते लंबी दाढ़ी रखते और औफिस में ही नमाज पढ़ते.

नियमित तौर पर ये लोग मदरसों और मसजिदों में दान दिया करते थे. निवेश करने वाले हर मुसलिम को कुरान भेंट की जाती थी. शुरुआत में निवेश के बदले रिटर्न आते और निवेशकों को बड़े चैक दिए जाते, जिस से उस की योजना का और ज्यादा प्रचार हुआ.

योजना के प्रचार और निवेशकों को मिले मुनाफे से मुसलिम समाज को भरोसा हो गया कि यह इसलामिक बैंक भरोसे का बैंक है. यहां जमापूंजी सुरक्षित है. मंसूर खान योजना को पोंजी स्कीम के तहत चला रहा था. पोंजी स्कीम क्या है, जरा इस पर भी एक नजर डालते हैं.

## पोंजी स्कीम या धोखाधड़ी का यह सिलसिला हालफिलहाल से नहीं, बल्कि सालों से चलता आ रहा है. पोंजी स्कीम का जन्म इटली में जन्मे चार्ल्स पोंजी नाम के शख्स से हुआ है, जिस ने इटली, कनाडा और अमेरिका में अपने धोखेबाजी के धंधे की बुनियाद रखी थी. तब से ये निरंतर अग्रसर है.

पोंजी स्कीम किसी कंपनी द्वारा नियोजित होती है, जिन में लोगों को अपने पैसे उस योजना में निवेश करने होते हैं. उस के बाद उन्हें और भी लोगों को उस कंपनी से जोड़ना होता है, जिस के बदले उन्हें अतिरिक्त लाभ दिया जाता है.

पोंजी स्कीम में रिटर्न कई गुना ज्यादा और 100 फीसदी नो रिस्क के दावे पर मिलता है. ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नए जुड़े मेंबर का पैसा पुराने जुड़े मेंबर के पास जाता है और यह सिलसिला चलता रहता है. जनता कम समय में ज्यादा मुनाफा कमाने के चक्कर में धोखे का शिकार बनती रहती है.

### रिजर्व बैंक औफ इंडिया ने कर्नाटक सरकार को किया था सचेत

मंसूर खान भले ही कारपोरेट जगत में मंसूर खान की ठगी का बिजनैस जोरों पर चल रहा था. निवेशकों द्वारा जमा किए पैसों से मंसूर ने कंपनी का विस्तार किया और 7 अन्य नई कंपनियां बनाईं. जिन के नाम हम

शुरू में बता चुके हैं. नित नई ऊंचाइयों को छू रहा था, मगर वह यह भूल रहा था कि उस की निगरानी कोई और भी कर रहा है. भारतीय रिजर्व बैंक ने सन् 2015 की शुरुआत में और फिर 2018 में बेंगलुरु में सब से वांछित संदिग्ध आईएमए को धोखधड़ी के रूप में चिह्नित किया था.

इस के बाद रिजर्व बैंक ने इस ओर इशारा करते हुए कर्नाटक सरकार को अलर्ट किया था. आरबीआई ने सरकार को बताया था कि आईएमए निवेशकों से रुपए जमा करा कर सिर्फ पोंजी स्कीम के तहत योजना चला रही है.

आरबीआई के अलर्ट के बावजूद सरकार ने आईएमए के खिलाफ कोई ठोस काररवाई नहीं की. सरकार ने आरबीआई को दलील दी कि आईएमए कंपनी निवेशकों से रुपए डिपोजिट नहीं करा रहा. वह लिमिटेड लायबिलिटी पार्टनरशिप कंपनी है यानी डिपोजिट लेने के बजाए आईएमए निवेशकों को साझेदारी दे रहा है.

सरकार की यह दलील सुन कर आरबीआई चुप हो गई थी. बताया जाता है कि पैसों के बल पर मंसूर खान ने कर्नाटक सरकार में अपनी पैठ अंदर तक बना ली थी. उस के गुनाह न तो सरकार को दिख रहे थे और न ही उस की गूंज सुनाई दे रही थी. 3 सालों तक ऐसे ही चलता रहा. सरकार कान में तेल डाल कर सो गई थी.

आरबीआई ने सन 2018 में कर्नाटक सरकार को एक बार फिर चेतावनी भेजी. इस बार भी सरकार को अलर्ट किया गया कि कंपनी निवेशकों से अवैध तरीके से पैसे डिपोजिट करा रही है और निवेशकों को उन के लाभांश देने में असफल है. आरबीआई के अलर्ट के बाद इस बार सरकार नींद से जागी.

सरकार ने राजस्व विभाग के असिस्टेंट कमिश्नर को इस की जांच के लिए नियुक्त किया. असिस्टेंट कमिश्नर ने जब जांच की तो उस में बड़ा झोल पाया यानी आरबीआई द्वारा दी गई सूचना सच साबित हुई.

असिस्टेंट कमिश्नर ने इस मामले को गंभीरता से ले कर कई कठोर फैसले लिए. उन्होंने 16 नवंबर, 2018 को आईएमए के

प्रवर्तन निदेशालय द्वारा जब्त की गई मंसूर खान की लग्जरी कारें

खिलाफ एक पब्लिक नोटिस सार्वजनिक किया.

नोटिस में उल्लेख किया, 'सरकार के संज्ञान में आया है कि मेसर्स आई मोनेटरी एडवाइजरी प्राइवेट लिमिटेड और उस की सहयोगी कंपनियों ने अवैध रूप से जनता से पैसे वसूल किए हैं और उस धनराशि को अपने स्वयं के हित में लगाया है, जिस से भुगतान में चूक हुई है. जमाकर्ताओं के पैसे शीघ्र वापस करने के प्रबंध करें.' इस के बाद उन्होंने धोखाधड़ी करने वाले सातों निदेशकों के नाम सूचीबद्ध किए.

धीरेधीरे मंसूर खान के मंसूबे सामने आने लगे थे. उस ने कंपनी में जनता की निवेश रकम लौटाने का इरादा त्याग दिया था. दरअसल, इस के पीछे एक खास वजह सामने आई थी. केंद्र में भाजपा सरकार आने के बाद सरकार ने सन 2016 में अचानक नोटबंदी का फैसला लिया और रातोंरात पुराने नोट बंद कर दिए.

सरकार के इस निर्णय से कालाधन रखने वालों की कमर टूट गई. मंसूर भी इस का शिकार हुआ था. उसी साल सरकार ने जीएसटी भी लागू कर दिया था. जीएसटी की वजह से उस की पोंजी स्कीम भी चरमरा कर रह गई. उस के जनता से किए रिटर्न के वादे धराशाई हो गए तो निवेशकों के सब्र का बांध टूट गया.

बताते हैं कि बेंगलुरु के मैसूर रोड के ओल्ड गुड्डलाहल्ली के रहने वाले 55 वर्षीय अब्दुल पाशा ने कंपनी में 8 लाख रुपए का निवेश किया था. उन की 3 बेटियां और एक बेटा था. जुलाई, 2019 में उन की बेटी की शादी होनी थी. इस बीच आईएमए के द्वारा ठगी किए जाने की जानकारी मिलते ही उन के सीने में तेज दर्द उठा. दर्द की शिकायत मिलते ही घर वाले पाशा को इलाज के लिए अस्पताल ले गए. इलाज के दौरान उन की मौत हो गई.

मंसूर के अंडरग्राउंड होते ही निवेशकों में खलबली मच गई. तब और ज्यादा हैरानी हुई जब कंपनी पार्टनर और मंसूर खान के करीबी दोस्त खालिद अहमद ने बेंगलुरु के कार्शियल स्ट्रीट थाने में शिकायत दर्ज कराई.

## अरबों की चलअचल संपत्ति थी कंपनी के निदेशकों की

26 जून, 2019 को प्रवर्तन निदेशालय ने अनौपचारिक रूप से बेंगलुरु स्थित आईएमए ग्रुप औफ कंपनीज की 209 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त कर ली. इस अटैचमेंट में 197 करोड़ रुपए की अचल संपत्ति, 105 बैंक खातों का पता चला, जिन में से 51 बैंक खातों से 98 लाख रुपए, एचडीएफसी बैंक से 11 करोड़ रुपए और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण जमा योजना में जमा राशि शामिल थी.

प्रवर्तन निदेशालय ने यह काररवाई 4 जून, 2019 को कार्शियल स्ट्रीट थाने में एमडी मोहम्मद मंसूर खान के खिलाफ दर्ज की गई भादंसं की धारा 406 और 420 के आधार पर की थी. बेंगलुरु पुलिस ने आईएमए ग्रुप औफ कंपनीज और इस के प्रबंध निदेशक मोहम्मद मंसूर खान के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था.

मुकदमा दर्ज होने के बाद पुलिस ने जांच की काररवाई शुरू की. जांच के दौरान पता

Vikas Bhadauria

धोखाधड़ी की खबर मिलने पर कंपनी औफिस के बाहर जुटे हजारों निवेशक

चला कि आरोपी मंसूर खान ने संस्थाओं में पोंजी योजनाओं के माध्यम से 40 हजार से अधिक मध्यम वर्ग और निम्न मध्यम वर्ग के लोगों से कंपनी में रुपए जमा कराए.

पुलिस की जांच जैसेजैसे आगे बढ़ती गई, वैसेवैसे आईएमए का कच्चा चिट्ठा खुलता गया. जांच में पता चला कि जनता द्वारा किए गए निवेश पर वादा किए गए मासिक रिटर्न का भुगतान करने के लिए आईएमए समूह कोई व्यवसाय नहीं कर रहा था बल्कि मोहम्मद मंसूर खान एक पोंजी योजना चला रहा था. मंसूर खान के निर्देशों पर ही उस के सभी निदेशक काम कर रहे थे.

जांच में प्रवर्तन निदेशालय ने अब तक मोहम्मद मंसूर खान और उस की संस्थाओं के नाम पर आयोजित 20 अचल संपत्तियों की पहचान की है, जिन्हें ठगी के रूप में अर्जित किया गया है. कुल अचल संपत्तियों का मूल्यांकन सरकारी मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा 197 करोड़ आंका गया. ईडी ने एक प्रैस विज्ञप्ति के जरिए ये बात सार्वजनिक की है.

## बैंक को भी 600 करोड़ का चूना लगाने के चक्कर में था मंसूर

विभिन्न निजी बैंकों और आईएमए समूह की कंपनियों की सहकारी समितियों के साथ 105 बैंक खातों की जांचपड़ताल करने पर ईडी को पता चला कि मोहम्मद मंसूर खान को निवेश के रूप में लगभग 4 हजार करोड़ मिले थे. जनता की यह रकम आरोपी खान और उस के निदेशकों ने अपने विभिन्न खातों में डाल ली थी. यही नहीं, खान ने निदेशकों और अन्य सहयोगियों के नाम पर विभिन्न अचल और चल संपत्तियों को सार्वजनिक कर दिया ताकि जांच में यह पता न चल सके कि इन बेनामी संपत्तियों के असल मालिक कौन हैं ?

जांच के दौरान कंपनी के जिन 105 बैंक खातों की जानकारी मिली, उन में जमा 12 करोड़ रुपए ईडी ने जब्त कर लिए. मंसूर खान ने निवेशकों के रुपयों में से लगभग 44 करोड़ रुपए की नकदी विभिन्न बैंक खातों में जमा की थी.

जब आयकर विभाग को इस की भनक लगी तो उस के कान खड़े हो गए. इस पर आयकर विभाग ने कारर्वाई की तो पता चला कि आईएमए समूह ने आयकर विभाग को 22 करोड़ रुपए का इनकम टैक्स चुकाया था. इस में से 11 करोड़ रुपए की शेष राशि एक बैंक में पड़ी थी, जिस की पहचान जांच में की गई.

197 करोड़ रुपए की 20 अचल संपत्तियां और लगभग 12 करोड़ रुपए की चलअचल संपत्ति अधिनियम के तहत ईडी ने जब्त कर ली. ईडी फरार आरोपी मोहम्मद मंसूर खान के खिलाफ रेड कौर्नर नोटिस जारी करने की प्रक्रिया में है, जिस से भगोड़ा अपराधी अधिनियम को लागू करने की संभावनाएं तेज हो गईं.

जांच के दौरान एक और चौंकाने वाली बात पता चली. मोहम्मद मंसूर खान ने फरार होने से पहले आखिरी बार 600 करोड़ के भारीभरकम लोन लेने की कोशिश की थी. कर्नाटक सरकार के एक मंत्री ने उसे इस के लिए एनओसी लगभग दे भी दी थी, मगर एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी की सतर्कता से यह प्लान फेल हो गया था.

जांच में पता चला कि मंसूर खान ने लोन के लिए एक बैंक का रुख किया था. बैंक को मंसूर खान के खिलाफ जारी धोखाधड़ी के नोटिस के बारे में जब पता चला तो उस ने उसे अनापत्ति प्रमाणपत्र लाने को कहा. मंसूर ने अपनी ऊंची पहुंच के चलते इस एनओसी का जुगाड़ भी कर लिया था.

एनओसी पर प्रमुख सचिव स्तर के आईएएस अधिकारी के दस्तखत होने बाकी थे. आईएएस अधिकारी को मंसूर खान की जालसाजी के बारे में पहले ही पता चल गया था. उन्होंने अपनी सूझबूझ का परिचय दिया और दस्तावेजों पर साइन करने से साफ इनकार कर दिया.

इस पर मंत्री ने उन पर काफी दबाव बनाया, मगर उन पर इस दबाव का कोई असर नहीं हुआ. अधिकारी की सूझबूझ के चलते 600 करोड़ का एक और चूना लगतेलगते बच गया था.

जांच के दौरान 4 हजार करोड़ रुपए की ठगी किए जाने का मामला सामने आया है. आगे की जांच की प्रक्रिया जारी है. कर्नाटक के मुख्यमंत्री एच.डी. कुमारस्वामी ने कहा है कि आईएमए के मामले को गंभीरता से लिया जा रहा है.

सरकार निवेशकों की स्थिति समझती है. इस मुद्दे पर गृहमंत्री एम.बी. पाटिल से भी बात की तो उन्होंने बताया कि यह मामला सेंट्रल क्राइम ब्रांच ( सीसीबी ) को सौंप दिया गया है. दोषियों पर कारर्वाई की जाएगी.

कथा लिखे जाने तक ईडी मंसूर खान के खिलाफ रेड कौर्नर नोटिस जारी करने की तैयारी में जुटी थी.

पुलिस के मुताबिक, मंसूर खान दुबई भागने से पहले अपने परिवार को पहले ही दुबई में शिफ्ट करा चुका था ताकि उस के देश छोड़ कर भागने पर पुलिस परिवार को परेशान न कर सके. देखना है कि क्या पुलिस ठग मंसूर खान को दुबई से भारत वापस ला पाती है या नहीं. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

## इंदौर, मध्य प्रदेश

लीना पुलिस में हैडकांस्टेबल थी, जबकि उस का पति जितेंद्र राय ट्रैवलिंग एजेंट था. जिंदगी ठीक चल रही थी, लेकिन जितेंद्र चाहता था कि लीना अपनी वरदी का लाभ उठा कर पैसा कमाए. लीना नहीं मानी तो उस ने संगीता को पटाया और उसे पुलिस की वरदी पहना कर लीना के नाम पर लोगों से पैसा बटोरना शुरू कर दिया. लेकिन...

जितेंद्र एक दिन अपनी पत्नी लीना के साथ एक दोस्त के परिवार में आयोजित शादी समारोह में शामिल होने आया था. समारोह में वह पत्नी के साथ औपचारिकता भर निभा रहा था, क्योंकि उस की पत्नी से बनती नहीं थी. उसी दौरान जितेंद्र की नजर समारोह में मौजूद एक युवती पर पड़ी तो वह उसे देखता रह गया, मानो किसी दूसरी दुनिया में खो गया हो.

जितेंद्र उस की खूबसूरती पर ऐसा फिदा हुआ कि कुलांचें भरता मन बस उसी के इर्दगिर्द घूम रहा था. जितेंद्र ने उसे पहले कभी नहीं देखा था. वह उस युवती से बात करने के लिए उतावला हुए जा रहा था.

पत्नी लीना को सहेलियों के बीच छोड़, वह आत्ममुग्ध हो कर उस युवती की ओर बढ़ चला. जब तक वह उस के पास पहुंचा, तब तक युवती उस के दोस्त राजेश के साथ खड़ी बातें करने लगी. जितेंद्र इस मौके को खोना नहीं चाहता था. वह राजेश के पास पहुंच गया. बातें करतेकरते उस ने युवती की तरफ इशारा करते हुए राजेश से पूछा, ''यह कौन है भाई ?''

''अरे यार यह मेरी मुंह बोली बहन संगीता है.'' कहते हुए राजेश ने जितेंद्र का परिचय संगीता से करवाया. जितेंद्र यही चाहता भी था. जितेंद्र ने संगीता से बातचीत करनी शुरू कर दी. संगीता ने उस से पूछा, ''आप क्या करते हैं ?''

यह सुन कर जितेंद्र मुसकराया और कंधे उचकाते हुए बोला, ''मैं पुलिस का दामाद हूं.''

''अच्छा,'' कह कर संगीता हंस पड़ी.

राजेश ने बताया, ''जितेंद्र की पत्नी लीना मध्य प्रदेश पुलिस में है. जब बीवी पुलिस में है तो इस का तो कहना ही क्या, इस की तो मौज ही मौज है, हरफनमौला आदमी है यह.''

फरजी पुलिस कांस्टेबल (इनसेट) बन कर लोगों से अवैध वसूली करने वाली संगीता और उस का प्रेमी जितेंद्र राय पुलिस हिरासत में

# गलत राह का राही

❑ सुरेशचंद्र रोहरा

Vikas Publishing

# बचा ही लिए गए सुनहरे लंगूर

पूरी दुनिया में तमाम ऐसे जीव हैं जो या तो पूरी तरह से विलुप्त हो चुके हैं या लुप्त होने के कगार पर हैं. इन्हीं में से एक है सुनहरा लंगूर जिस की संख्या इतनी तेजी से गिरी है कि अब केवल 400 सुनहरे लंगूर रह गए हैं. बेहद छोटे और गिलहरी के

आकार के इन लंगूरों को ब्राजील के वर्षावनों में देखा जा सकता है. इस सुनहरे लंगूर को टैमेरिन भी कहा जाता है.

यहां के सुरक्षित वनों और चिड़ियाघरों में इस प्रजाति को फिर से बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है. मात्र 600 ग्राम वजन और 60 सेंटीमीटर लंबाई वाले इस जीव को कभी 1600 किलोमीटर तक फैले वर्षावनों में देखा जाता था, पर आबादी की वजह से तेजी से काटे जा रहे वर्षावनों से सुनहरे लंगूरों की आबादी पर विपरीत असर पड़ा है.

सब से पहले ब्राजील के जीवविज्ञानी अडेल्मार फारिया कोइंब्रा-फिल्हो का ध्यान जब इस लंगूर की ओर गया. काफी पहले उन्होंने अपने देश के लोगों से कहा था कि वे इस सुनहरे लंगूर को पालतू न बनाएं क्योंकि एक लंगूर पकड़ने के चक्कर में 10 नन्हें बच्चे मारे जाते हैं. कोइंब्रा के कारण ही इस लंगूर के निर्यात पर पूरी तरह रोक लगा दी गई.

इस सफलता के बाद सरकार ने कोइंब्रा के कहने पर ही 3250 हेक्टेयर वर्षावन को राष्ट्रीय सुरक्षित वन घोषित कर दिया. इस समय तक इस जीव की संख्या खतरनाक तरीके से नीचे गिर गई थी. यानी मात्र 100 सुनहरे लंगूर ही बचे थे. उधर ये सुनहरे लंगूर या तो पालतू थे अथवा चिड़ियाघर में प्रजनन नहीं कर रहे थे.

इसी के बाद वाशिंगटन स्थित नैशनल जूलौजिकल पार्क के जंतु वैज्ञानिक डेवरा क्लीमान ने एक प्रोजैक्ट सामने रखा ताकि इन लंगूरों को बचाया जा सके. डेवरा ने ही अध्ययन के बाद पता लगाया कि टैमेरिन यानी सुनहरे लंगूरों को हड्डियों के रोग ज्यादा होते हैं क्योंकि शरीर में विटामिन-डी बनाने के लिए जिस विटामिन-डी की जरूरत होती है, वह सूर्य के प्रकाश में ही शरीर में बनता है.

यही नहीं टैमेरिन पूरी तरह से शाकाहारी होते हैं. जब इन लंगूरों को जब जीवों के लिए प्रोटीन और विटामिन दिए गए तभी इन का स्वास्थ्य ठीक हुआ. इस के बाद इन लंगूरों को पेड़ पर ही ऐसे बक्से दिए गए जो पेड़ पर बने हलके घोंसलों जैसे होते थे, इसी के बाद इन की संख्या बढ़ने लगी.

इन लंगूरों के बीच लड़ाई भी काफी भयंकर होती है, जिस से हर साल कई लंगूर मारे जाते हैं. ज्यादातर ऐसी लड़ाइयां मादाओं के बीच होती हैं. ऐसी सभी मादा टैमेरिन को एक जगह अलग रखा गया, जो अपने झुंड से, लड़ाई की वजह से, अलग हो गई थीं. इन सभी मादाओं को अलग स्थान दिया गया और देखते ही देखते सभी की संख्या में भारी वृद्धि हो गई.

इस के बाद पूरी दुनिया से कई जंतु वैज्ञानिकों ने ब्राजील में डेरा डाला और नए सिरे से टैमेरिन यानी सुनहरे लंगूरों को बचाने की कवायद शुरू हो गई. जंतु वैज्ञानिकों के प्रयासों से पता चला कि टैमेरिन को घने और कंटीले वृक्षों की छांव पसंद है, क्योंकि इस से वे शत्रुओं से अपनी सुरक्षा कर सकते हैं. ये लंगूर अपने परिवार के साथ काफी विशाल क्षेत्रफल को अपने लिए सुरक्षित बना लेते हैं. इस क्षेत्र में लंगूरों का कोई दूसरा परिवार नहीं आ सकता. ये क्षेत्र कई बार तो 35 हेक्टेयर तक का होता है.

वैज्ञानिकों ने ये भी पता लगाया कि ये टैमेरिन अपने जत्थे में ही प्रजनन करते हैं, जिस से इन के बच्चे कमजोर होते जा रहे हैं. लेकिन सब से बड़ा खतरा सिकुड़ते जंगल हैं.

यही कारण है कि इन जीव वैज्ञानिकों ने सरकार को सचेत करने के अलावा खुद भी तमाम पेड़ लगाने का काम शुरू कर दिया है. लोगों का समर्थन प्राप्त करने के लिए कई जीव वैज्ञानिकों ने निजी चैनलों से भी संपर्क किया है ताकि इन लंगूरों के प्रति आमजन को जागरुक किया जा सके. ●

— रोमी शीराज मुद्राराक्षस

संगीता कुछ समझी, कुछ नहीं समझी. मगर जितेंद्र के व्यक्तित्व और पुलिसिया दामाद होने की बातें सुन कर वह उस से प्रभावित हो गई. दोनों बातें करने लगे. इसी बीच राजेश वहां से हट गया तो जितेंद्र ने संगीता को इंप्रेस करने की हर कोशिश करनी शुरू कर दी. लच्छेदार बातें कर उसे वह मानो एक ही पल में अपने आगोश में लेने को आतुर हो उठा. वह बोला, ''संगीताजी, मैं आप से एक बात कहूं.''

''जरूर कहिए, आप बड़े दिलचस्प व्यक्ति हैं, ऐसा लगता है कि आप से आज अभी की नहीं, वर्षों पहले की मुलाकात हो.'' संगीता ने कहा.

जितेंद्र के सामने सुनहरा मौका था, उस ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि चाहे जो भी हो, संगीता के लिए उसे सारे संसार से लड़ना भी पड़ा तो लड़ेगा. उस ने थोड़ा झिझकने का नाटक करते हुए कहा, ''आप से एक बात कहनी है, बुरा तो नहीं मानेंगी ?''

संगीता उस की बातों और नजरों से कुछकुछ भांप चुकी थी कि वह क्या कहना चाहता है. उस ने सहजता से कहा, ''आप कहिए, मैं बुरा नही मानूंगी.''

जितेंद्र को हिम्मत मिली तो उस ने पहली मुलाकात में ही इश्क का इजहार कर दिया. उस की बात सुन कर संगीता की आंखें फटी रह गईं. मगर वह नाराज नहीं हुई. तभी जितेंद्र ने कहा, ''संगीता जी, मैं आप की खातिर सारे संसार को छोड़ने को तैयार हूं.''

## संगीता आ गई जितेंद्र की बातों में

संगीता को यह पता चल चुका था कि जितेंद्र शादीशुदा है. वह खुद भी किसी की अमानत थी. उस वक्त उस की मांग में सिंदूर, और गले में मंगलसूत्र था. संगीता ने जितेंद्र की बातें सुन आत्मीय स्वर में कहा, ''आप तो शादीशुदा हैं न ?''

''हां, मगर मैं ने आप को देखते ही अलग तरह का आकर्षण महसूस किया. रही बात मेरी पत्नी लीना की, तो उस के साथ मैं कैदी जैसी जिंदगी जी रहा हूं.'' जितेंद्र बोला. उस की आंखों में आंसू झिलमिलाने लगे थे.

संगीता भी कम नहीं थी. उस से बिना मौका छोड़े तत्काल कहा, ''अभी तो खुद को सरकारी दामाद बता कर खुश भी थे और गर्व भी महसूस कर रहे थे. इतनी सी देर में क्या हो गया ?''

''दिल का दर्द हर किसी के सामने नहीं छलकता. पता नहीं दिल ने आप में ऐसा क्या देखा कि...''

जितेंद्र की बात सुन और उस की आंखों में आंसू देख संगीता को महसूस हुआ कि वह मन का सच्चा आदमी है. संगीता भी अपने पति राकेश से कहां खुश थी. उस ने सुन रखा था कि दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो वैवाहिक जीवन में खुश नहीं होते. शायद जितेंद्र भी उन्हीं में हो. राकेश का गुस्सैल चेहरा संगीता की आंखों के आगे घूमने लगा.

पुलिस की वरदी पहनने के बाद संगीता के चेहरे पर निर्भीकता नजर आती थी. उस के बात करने के तरीके से कोई नहीं समझ पाता था कि यह फरजी पुलिस वाली है

बातबात में प्रताड़ना, मारपीट, गालीगलौज उस के लिए आम बात थी. वह राकेश से भीतर ही भीतर नफरत करती थी, फिर भी पत्नी धर्म का निर्वहन कर रही थी.

उस ने जितेंद्र की ओर आत्मीय दृष्टि डालते हुए कहा, ''आप जल्दबाजी मत कीजिए. अभी मेरी तरफ से हां भी है और ना भी, मुझे सोचने का कुछ वक्त दीजिए.''

जितेंद्र संगीता की बातें सुन मन ही मन खुश हुआ, उस ने कहा, ''बिलकुल, लेकिन हम जल्दी ही मिलेंगे न ?''

सुन कर संगीता मुसकराई. दोनों ने अपने मोबाइल नंबर एकदूसरे को दे दिए. जितेंद्र राय और संगीता सुसनेर की यह पहली मुलाकात लगभग 5 साल पहले सन 2014 में हुई थी.

दोनों के बीच फोन पर बातें होने लगीं. दोनों को अपने जीवनसाथियों से परेशानियां थीं, इसलिए अपनाअपना दुखड़ा सुनातेसुनाते एकदूसरे के करीब आ गए.

जल्दी ही दोनों का इंदौर के मोती गार्डन में मिलना तय हुआ. जितेंद्र समय से पहले पहुंच गया. समय बीत रहा था और संगीता का कहीं अतापता नहीं था. वह बेचैन हो उठा. तभी संगीता सामने आ कर खड़ी हो गई. दोनों

**आप बनें जज [परिणामः दो कत्लों पर मौत, जुलाई 2019 अंक]**

इस कहानी में मुख्य गुनहगार सनी नागपाल है, जिस ने एक साधारण इंसान का घर बिगाड़ दिया. सनी नागपाल को उस के किए की जितनी भी सजा दी जाए, कम है.

— मोबाइलः +91882455xxxx

Vikas Bhadu

जितेंद्र राय और संगीता पुलिस हिरासत में

एकदूसरे को देख कर खुश थे. एक बेंच पर बैठ कर दोनों ने बातचीत शुरू की. जितेंद्र ने गहरी सांस ले कर कहा, ''संगीता, मैं तो घबरा गया था. अगर तुम नहीं आती तो...''

संगीता ने मुसकरा कर उस पर तिरछी नजर डाली फिर कहा, ''ओह, फिर तो मुझ से बड़ी भूल हो गई.''

## चाहत का कर दिया इजहार

इस के बाद दोनों खिलखिला कर हंस पड़े. कुछ देर तक इधरउधर की बातें होती रहीं. दोनों के बीच मुलाकात का सिलसिला शुरू हुआ तो दोनों एकदूसरे से मिलने लगे.

एक दिन जितेंद्र ने उस से कहा, ''मैं ने आज एक निर्णय लिया है, मुझे बस तुम्हारा साथ चाहिए.''

''हांहां, कहो.'' संगीता ने कहा.

''मैं लीना को छोड़ रहा हूं, मैं आज ही उस से संबंध खत्म कर दूंगा.''

''क्यों ?'' संगीता ने मासूमियत से पूछा.

''मैं तुम्हें चाहता हूं. आखिर हम कब तक अलग रहेंगे. तुम्हारे लिए मैं दुनिया से भी टकरा जाऊंगा.'' जितेंद्र ने संगीता की आंखों में आंखें डाल कर कहा.

यह सुन कर संगीता मन ही मन खुश थी कि कोई तो है संसार में जो उसे इतना चाहता है. उस ने बचपन से ही दुख झेले थे. पति के घर आई तो वहां भी लड़ाईझगड़ा और अवसाद भरी जिंदगी. उस ने जितेंद्र के हाथ अपने हाथों में ले कर कहा, ''मैं तुम्हारे साथ हूं जितेंद्र. मैं भी तुम्हें चाहने लगी हूं. तुम्हारी खातिर सब कुछ छोड़ दूंगी.''

संगीता का समर्थन मिला तो जितेंद्र की बांछें खिल गईं, वह बोला, ''लेकिन तुम्हें एक काम करना होगा, मेरे पास हमारे सुनहरे दिनों की प्लानिंग है.''

''वह क्या ?'' संगीता ने सहजता से पूछा.

''आज शाम को मैं एक चीज ले कर आऊंगा, उसे तुम्हें पहननना होगा.'' जितेंद्र ने रहस्यमय स्वर में कहा.

''क्या, मंगलसूत्र ?'' संगीता ने भोलेपन से पूछा.

जितेंद्र हंस पड़ा, ''नहीं, वह तो मैं पहनाऊंगा ही, लेकिन एक चीज और है.''

''क्या, बताओ भी न.'' संगीता इठलाई.

''तुम्हें लीना की वरदी पहननी है ?'' जितेंद्र ने दिल की बात बता दी.

''क्यों, इस से क्या होगा ?'' संगीता ने आश्चर्य पूछा.

''मैं तुम्हें ऐसी दुनिया दिखाऊंगा कि तुम सोच में पड़ जाओगी. जानती हो, एक पुलिसवाली जब डंडा ले कर निकलती है तो तमाम लोग उसे सलाम ठोकते हैं.''

''तुम यह सब मेरे लिए क्यों कर रहे हो और फिर मैं लीना की वरदी कैसे पहन सकती हूं ?''

''सब ठीक हो जाएगा, तुम वरदी पहनना, मैं फोटो ले लूंगा तुम्हारा आईडी कार्ड भी बन जाएगा.'' जितेंद्र ने कहा.

''अच्छा ठीक है, अगर तुम कह रहे हो तो... पर मुझे कुछ अटपटा लग रहा है.''

## जितेंद्र ने संगीता पर फेंका जाल

उस शाम जब जितेंद्र राय संगीता से मिलने आया तो उस के बैग में लीना की पुलिस की वरदी थी. उस ने वरदी निकाल कर संगीता के सामने रख दी और आत्मविश्वास से लबरेज स्वर में बोला, ''संगीता इसे पहन कर दिखाओ, देखूं तो कैसी दिखती हो.''

संगीता ने उस के सामने ही लीना राय की लाई पुलिस वरदी पहन ली. जितेंद्र ने प्रसन्न भाव से कहा, ''तुम बहुत सुंदर लग रही हो, मानो इस वरदी के लिए ही बनी हो.''

संगीता वरदी पहन कर इठला रही थी. जितेंद्र ने उस के कुछ फोटो लिए और बताया, ''जल्द ही तुम्हारा आईडी कार्ड बन जाएगा, फिर हमारी तकदीर खुल जाएगी.''

संगीता विस्मय से जितेंद्र की ओर देखने लगी, उसे अच्छा भी लग रहा था और बुरा भी.

जितेंद्र के प्यार में पड़ कर संगीता ने किसी और की पुलिस वरदी पहन तो ली लेकिन आगे चल कर वह एक ऐसे भंवर जाल में फंसती चली गई जो उस की जिंदगी को तबाह करने के लिए काफी था.

जितेंद्र राय और लीना राय का विवाह हुए 8 साल हो चुके थे. जितेंद्र एक ट्रैवल कंपनी में ट्रैवल एजेंट था उस की पत्नी लीना राय मध्य प्रदेश पुलिस में प्रधान आरक्षक थी. फिलहाल उस की ड्यूटी पुलिस ट्रेनिंग स्कूल में थी. लेकिन दोनों के विचार नहीं मिलते थे, जिस की वजह से उन के बीच खटास बनी रहती थी.

जितेंद्र के बड़ेबड़े ख्वाब थे जिन्हें वह साकार करना चाहता था. आननफानन में लखपति बनने के बारे में वह पत्नी को बताता रहता था. वह लीना को पुलिस वरदी की महत्ता बताता और कहता, इस वरदी में बड़ी ताकत है. अगर इस वरदी का सही इस्तेमाल किया जाए तो उन की मुफलिसी दूर हो जाएगी.

मगर लीना राय वरदी की मर्यादा समझती थी. इसलिए वह नहीं चाहती थी कि पैसों के लिए वह किसी आपराधिक गतिविधि में शामिल हो. इसलिए वह प्यार से पति को समझाती कि वह ऐसी बातें न तो सोचे, और न ही उसे करने के लिए कहे.

जितेंद्र तरहतरह के तर्क देता कुछ पुलिस वालों के उदाहरण भी बताता, लेकिन लीना ने उस की बात नहीं मानी.

जितेंद्र का मन लीना से उचट गया तो वह संगीता के प्यार की नैय्या में बैठ कर आगे की योजना बनाने लगा.

जितेंद्र ने अपना घर छोड़ा और संगीता ने अपने पति का घर छोड़ा. दोनों इंदौर महानगर के मूसाखेड़ी कस्बे में किराए के एक मकान में रहने लगे. जितेंद्र ने ट्रैवल एजेंट का काम छोड़ दिया और अपनी वर्षों की कल्पना को साकार करने की दिशा में कदम बढ़ा दिए. उस ने निश्चय कर लिया कि संगीता को फरजी पुलिसवाली बना कर आगे की जिंदगी खुशहाली से व्यतीत करेगा.

जितेंद्र ने पत्नी लीना के आईडी कार्ड पर संगीता का फोटो लगा कर फरजी आईडी कार्ड भी बनवा दिया. जितेंद्र ने लीना को नजदीक से देखा था, उस के हर गुणधर्म को वह जज्ब कर चुका था. उस ने संगीता को एकएक बात प्रेम से समझानी शुरू की. उसे बताया कि लीना कैसे चलती है कैसे बातें करती है. जितेंद्र ने संगीता को कुछ फिल्में भी दिखाईं ताकि पुलिस का रौब पैदा करना आ जाए. पुलिस वाली बन कर वह लोगों को डराधमका कर उन से मोटी रकम ऐंठ सके.

जितेंद्र जब पत्नी लीना को छोड़ कर संगीता के साथ रहने लगा तो लीना मन मसोस कर रह गई. उस ने एक दिन जितेंद्र से बात की और कहा, ''तुम जो कर रहे हो, क्या यह ठीक है. जानते हो, लोग क्या कहेंगे, समाज क्या कहेगा और मेरा क्या होगा?''

नकली पुलिस वाली संगीता

## ठगी के लिए छोड़ा पत्नी को

लीना की बातें सुन जितेंद्र कुछ क्षण मौन रहा फिर कहा, ''लीना, कितना अच्छा होता तुम मेरी जिंदगी में नहीं आती. अब मुझे भूल जाओ.''

लीना तड़प कर बोली, ''यह तुम क्या कह रहे हो, क्या शादीविवाह गुड्डेगुड़ियों का खेल है, जो भूलने की बात कह रहे हो.''

''जब हमारे आचारविचार नहीं मिलते तो हम एक साथ क्यों रहें. तुम्हारे साथ रहने पर मुझे घुटन होती है.'' जितेंद्र ने कहा.

जितेंद्र को लीना ने समझाने का पूरा प्रयास किया, घर परिवार की दुहाई दी मगर उस ने उस की एक नहीं सुनी. वह संगीता के साथ मूसाखेड़ी में रहने लगा. लीना एकाकी जीवन यापन करने लगी. जबकि जितेंद्र संगीता के साथ खुश था क्योंकि संगीता लीना से ज्यादा सुंदर थी. इतना ही नहीं वह उस की एकएक बात मानती थी. साथ ही उस की अवैध और गैरकानूनी गतिविधियों में उस की सहभागी भी बन गई थी.

दोनों ने महानगर इंदौर के लोगों को ठगना शुरू कर दिया. संगीता पुलिस की वरदी पहन कर जितेंद्र के साथ कहीं भी पहुंच जाती और धौंस दे कर लोगों से रुपए वसूल करती. इस तरह दोनों मोटी कमाई कर के ऐश की जिंदगी जीने लगे.

दोनों ने थोड़े समय में ही पुलिस की वरदी की आड़ में लाखों रुपए की कमाई कर ली. जितेंद्र अवैध काम करने वालों पर पैनी निगाह रखता, उस ने कुछ ऐसे लोग से मित्रता कर रखी थी जो उसे अवैध काम करने वालों के ठिकाने बताते थे. इस के बदले में वह उन्हें अवैध वसूली में से कमीशन देता था.

नकली घी बनाने वाले एक व्यापारी से संगीता ने पुलिसिया रौब झाड़ कर 2 लाख रुपए की रकम वसूल की थी. कई जगह से अवैध वसूली के बाद संगीता की हिम्मत बढ़ गई थी. अब वह और भी निर्भीक हो कर अवैध काम करने वालों को धमकाती थी.

जितेंद्र को एक दिन पता चला कि शहर के एक इलाके में नामी कंपनी के नाम का नकली कोल्ड ड्रिंक बनाने की फैक्ट्री चल रही है. संगीता वरदी पहन कर जितेंद्र के साथ उस जगह पहुंच गई. फैक्ट्री संचालक को हड़का कर दोनों ने उस से 2 लाख रुपए ऐंठ लिए.

जितेंद्र और संगीता की गतिविधियां बढ़ती जा रही थीं. यह सब करतेकरते संगीता यह तक भूल गई कि वह फरजी पुलिस वाली है. लेकिन वरदी और आईडी कार्ड होने की वजह से वह खुद को असली पुलिसकर्मी ही समझती थी.

वह समझती थी कि इंदौर इतना बड़ा महानगर है कि वह जितेंद्र के साथ इसी तरह लोगों को ब्लैकमेल कर के आनंदपूर्वक जीवन यापन करती रहेगी. एक दिन लीना राय अपने औफिस में थी कि एक शख्स उसे बारबार देखता और चला जाता, 2-3 बार जब उस ने ऐसा ही किया तो लीना ने उसे पास बुला कर पूछा, ''क्या बात है, तुम बारबार मुझे इतने गौर से क्यों देख रहे हो?''

उस ने डरते हुए पूछा, ''मैडम क्या आप ही लीना राय हैं?''

लीना ने उस की ओर देखते हुए कहा, ''हां, कहो क्या बात है?''

''मैडम, मैं ने एकांत नगर में लीना राय

दोनों ने थोड़े समय में ही पुलिस की वरदी की आड़ में लाखों रुपए की कमाई कर ली. जितेंद्र अवैध काम करने वालों पर पैनी निगाह रखता, उस ने कुछ ऐसे लोग से मित्रता कर रखी थी जो उसे अवैध काम करने वालों के ठिकाने बताते थे. इस के बदले में वह उन्हें अवैध वसूली में से कमीशन देता था.

Vikas Bhadu

Vikas Bhadu

संगीता से बरामद फरजी आईडी कार्ड

नाम की जो महिला देखी थी, वह तो कोई दूसरी थी.'' उस ने बताया.

''क्या मतलब ?'' लीना ने पूछा.

उस व्यक्ति ने बताया कि उस का नाम रमन गुप्ता है और वह गल्ले किराने का थोक व्यापारी है. रमन गुप्ता ने लीना को जो कुछ बताया, उसे सुन कर लीना राय चौंकी. उस ने बताया कि पिछले महीने लीना राय नाम की एक महिला पुलिस वरदी में उस के पास आई थी और उस से एक लाख रुपए ले गई थी. उस पुलिस वाली ने उसे बताया था कि वह पुलिस ट्रेनिंग स्कूल में बैठती है. कोई भी काम हो तो वहां आ जाना. इसलिए उन्हें ढूंढता हुआ यहां चला आया.

## खबर पहुंच गई लीना तक

रमन गुप्ता की बात सुन कर लीना समझ गई कि जरूर यह काम उस के पति जितेंद्र के साथ रहने वाली संगीता का होगा, क्योंकि उसे और भी कई लोगों ने बताया था कि संगीता पुलिस वरदी पहन कर जितेंद्र के साथ घूमती है.

रमन गुप्ता के जाने के बाद लीना ने तय कर लिया कि कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा. नहीं तो जितेंद्र की गतिविधियां उस के गले की फांस बन सकती है.

लीना उसी शाम जितेंद्र को ढूंढती हुई मूसाखेड़ी पहुंच गई. मगर घर में ताला लगा था. उस ने उस के मोबाइल पर संपर्क करने की कोशिश की तो भी बातचीत नहीं हो सकी. उस दिन वह घर लौट आई. लेकिन एक दिन फिर से उस के यहां गई तो जितेंद्र घर पर मिल गया.

जितेंद्र ने अपनी ब्याहता लीना को देखा तो चौंका, ''अरे लीना तुम.''

लीना मुसकराई, ''जितेंद्र तुम मुझे भूल सकते हो मगर मैं तुम्हें कैसे भूल सकती हूं.'' लीना ने प्रेम भरे अल्फाजों में कहा तो जितेंद्र की सांस में सांस आई.

कुछ बातचीत करने के बाद लीना ने घर में इधरउधर नजरें दौड़ाईं तो संगीता नहीं दिखी. उस ने जितेंद्र से पूछा, ''वह कहां है ?''

''कौन, संगीता!'' जितेंद्र ने कहा, ''संगीता बाजार गई है सब्जी लाने.''

''यह तो बड़ा अच्छा हुआ. हम आराम से बैठ कर बातें कर सकते हैं.'' लीना ने प्यार जताते हुए जितेंद्र से कहा, ''क्या तुम मुझे चाय नहीं पिलाओगे.'' लीना जानती थी कि जितेंद्र रसोई के काम भलीभांति कर लेता है और वह उसे अकसर चाय बना कर पिलाया करता था.

जितेंद्र मुसकरा कर उठा और चाय बनाने चला गया. जितेंद्र का मोबाइल वहीं रखा था. लीना ने झट से मोबाइल उठा लिया और फोन की गैलरी देखने लगी. गैलरी में संगीता के कुछ फोटो मिले, जिस में वह पुलिस की वरदी पहने हुई थी.

लीना ने उन फोटो को तुरंत अपने वाट्सएप में सेंड कर लिया. इस तरह उसे एक बड़ा सबूत मिल गया. वह समझ गई संगीता पुलिस वाली बन कर क्या कर रही है.

जांच अधिकारी टीआई संजय शर्मा

इस का मतलब रमन गुप्ता सही कह रहा था. जितेंद्र के कमरे में रखे सामान देख कर वह समझ गई कि फरजी पुलिस वाली बन कर संगीता मोटा पैसा कमा रही है.

जितेंद्र चाय ले कर आया तो लीना वहां से जा चुकी थी. लीना सीधे एएसपी अमरेंद्र सिंह के पास पहुंची और उस ने संगीता द्वारा फरजी पुलिस बन कर लोगों से पैसे ऐंठने वाली बात उन्हें बता दी.

एएसपी अमरेंद्र सिंह ने आजाद नगर के टीआई संजय शर्मा को मामले की जांच कर सख्त कारवाई करने के आदेश दिए. टीआई संजय शर्मा ने 13 जुलाई, 2019 को जितेंद्र राय और संगीता के घर दबिश डाल कर दोनों को ही गिरफ्तार कर लिया.

थाने ला कर दोनों से विस्तार से पूछताछ की गई तो उन्होंने तमाम लोगों से मोटी रकम ऐंठने की बात स्वीकार कर ली. उन्होंने संगीता सुसनेर और जितेंद्र राय के खिलाफ भादंवि की धारा 419, 420, 467, 468, 469, 471, 380, 120बी के तहत केस दर्ज कर के दोनों को गिरफ्तार कर लिया.

उन की निशानदेही पर पुलिस ने पुलिस की वरदी, कैप, आईडी कार्ड बरामद कर लिया. 14 जुलाई, 2019 को दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया.●

VikasBhadu

दाएं से— सुरेंद्र कुमार लवानिया और उन के स्कूल के प्रिंसिपल विजय कुमार झा, जिन्हें धीरज ने उन्हीं के डा. बी.आर. अंबेडकर जूनियर हाईस्कूल में मार कर दफना दिया

# भविष्य की नींव में दफन 2 लाशें

❑ दिनेश बैजल 'राज'

आगरा जनपद के थाना सिकंदरा की ओम विहार कालोनी निवासी सुरेंद्र लवानिया के सैनिक भारती इंटर कालेज समेत 7 स्कूल हैं. इस के अलावा वह एक एफएम चैनल 90.8 के भी निदेशक हैं. उन का एक स्कूल थाना ताजगंज क्षेत्र के कौलक्खा में है. डा. बी.आर. अंबेडकर नाम के इस जूनियर हाईस्कूल को उन्होंने सेमरी निवासी धीरज को किराए पर दे रखा था.

धीरज ही इस स्कूल को चला रहा था. लेकिन पिछले 2 सालों से धीरज ने स्कूल के मालिक सुरेंद्र लवानिया को किराया नहीं दिया था. जब भी वह किराया मांगते तो धीरज कोई न कोई बहाना बना देता था.

28 जून, 2019 शुक्रवार की सुबह लगभग साढ़े 10 बजे इस स्कूल के संचालक धीरज ने सुरेंद्र कुमार लवानिया को फोन कर के कहा, ''कहीं से मेरे पास पैसे आ गए हैं, आप स्कूल आ कर सारा किराया ले जाएं. आप अपने साथ प्रिंसिपल विजय कुमार को भी बुला लाएं गुरुजी के सामने पैसे दिए जाएंगे तो ठीक रहेगा.''

धीरज विजय कुमार को गुरुजी कहता था. वह सुरेंद्र कुमार लवानिया के ही सैनिक भारती इंटर कालेज, उर्खरा में प्रिंसिपल थे और आगरा की इंदिरापुरम कालोनी में सपरिवार रहते थे. धीरज से किराए के पैसे मिलने की बात सुन कर सुरेंद्र लवानिया खुश हुए.

उन्होंने उसी समय अपने एक कालेज के प्रिंसिपल विजय कुमार को फोन कर के कहा कि मैं धीरज के पास कौलक्खा पहुंच रहा हूं. तुम भी घर से सीधे धीरज के पास पहुंच जाओ. इस के बाद वह अपनी वरना कार से धीरज के पास जाने के लिए निकल गए.

प्रिंसिपल विजय कुमार उस समय सैनिक

Vikas Bhadu

भारती इंटर कालेज में चौकीदार से सफाई कार्य करा रहे थे, क्योंकि पहली जुलाई को स्कूल खुलना था.

मूलरूप से दरभंगा, बिहार निवासी प्रिंसिपल विजय कुमार झा 25 साल पहले आगरा आए थे. सुरेंद्र लवानिया से उन का परिचय हुआ तो उन्होंने झा को सैनिक भारती इंटर कालेज का प्रिंसिपल बना दिया था. ईमानदार व मिलनसार स्वभाव के चलते बाद में विजय ही लवानिया के सभी स्कूलों की देखरेख की जिम्मेदारी संभालने लगे.

उन का बेटा मानवेंद्र उर्फ दीपक सीए की तैयारी कर रहा था. बेटी की वह शादी कर चुके थे. उन्होंने अपने बेटे से बता दिया था कि वे लवानिया साहब के साथ धीरज के पास जा रहे हैं. फिर वह बाइक ले कर निकल गए.

## स्कूल मालिक और प्रिंसिपल की रहस्यमय गुमशुदगी

शाम हो गई लेकिन न तो लवानिया साहब अपने घर लौटे और न ही विजय कुमार. सुरेंद्र लवानिया के घर वालों ने कई बार उन्हें फोन मिलाया लेकिन फोन स्विच्ड औफ था. उधर विजय कुमार का बेटा भी कई बार पिता का नंबर मिला चुका था पर उन का फोन स्विच्ड औफ होने की वजह से नहीं मिला. देर शाम सुरेंद्र लवानिया की पत्नी सुशीला ने प्रिंसिपल विजय के घर फोन किया.

विजय की पत्नी शीला ने उन्हें बताया कि उन के पति भी सुबह बाइक ले कर धीरज से मिलने की बात कह कर निकले थे, लेकिन उन का मोबाइल भी स्विच्ड औफ है. उन से संपर्क भी नहीं हो पा रहा है. शीला ने यह भी बताया कि धीरज को फोन किया था, घंटी जाने के बाद भी उस ने काल रिसीव नहीं की.

दोनों के घर वालों को चिंता हुई. उन्होंने अपने परिचितों को भी फोन कर के उन के बारे में पूछा. फिर उन्हें संभावित जगहों पर तलाश करने लगे. लेकिन दोनों का कोई सुराग नहीं लगा. तलाश में भटक रहे परिजन दूसरे दिन शनिवार 29 जून को ताजगंज थाने पहुंचे.

स्कूल मालिक सुरेंद्र लवानिया व प्रधानाचार्य विजय कुमार के परिजनों ने सुरेंद्र लवानिया के गायब होने की बात सुन कर थानाप्रभारी भी हैरान रह गए, क्योंकि शिक्षा जगत में सुरेंद्र लवानिया बड़ा नाम था. जिले में उन के 7 स्कूल और कालेज थे. 5 साल पहले उन्होंने खंदारी में एक एफएम चैनल भी शुरू किया था.

वह सपरिवार आगरा के सिकंदरा क्षेत्र की ओमविहार कालोनी में रहते थे. उन के परिवार में पत्नी सुशीला के अलावा 2 बेटियां और एक बेटा था. बड़ी बेटी की वह शादी कर चुके थे. सुरेंद्र लवानिया उत्तर प्रदेश शिक्षण संस्थान प्रबंधक परिषद के सदस्य भी थे. वे संगठन की प्रत्येक गतिविधि में हिस्सा लेते थे.

स्कूल स्वामी सुरेंद्र लवानिया व

धीरज बीएससी करने के बाद बीएड कर रहा था. उस ने सोचा कि अगर बीएड करतेकरते एक स्कूल चलाए तो पढ़ाई के साथसाथ आय भी होती रहेगी. उस ने यह बात प्रिंसिपल विजय कुमार को बताई तो उन्होंने 7 स्कूलों के संचालक सुरेंद्र लवानिया से सिफारिश कर के उसे 3 हजार रुपए महीना किराए पर स्कूल दिला दिया. लेकिन धीरज के मन में लालच आ गया और उस ने...

प्रधानाचार्य विजय कुमार के परिजनों ने थानाप्रभारी को घटना से अवगत कराया. मामला गंभीर था, इसलिए थानाप्रभारी ने सुरेंद्र और विजय की गुमशुदगी दर्ज कर के इस घटना की जानकारी अपने उच्चाधिकारियों को दे दी. दोनों के लापता होने की सूचना मिलते ही पुलिस महकमे में खलबली मच गई. हालात को देख कर अपहरण की आशंका थी. एसएसपी जोगेंद्र कुमार ने इस मामले की कमान खुद संभाल ली. इस के तुरंत बाद पुलिस दोनों की खोज में लग गई.

वैसे सुरेंद्र लवानिया मूलरूप से मंसा की मढैया, धिमिश्री, शमसाबाद के रहने वाले थे. उन का 400 वर्ग गज में बना डा. बी.आर. अंबेडकर जूनियर हाईस्कूल, कौलखा, थाना ताजगंज में था. 2 साल पहले यह स्कूल ताजगंज

पुलिस हिरासत में हत्यारोपी धीरज, संदीप, नीरज और विजय

ने सुरेंद्र लवानिया और विजय कुमार के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. एसपी (सिटी) प्रशांत वर्मा ने अभियुक्तों से पूछताछ की तो सुरेंद्र लवानिया और विजय कुमार की हत्या की जो कहानी सामने आई, कुछ इस तरह थी—

करीब 2 साल पहले प्रिंसिपल विजय कुमार झा की सिफारिश पर सुरेंद्र कुमार लवानिया ने 3 हजार रुपए प्रतिमाह किराए पर अपना एक स्कूल धीरज को दे दिया था. धीरज बीएससी करने के बाद बीएड कर रहा था. वह महत्वकांक्षी था. 2 माह पैसा देने के बाद उस ने किराया देना बंद कर दिया था.

किराया मांगने पर वह टालमटोल कर देता था. स्कूल के मालिक सुरेंद्र कुमार लवानिया उस पर किराया देने का दबाव बना रहे थे. उन्होंने कह दिया था कि किराया दो नहीं तो इस साल जुलाई से हम स्कूल वापस ले लेंगे.

लेकिन धीरज की नीयत खराब हो चुकी थी. वह स्कूल को कब्जाने के साथ ही किराया भी नहीं देना चाहता था. इस के लिए उस ने अपने भाइयों संदीप, नीरज और गांव के ही दोस्त विजय के साथ मिल कर एक खतरनाक योजना बना ली थी.

योजना के अनुसार उस ने स्कूल के मालिक लवानिया साहब को फोन पर किराया देने की बात कही. उस ने उन से कहा कि आप अपने साथ प्रिंसिपल विजय को भी ले आए ताकि उन के सामने रुपए दिए जाएंगे तो ठीक रहेगा. इस के साथ ही धीरज अपने भाइयों संदीप, धीरज और नीरज के साथ स्कूल पहुंच गया. पूर्वाह्न 11 बजे से पहले प्रधानाचार्य विजय कुमार झा अपनी बाइक से स्कूल पहुंच गए. उन्होंने स्कूल के औफिस में बैठ कर में धीरज से किराए के रुपए मांगे. इसी बीच धीरज और प्रिंसिपल विजय में कहासुनी हो गई. जिस के चलते दोनों में हाथापाई होने लगी. तभी धीरज ने अपने भाइयों और दोस्त की मदद से विजय को दबोच लिया और गला घोंट कर हत्या कर दी.

कुछ ही देर में स्कूल मालिक सुरेंद्र लवानिया भी धीरज के पास पहुंच गए. तब तक आरोपियों ने विजय की लाश कमरे में ही परदे के पीछे छिपा दी थी.

सुरेंद्र ने धीरज से पूछा कि विजय कुमार झा अभी नहीं आए. तब धीरज ने मना कर दिया कि अभी नहीं आए. इस बीच हत्यारों ने विजय की बाइक भी छिपा दी थी.

## बारीबारी से मार डाला दोनों को

सुरेंद्र लवानिया ने धीरज से किराए के रुपए मांगे तो धीरज फिर टालमटोल करने लगा. इस पर लवानिया भड़क गए. उन्होंने कहा कि तुम ने फोन पर रुपए देने की बात कही थी. यदि तुम रुपए नहीं दोगे तो स्कूल नहीं चला पाओगे. इस पर धीरज उन से भिड़ गया और हाथापाई करने लगा.

सुरेंद्र लवानिया अकेले थे और आरोपी 4 थे. इस बीच सुरेंद्र फर्श पर गिर गए. गिरने के दौरान उन्हें परदे के पीछे छिपी विजय की लाश दिखाई दी तो उन के मुंह से चीख निकल गई.

इस के बाद धीरज और उस के भाइयों के सिर पर खून सवार हो गया. भेद खुलने के डर से उन लोगों ने सुरेंद्र को पकड़ लिया और धीरज ने एक कपड़े से उन का गला घोंट दिया.

घटना के बारे में धीरज के पिता पप्पूराम को जानकारी हुई तो वह भी स्कूल आ गया. सुरेंद्र की कार हुंडई वरना को धीरज और उस का पिता पप्पूराम ले गए. कार को ये लोग सैंया में लादूखेड़ा के पास राजस्थान बार्डर पर खड़ी कर आए.

बाइक को संदीप का दोस्त विजय अपने साथ ले गया. इस के बाद 9 बजे धीरज और उस के भाई फिर स्कूल पहुंचे और 4 फीट लंबा और 4 फीट गहरा गड्ढा खोद कर दोनों शवों को उस में दफन कर दिया.

29 जून की सुबह एक ट्रैक्टर ट्रौली मिट्टी

एसपी (सिटी) प्रशांत वर्मा

मंगवा कर स्कूल के कमरों के सामने डाल दी. जिस से किसी को शक न हो. मोबाइल, पर्स व अन्य कागजात भी आरोपियों ने जला कर शवों के साथ गडढे में दबा दिए थे. पुलिस ने जले मोबाइल फोन, कार, बाइक, गला घोंटने वाला कपड़ा, फावड़ा आदि भी बरामद कर लिए.

इस दोहरे हत्याकांड का परदाफाश करने वाली टीम में क्राइम ब्रांच प्रभारी अरुण बालियान, एसआई अशोक कुमार, रमित कुमार, प्रदीप कौशिक, अरुण, कांस्टेबल ह्रदेश, आदेश त्रिपाठी, अजीत, करणवीर, विवेक, प्रशांत कुमार, पंकज, दीपू शामिल थे. गुमशुदगी की रिपोर्ट को हत्या की रिपोर्ट में तरमीम कर पुलिस ने चारों हत्यारोपियों को न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया. ●

— कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

Vikas Bhadu

के गांव सेमरी निवासी धीरज जाटव ने 3 हजार रुपए मासिक किराए पर लिया था.

धीरज को यह स्कूल विजय कुमार झा ने ही सुरेंद्र लवानिया से सिफारिश कर के किराए पर दिलवाया था. धीरज ने 2 साल से स्कूल का किराया नहीं दिया था. सुरेंद्र लवानिया जब भी उस से किराया मांगते तो वह टालमटोल कर देता था. 28 जून, 2019 को धीरज ने लवानिया साहब को फोन कर के किराया ले जाने के लिए बुलाया था.

29 जून, 2019 की सुबह जब शीला ने धीरज को फोन किया तो धीरज ने फोन उठा लिया. विजय के बारे में पूछने पर धीरज ने शीला को बताया कि प्रिंसिपल साहब और लवानियाजी उस के पास आए ही नहीं थे.

एसएसपी जोगेंद्र कुमार

इस के कुछ देर बाद धीरज शीला के घर पहुंच गया. वहां उस ने चाय भी पी. शीला ने धीरज से कहा, ''बेटा, यदि तुम से कोई गलती हो गई है तो कोई बात नहीं है. हम तुम्हें बचा लेंगे. उन के साथ कुछ करना मत.'' शीला ने यह बात कहते हुए मन ही मन सोचा था कि यदि धीरज ने किसी वजह से दोनों का अपहरण कर लिया होगा तो वह समझाने पर मान जाएगा.

इस पर धीरज ने कहा, ''आप कैसी बात कर रही हैं ? वह मेरे गुरु हैं, मेरे अन्नदाता हैं. मैं कभी उन के साथ गलत नहीं कर सकता.''

इस बीच धीरज पर शक होने पर शीला ने पुलिस को सूचना दे दी. कुछ ही देर में पुलिस वहां पहुंच गई. शीला के घर से निकलते ही पुलिस ने धीरज को हिरासत में ले लिया. थाने ला कर उस से सुरेंद्र लवानिया और विजय कुमार के बारे में पूछताछ की गई.

प्रिंसिपल विजय कुमार झा की पत्नी शीला और बेटी

धीरज ने पुलिस से कहा, ''उन दोनों के लापता होने के पीछे मेरा कोई हाथ नहीं है. हो सकता है कि उन का अपहरण हो गया हो, आप उन के मोबाइल को सर्विलांस पर लगवा दें, शायद उन की लोकेशन का पता चल जाए.''

उधर पुलिस को दोनों के ही घर वालों ने बताया था कि सुरेंद्र लवानिया धीरज के बुलावे पर ही घर से अपनी वरना कार से धीरज से किराया लेने निकले थे, दूसरी ओर विजय कुमार झा अपनी बाइक से गए थे. दोनों के अपहरण के कयास पर पुलिस दोनों के वाहनों की सरगर्मी से तलाश में जुट गई.

## गांव वालों से मिली संदेहास्पद जानकारी

पुलिस अधिकारियों को लग रहा था कि या तो दोनों का अपहरण हुआ है या फिर उन के साथ कोई अनहोनी हो गई है. एसएसपी जोगेंद्र कुमार ने सीओ ( सदर ) विकास जायसवाल के नेतृत्व में 3 टीमें बनाईं. एक टीम का नेतृत्व इंसपेक्टर ( ताजगंज ) अनुज कुमार को करना था, दूसरी टीम को इंसपेक्टर ( सदर ) कमलेश सिंह के साथ करना था, इन के साथ एक टीम क्राइम ब्रांच की भी थी. एसपी ( सिटी ) प्रशांत वर्मा को तीनों टीमों की मौनिटरिंग करनी थी.

इस बीच पुलिस ने विजय और सुरेंद्र के मोबाइल नंबरों को सर्विलांस पर लगा दिया था पता चला कि दोनों फोन नंबर घटना वाले दिन दोपहर 2 बजे से बंद हैं. यह बात भी सामने आई कि दोपहर 2 बजे मृतकों व धीरज के मोबाइलों की लोकेशन कौलक्खा स्थित स्कूल में ही थी.

पुलिस ने गांव वालों से पूछताछ की तो कुछ लोगों ने बताया कि उन्होंने सफेद रंग की एक कार स्कूल तक आती देखी थी. पुलिस को यह भी पता चला कि धीरज स्वयं को डा. बी.आर. अंबेडकर जूनियर हाईस्कूल का मालिक बताता था.

इन सब बातों से पुलिस को शक हुआ कि धीरज जरूर ही कुछ छिपा रहा है. पुलिस धीरज से प्यार से पूछताछ कर चुकी थी पर उस ने कुछ नहीं बताया था. लिहाजा उस के साथ सख्ती जरूरी थी. पुलिस की सख्ती के आगे धीरज टूट गया और उस ने सब उगल दिया.

उस ने बताया कि उस ने उन दोनों की गला घोंट कर हत्या करने के बाद उन के शवों को स्कूल परिसर में ही गड्ढा खोद कर दफन कर दिया है.

दोहरे हत्याकांड की बात सुन कर पुलिस अधिकारी सन्न रह गए. पुलिस ने दोनों के घर वालों को केस खुलने की सूचना दे दी. हत्या की जानकारी होते ही दोनों के परिवार में कोहराम मच गया. पुलिस ने धीरज के साथ हत्या में शामिल 3 अन्य आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया. आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस स्कूल पहुंच गई और रात में ही खुदाई का काम शुरू कर दिया.

## खुदाई कर पुलिस ने निकाली लाशें

आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने 3 घंटे की खुदाई के बाद स्कूल के कमरे के बाहर गड्ढे से दोनों शव बरामद कर लिए. मौके की कारवाई पूरी करने के बाद पुलिस

**बाड़मेर, राजस्थान**

वीर सिंह काम के सिलसिले में घर से दूर गुजरात में था. उस की पत्नी दक्षा कंवर ने उस से मोबाइल रिचार्ज कराने को कहा तो वीर सिंह ने अपने दोस्त महेंद्र सिंह का नंबर दे कर कह दिया कि उसे फोन कर के कह दे, वह रिचार्ज करा देगा. तब उस ने सोचा भी नहीं था कि उस की यह भूल कितनी खतरनाक...

Vikas Bhadu

# दोस्ती पर ग्रहण

❑ कस्तूर सिंह भाटी

मंगलवार, 4 जून, 2019 को सूर्योदय हुए अभी कुछ ही समय हुआ था. राजस्थान के बाड़मेर जिले के हाथमा गांव के पास सोढो की ढाणी के पास कुछ लोगों ने सड़क किनारे एक युवक की लाश पड़ी देखी. लाश देखते ही उधर से गुजरने वाले लोग इकट्ठे हो गए. वहां रुके लोग उस युवक को पहचानने की कोशिश करने लगे. यह बात जब आसपास के गांव में फैली तो ग्रामीण भी वहां जुटने लगे.

गांव के किसी शख्स ने मरने वाले व्यक्ति की लाश पहचान ली. मृतक का नाम वीर सिंह था, जो पास के ही सोढो की ढाणी निवासी जोगराज सिंह का बेटा था. किसी ने यह खबर वीर सिंह के घर जा कर दी तो उस के घर में रोनापीटना शुरू हो गया. वीर सिंह की पत्नी दक्षा कंवर छाती पीटपीट कर रोने लगी. रोतेबिलखते हुए वह भी उसी जगह पहुंच गई, जहां उस के पति की लाश पड़ी थी.

मौके पर मौजूद लोगों ने आक्रोश में आ कर सड़क जाम कर दी. उसी समय कुछ लोग थाना रामसर पहुंच गए. उन्होंने थानाप्रभारी विक्रम सिंह सांदू को बताया कि साढो की ढाणी ( हाथमा ) निवासी 40 वर्षीय वीर सिंह कल दोपहर 2 बजे घर से कहीं जाने के लिए निकला था. आज उस का शव सड़क किनारे पड़ा मिला. किसी ने हत्या कर के लाश वहां फेंक दी है. इस घटना को ले कर लोगों में

बहुत आक्रोश है इसलिए उन्होंने सड़क पर जाम लगा दिया है.

हत्या और सड़क जाम की खबर सुन कर थानाप्रभारी अपनी टीम के साथ तुरंत साढो की ढाणी के पास वाली उस जगह पहुंच गए, जहां वीर सिंह की लाश पड़ी थी. पुलिस को देखते ही सड़क जाम कर रहे लोग पुलिस के खिलाफ नारेबाजी करने लगे. थानाप्रभारी ने उन्हें समझाने की कोशिश की लेकिन लोग एसपी को ही मौके पर बुलाने की मांग पर अड़े रहे.

थानाप्रभारी विक्रम सिंह सांदू ने घटनास्थल का निरीक्षण कर बाड़मेर के एसपी राशि डोगरा डूडी एवं एएसपी खींव सिंह भाटी को हालात से अवगत कराया. साथ ही निवेदन भी किया कि लोग एसपी साहब को ही मौके पर बुलाने की मांग कर रहे हैं.

स्थिति की गंभीरता को समझते हुए एएसपी खींव सिंह भाटी तत्काल घटनास्थल पर पहुंच गए. एएसपी खींव सिंह भाटी और थानाप्रभारी विक्रम सिंह सांदू ने लोगों को समझाया. एएसपी ने लोगों को आश्वस्त किया कि पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण कर लिया है.

मृतक वीर सिंह के सिर पर कई गहरे घाव थे, जो किसी धारदार हथियार के लग रहे थे. उस का सिर फटा हुआ था. वहां पैरों के या संघर्ष के निशान नहीं थे. शव पर लगा खून सूख चुका था. जिस स्थान पर शव पड़ा था वहां आसपास खून के धब्बे नहीं थे. इस से यही लग रहा था कि उस की हत्या कहीं और करने के बाद उस का शव यहां ला कर डाला गया था.

पुलिस ने मृतक की पत्नी और अन्य लोगों ने प्रारंभिक पूछताछ कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. एएसपी भाटी ने लाश का पोस्टमार्टम 3 डाक्टरों के मैडिकल बोर्ड से कराने की मांग की. 3 डाक्टरों के पैनल ने वीर सिंह के शव का पोस्टमार्टम किया. पोस्टमार्टम के बाद शव उस के घर वालों को सौंप दिया गया.

पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पुलिस को पता चला कि वीर सिंह के सिर पर लाठी व धारदार हथियार से 4 वार किए गए थे. उस के हाथपैरों पर भी चोट के निशान पाए गए. यानी उस की काफी पिटाई की गई थी. हत्या के इस केस को सुलझाने के लिए एसपी राशि डोगरा डूडी ने एक स्पैशल पुलिस टीम बनाई.

## पुलिस ने जोरशोर से शुरु की जांच

स्पैशल टीम में विक्रम सिंह सांदू, एएसआई रतनलाल, जेठाराम, कुंभाराम, मुकेश, मोती सिंह, राजेश, पर्वत सिंह के साथ साइबर सेल के एक्सपर्ट को भी शामिल किया गया. इस स्पैशल टीम ने अपने मुखबिरों को भी इस मामले से संबंधित जानकारी जुटाने को कहा.

टीम ने मृतक की पत्नी दक्षा कंवर से पूछताछ की तो उस ने बताया कि 3 जून को दोपहर के समय कहीं गए थे, अगली सुबह सड़क किनारे उन की लाश पड़ी होने की सूचना मिली. दक्षा ने किसी से रंजिश होने की बात नकार दी.

इस पर पुलिस ने वीर सिंह और उस की पत्नी के मोबाइल फोन की काल डिटेल्स निकलवाई. दक्षा की काल डिटेल्स से पुलिस टीम को पता चला कि उस की एक फोन नंबर पर अकसर बातें होती रहती थीं. जांच में वह फोन नंबर जिला बाड़मेर के गांव आंशू निवासी महेंद्र सिंह का निकला.

उधर मुखबिर से पुलिस को यह भी जानकारी मिली कि महेंद्र सिंह 3 जून को वीर सिंह के घर के आसपास दिखाई दिया था, लेकिन वारदात के बाद वह न तो वीर सिंह के घर आया और न ही वारदात की जगह दिखाई दिया, जहां वीर सिंह की लाश बरामद हुई थी. जबकि वहां आसपास के गांवों के सैकड़ों लोग मौजूद थे.

इन बातों से पुलिस को महेंद्र पर शक होने लगा. पुलिस ने महेंद्र के फोन की भी

दक्षा कंवर जिस ने अपने प्रेमी महेंद्र (दाहिने) के साथ मिल कर पति की हत्या कर दी

काल डिटेल्स निकलवाई. महेंद्र की काल डिटेल्स से इस बात पुष्टि हो गई कि दक्षा और महेंद्र के बीच नजदीकी संबंध थे, पुलिस महेंद्र की तलाश में उस के घर पहुंची तो जानकारी मिली कि 4 जून को वह अपनी नौकरी पर गुजरात चला गया है.

उस के घर से गुजरात का पता लेने के बाद थानाप्रभारी ने एक पुलिस टीम महेंद्र सिंह को तलाशने के लिए गुजरात भेज दी. वहां वह पुलिस के हत्थे चढ़ गया. राजस्थान पुलिस महेंद्र को हिरासत में ले कर थाना रामसर ले आई.

उस से वीर सिंह की हत्या के बारे में सख्ती से पूछताछ की गई तो उस ने स्वीकार कर लिया कि वीर सिंह की हत्या में उस की पत्नी दक्षा कंवर भी शामिल थी. केस का खुलासा होने पर पुलिस ने चैन की सांस ली.

पूछताछ के लिए पुलिस वीर सिंह की पत्नी दक्षा कंवर को भी थाने ले आई. थाने में महेंद्र सिंह को देख कर दक्षा के चेहरे का रंग

उड़ गया. उस से भी उस के पति की हत्या के बारे में पूछा गया. उस के सामने सच्चाई बताने के अलावा अब कोई दूसरा रास्ता नहीं था. लिहाजा उस ने अपने पति वीर सिंह की हत्या करने की बात स्वीकार कर ली. पुलिस ने 48 घंटे के अंदर 6 जून, 2019 को केस का खुलासा कर दिया था.

Vikas Bhadauria

घटनास्थल पर आवश्यक कारवाई करती पुलिस

पुलिस ने अगले दिन 7 जून को आरोपी महेंद्र और दक्षा कंवर को बाड़मेर कोर्ट में पेश कर के 3 दिन की पुलिस रिमांड पर लिया. रिमांड अवधि में दोनों से वीर सिंह की हत्या के बारे में पूछताछ की गई तो हत्या की जो कहानी प्रकाश में आई, वह इस प्रकार थी—

वीर सिंह अपनी बीवी दक्षा कंवर को वह हर खुशी देना चाहता था, जो एक पत्नी चाहती है. वह खेतीकिसानी के अलावा मेहनत का हर काम कर के चार पैसे कमा कर बीवी को खुश रखना चाहता था. इसी वजह से वह अकसर गांव से बाहर रहता था. दिन में वह काम पर जाता और रात तक घर लौट आता था. घर पर पत्नी का प्यार पा कर उस की सारी थकान पल भर में काफूर हो जाती थी.

इस दंपति के दिन ऐसे ही हंसीखुशी से व्यतीत हो रहे थे. इसी दौरान महेंद्र सिंह के प्रवेश से उन दोनों के प्यार में बदलाव आ गया. घर का माहौल भी बदलने लगा. आंशू गांव निवासी महेंद्र सिंह वीर सिंह का हमउम्र दोस्त था. दोनों की अच्छीखासी दोस्ती थी. वीर सिंह महेंद्र को अपने भाई की तरह ही मानता था.

महेंद्र सिंह गुजरात में काम करता था. बाड़मेर ही नहीं, राजस्थान के हजारों लोग गुजरात के बड़ौदा, सूरत, अहमदाबाद, माणावदर, धौलका और अन्य शहरों में जिनिंग फैक्ट्रियों से ले कर कपड़े का कारोबार एवं हीरे की फर्मों में काम करते थे. महेंद्र भी हीरे की एक फर्म में काम करता था. जहां उसे अच्छे पैसे मिलते थे. बन संवर कर रहना महेंद्र का शौक था.

## वीर सिंह ने फोन पर पत्नी और दोस्त को मिलाया

करीब डेढ़ साल पहले एक रोज महेंद्र सिंह के पास वीर सिंह की पत्नी दक्षा कंवर का फोन आया. दक्षा ने उस से अपना फोन रिचार्ज कराने को कहा.

दरअसल दक्षा को अपना फोन रिचार्ज कराना था. उस ने अपने पति वीर सिंह को फोन किया. वीर सिंह ने उस से कहा कि वह महेंद्र को फोन कर के अपना फोन रिचार्ज कराने को कह दे. वह करा देगा. इसी के बाद दक्षा कंवर ने महेंद्र को फोन कर के अपना फोन रिचार्ज कराने को कहा.

महेंद्र ने कुछ ही देर में दक्षा कंवर का मोबाइल फोन रिचार्ज करवा दिया. फोन रिचार्ज कराने के बाद महेंद्र ने फोन कर के दक्षा कंवर से कहा, ''भाभीजी, जब भी आप को फोन रिचार्ज करवाना हो बेझिझक बता देना क्योंकि आप लोग ढाणी में रहते हो और वहां रिचार्ज की दुकान नहीं है. इसलिए आप परेशान हो जाती होंगी. मैं सब समझता हूं. इस के अलावा आप को किसी भी चीज की जरूरत हो तो बताना.''

''जरूर बताएंगे. आप को हम अपना ही मानते हैं. वैसे मेरी वजह से आप को कष्ट हुआ हो तो क्षमा चाहती हूं.'' दक्षा कंवर ने कहा.

''कैसी बात कर रही हैं आप भाभीजी. अपने लोगों का काम करने से कष्ट नहीं होता. बल्कि खुशी होती है.''

इस पहली बातचीत के बाद दक्षा कंवर और महेंद्र सिंह के बीच मोबाइल पर अकसर बातचीत होने लगी. थोड़े दिनों बाद यह हाल हो गया कि दिन में जब तक दक्षा और महेंद्र की बात नहीं हो जाती, उन्हें अच्छा नहीं लगता था. उन के बीच बातों का सिलसिला बढ़ता गया.

फिर एक दिन ऐसा भी आया, जब दोनों के बीच प्यार हो गया. प्यार हुआ तो इजहार होना भी स्वाभाविक ही था. जल्दी ही दोनों ने अपनेअपने प्यार का इजहार कर लिया. उस दिन के बाद महेंद्र धोखेबाज यार बन गया, तो दक्षा विश्वासघाती पत्नी. दोनों के बीच अवैध संबंध बन चुके थे. महेंद्र और दक्षा छिपछप कर तनमन से मिलने लगे.

काफी दिनों तक दोनों ने मिलने में सावधानी बरती. लाख कोशिशों के बावजूद उन के प्यार की भनक आखिर दक्षा के पड़ोस में रहने वाली महिलाओं को पता लग ही गई.

उन औरतों ने वीर सिंह को बता दिया था कि आजकल उस की गैरमौजूदगी में महेंद्र उस की ढाणी आता है और दक्षा कंवर उस के आगेपीछे घूमती है. वीर सिंह समझ गया कि धुआं वहीं से उठता है, जहां आग लगती है, कहीं कुछ तो गड़बड़ है.

थाना रामसर के प्रभारी ने घटनास्थल का निरीक्षण कर बाड़मेर की एसपी राशि डोगरा डूडी एवं एएसपी खींव सिंह भाटी को हालात से अवगत कराया. साथ ही निवेदन भी किया कि लोग एसपी साहब को ही मौके पर बुलाने की मांग कर रहे हैं.

Vikas Publication

एक बार वीर सिंह के मन में शक उभरा तो फिर गहराता चला गया. इस के बाद वीर सिंह ने दोनों पर निगाह रखनी शुरू की. आखिर एक रोज वीर सिंह ने महेंद्र और दक्षा को रंगरलियां मनाते हुए पकड़ ही लिया. तब वीर सिंह ने महेंद्र को खूब खरीखोरी सुनाई और भविष्य में उस के घर आने पर पाबंदी लगा दी. महेंद्र के जाने के बाद उस ने पत्नी की पिटाई की.

वीर सिंह को बीवी की बेवफाई से गहरा आघात लगा. उस ने सपने में भी नहीं सोचा था कि उस का दोस्त आस्तीन का सांप निकलेगा. वीर सिंह ने पत्नी को चेतावनी दी कि अगर महेंद्र के साथ फिर कभी बात करते देख भी लिया तो वह दोनों को जिंदा नहीं छोड़ेगा.

पति की चेतावनी से दक्षा डर गई. उस ने पति से वादा किया कि भविष्य में वह कभी भी महेंद्र से नहीं मिलेगी. दक्षा ने पति से वादा जरूर कर लिया था, लेकिन वह अपने वादे पर कायम नहीं रही. वैसे भी वीर सिंह और दक्षा कंवर के रिश्ते में दरार पड़ चुकी थी, जो वक्त के साथ बढ़ती गई.

दक्षा ने कुछ दिन बाद महेंद्र से फोन पर बातचीत करनी शुरू कर दी. इस बात की जानकारी उस के पति वीर सिंह को मिल गई थी. इस बात को ले कर वीर सिंह अकसर दक्षा की पिटाई कर के उसे सुधारने की कोशिश करता था. पर पति की मारपीट से वह सुधरने के बजाए ढीठ होती गई.

पति की आए दिन की पिटाई से दक्षा परेशान हो गई थी. एक दिन दक्षा ने महेंद्र को सारी बातें बता कर कहा कि वीर सिंह उसे किसी रोज मार डालेगा.

अब वह उसे फूटी आंख नहीं देखना चाहती. इसलिए तय कर लिया है कि घर में पति रहेगा या फिर मैं. उस ने महेंद्र से कहा कि अब वह उसे कहीं दूर ऐसी जगह ले जाए, जहां उन दोनों के अलावा कोई न हो.

''ठीक कह रही हो तुम, जब तक वीर सिंह जिंदा है, तब तक हम चैन से मिल भी नहीं सकते. इस बारे में कोई उपाय तो करना ही पड़ेगा.'' महेंद्र बोला.

वीर सिंह के चौकस रहने की वजह से दक्षा कंवर और महेंद्र सिंह को मिलने का

एसपी राशि डोगरा डूडी

मौका नहीं मिल पाता था. आखिर 3 जून को उन्हें यह मौका मिल गया. वीर सिंह उस दिन कहीं गया था. दक्षा ने फोन कर के यह जानकारी महेंद्र को दे दी.

महेंद्र सिंह अपनी प्रेमिका दक्षा कंवर से मिलने उस के घर साढो की ढाणी जा पहुंचा. दोनों कई हफ्ते बाद मिले थे, लिहाजा दोनों बैठ कर बतियाने लगे. वे बातों में इतने मशगूल हो गए कि उन्हें ध्यान ही नहीं रहा कि वीर सिंह ढाणी में कब आ गया. जैसे ही दक्षा को आभास हुआ कि कोई ढाणी में है तो वह बदहवास सी आंगन में आ खड़ी हुई.

वीर सिंह कमरे की तरफ बढ़ गया. जहां से दक्षा बाहर आई थी. वीर सिंह को देख कर कमरे में मौजूद महेंद्र ने छिपने की कोशिश की, मगर वीर सिंह की नजरों से वह बच न सका.

महेंद्र पर नजर पड़ते ही वीर सिंह गुस्से से लाल हो कर बोला, ''तुझे मैं ने घर आने से मना किया था, मगर तू नहीं माना. मैं आज तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा.'' कह कर वीर सिंह उस से भिड़ गया.

दोनों गुत्थमगुत्था हो गए तभी दक्षा कंवर भी वहां आ गई. वह भी प्रेमी का पक्ष लेते हुए पति को पीटने लगी. महेंद्र ने वहां रखा पाइप और दक्षा कंवर ने कुल्हाड़ी उठा ली. दोनों वीर सिंह पर टूट पड़े. वीर सिंह सिर पर कुल्हाड़ी का वार झेल नहीं सका और बेहोश हो कर गिर पड़ा.

इस के बाद भी उन दोनों के हाथ नहीं रुके. कुल्हाड़ी के कई वार होने से वीर सिंह लहूलुहान हो गया और कुछ ही देर में उस की मौत हो गई.

वीर सिंह के मरने के बाद दोनों डर गए. उन्होंने शव को घसीट कर अंदर छिपा दिया. फिर खून साफ किया. उस के बाद दोनों शव को छिपाने का उपाय खोजते रहे. आधी रात के बाद उन्होंने वीर सिंह का शव बैलगाड़ी में डाला और ढाणी से करीब एक किलोमीटर दूर सड़क किनारे यह सोच कर फेंक आए कि देखने वालों को लगेगा कि वीर सिंह की एक्सीडेंट में मौत हुई है.

शव फेंक कर महेंद्र और दक्षा वापस ढाणी आए और बैलगाड़ी पर रात में ही वार्निश कर दी ताकि खून के धब्बे दिखाई न दें.

घर में लगे खून को साफ करने के बाद दक्षा ने आंगन गोबर से लीप दिया. दिन निकलने से पहले ही महेंद्र अपने गांव आंशू लौट गया. फिर उसी दिन गांव से गुजरात चला गया.

सुबह होने पर 4 जून को जब लोगों ने सड़क किनारे वीर सिंह की लाश देखी तो लोगों की भीड़ जमा हो गई. इस के बाद पुलिस को खबर दी गई. पुलिस ने महेंद्र और दक्षा कंवर की निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त कुल्हाड़ी व पाइप भी बरामद कर लिया. साथ ही दोनों के खून सने कपड़े भी बरामद हो गए.

उन दोनों की सोच थी कि वीर सिंह की मौत के बाद उन्हें कोई जुदा नहीं कर पाएगा. दोनों ऐशोआराम से जीवन गुजारेंगे. मगर उन की यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी. रिमांड अवधि समाप्त होने पर पुलिस ने दक्षा कंवर और महेंद्र सिंह को पुनः बाड़मेर कोर्ट में पेश किया जहां से दोनों को जेल भेज दिया गया. ●

— कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

**कानपुर, उत्तर प्रदेश**

# आग बनी शोला

❑ सुरेशचंद्र मिश्र

उस दिन जून 2019 की 10 तारीख थी. रात के 10 बज रहे थे. कानपुर के थाना अनवरगंज के थानाप्रभारी रमाकांत पचौरी क्षेत्र में गश्त पर थे. गश्त करते हुए जब वह डिप्टी पड़ाव चौराहा पहुंचे, तभी उन के मोबाइल पर एक काल आई. उन्होंने काल रिसीव की तो दूसरी ओर से आवाज आई, ''सर, मैं गुरुवतउल्ला पार्क के पास से पप्पू बोल रहा हूं. हमारे घर के सामने पूर्व सभासद नफीसा बाजी की बेटी शहला परवीन किराए के मकान में रहती है. उस के घर के बाहर तो ताला बंद है, लेकिन घर के अंदर से चीखनेचिल्लाने की आवाजें आ रही हैं. लगता है, उस घर के अंदर किसी की जान खतरे में है. आप जल्दी आ जाइए.''

डिप्टी पड़ाव से गुरुवतउल्ला पार्क की दूरी ज्यादा नहीं थी. अतः थानाप्रभारी रमाकांत पचौरी चंद मिनटों बाद ही बताई गई जगह पहुंच गए. वहां एक मकान के सामने भीड़ जुटी थी. भीड़ में से एक व्यक्ति निकल कर बाहर आया और बोला, ''सर, मेरा नाम पप्पू है और मैं ने ही आप को फोन किया था. अब घर के अंदर से चीखनेचिल्लाने की आवाजें आनी बंद हो चुकी हैं.''

रमाकांत पचौरी ने सहयोगी पुलिसकर्मियों की मदद से उस मकान का ताला तोड़ा फिर घर के अंदर गए. कमरे में पहुंचते ही पचौरी सहम गए. क्योंकि कमरे के फर्श पर एक महिला की खून से लथपथ लाश पड़ी थी. पड़ोसियों ने बताया कि यह तो शहला परवीन है. इस की हत्या किस ने कर दी.

शव के पास ही खून सनी ईंट तथा एक मोबाइल फोन पड़ा था. लग रहा था कि उसी ईंट से सिर व मुंह पर प्रहार कर बड़ी बेरहमी से उस की हत्या की गई थी. शहला की उम्र यही कोई 35 साल के आसपास थी. पुलिस ने लाश के पास पड़ा फोन सबूत के तौर पर सुरक्षित कर लिया.

घनी आबादी वाले मुसलिम इलाके में पूर्व पार्षद नफीसा बाजी की बेटी शहला परवीन

शहला: परिवार नहीं प्रेमी आया रास

रेहान: प्रेमिका को छोड़ भाग निकला

की हत्या की सूचना थानाप्रभारी ने पुलिस अधिकारियों को दी तो कुछ ही देर में एसएसपी अनंतदेव तिवारी, एसपी ( क्राइम ) राजेश कुमार, एसपी ( पूर्वी ) राजकुमार, सीओ ( कलेक्टरगंज ) श्वेता सिंह तथा सीओ ( अनवरगंज ) सैफुद्दीन भी घटनास्थल पर पहुंच गए.

एसएसपी अनंतदेव ने फारैंसिक टीम को भी बुलवा लिया. बढ़ती भीड़ तथा उपद्रव की आशंका को देखते हुए एसएसपी ने रायपुरवा, चमनगंज तथा बेकनगंज थाने की फोर्स भी बुलवा ली. पूरे क्षेत्र को उन्होंने छावनी में तब्दील कर दिया.

पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया तो वह भी आश्चर्यचकित रह गए. शहला परवीन की हत्या बड़ी ही बेरहमी से की गई थी. उस के शरीर पर लगी चोटों के निशानों से स्पष्ट था कि हत्या से पहले शहला ने हत्यारों से अपने बचाव के लिए संघर्ष किया था.

कमरे के अंदर रखी अलमारी और बक्सा खुला पड़ा था, साथ ही सामान भी बिखरा हुआ था. देखने से ऐसा लग रहा था कि हत्या के बाद हत्यारों ने लूटपाट भी की थी. शहला का शव जिस कमरे में पड़ा था, उस का एक दरवाजा पीछे की ओर गली में भी खुलता था.

पुलिस अधिकारियों ने अनुमान लगाया कि वारदात को अंजाम देने के बाद हत्यारे पीछे वाले दरवाजे से ही फरार हुए होंगे और

पति शाकिर ने पत्नी शहला को सुधरने का मौका दिया. लेकिन सुधरने के बजाए शहला ने क्षेत्र के ही दूसरे लड़के को फांस लिया. इस के बाद...

छायांकन: मॉडलिंग

Vikas Bhadu

इसी रास्ते से अंदर आए होंगे. पुलिस अधिकारियों के मुआयने के बाद फोरैंसिक टीम ने भी जांच की और साक्ष्य जुटाए. टीम ने अलमारी, बक्सा, ईंट आदि से फिंगरप्रिंट भी उठाए.

## भाई ने बताए हत्यारों के नाम

अब तक सूचना पा कर मृतका का भाई तारिक शादाब भी वहां आ गया था. बहन की लाश देख कर वह फफककफफक कर रोने लगा. थानाप्रभारी ने उसे धैर्य बंधाया फिर पूछताछ की. तारिक शादाब ने बताया कि उस की बहन की हत्या उस के पति मोहम्मद शाकिर और बेटों शाकिब व अर्सलान उर्फ कल्लू ने की है. उस ने कहा कि हत्या में शाकिर का बहनोई गुड्डू भी शामिल है, जो कुख्यात अपराधी है.

पुलिस अधिकारियों ने पड़ोसी पप्पू से पूछताछ की. उस ने भी बताया कि शहला के पति व बेटों को उस ने शहला के घर के आसपास देखा था. उस ने उन्हें टोका भी था. तब उन्होंने उसे धमकी दी थी कि टोकाटाकी करोगे तो परिणाम भुगतोगे.

उन की धमकी से वह डर गया था. पप्पू ने भी शहला के पति व बेटों पर शक जाहिर किया. कुछ अन्य लोगों ने बताया कि शहला का पति उस के चरित्र पर शक करता था. शायद अवैध संबंधों में ही उस के पति ने उसे हलाल कर दिया है.

अब तक हत्या को ले कर वहां मौजूद भीड़ उत्तेजित होने लगी थी. अतः पुलिस अधिकारियों ने आननफानन में शहला परवीन के शव को पोस्टमार्टम के लिए लाला लाजपतराय चिकित्सालय भिजवा दिया. बवाल व तोड़फोड़ की आशंका को देखते हुए घटनास्थल के आसपास पुलिस तैनात कर दी.

चूंकि मृतका शहला परवीन के भाई तारिक शादाब ने अपने बहनोई व भांजे पर हत्या का शक जाहिर किया था, अतः थानाप्रभारी रमाकांत पचौरी ने तारिक शादाब की तरफ से भादवि की धारा 302 के तहत मोहम्मद शाकिर, उस के दोनों बेटे शाकिब, अर्सलान तथा शाकिर के बहनोई गुड्डू हलवाई के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली.

मृतका शहला के भाई तारिक से पूछताछ करती पुलिस

रिपोर्ट दर्ज होने के बाद हत्यारोपियों को पकड़ने के लिए एसएसपी अनंतदेव ने एसपी (क्राइम) राजेश कुमार की अगुवाई में एक पुलिस टीम गठित कर दी. टीम में थानाप्रभारी रमाकांत, सीओ (अनवरगंज) सैफुद्दीन, एसआई राम सिंह, देवप्रकाश, कांस्टेबल अतुल कुमार, दयाशंकर सिंह, राममूर्ति यादव, मोहम्मद असलम तथा अब्दुल रहमान को शामिल किया गया.

पुलिस टीम ने सब से पहले घटनास्थल का निरीक्षण किया फिर मृतका के भाई तारिक शादाब से विस्तृत जानकारी हासिल कर उस का बयान दर्ज किया. पुलिस ने मृतका के पड़ोसी पप्पू से भी कुछ अहम जानकारियां हासिल कीं. इस के बाद पुलिस टीम मृतका शहला परवीन की मां नफीसा बाजी (पूर्व पार्षद) के घर दलेलपुरवा पहुंची. नफीसा बाजी बीमार थीं. बेटी की हत्या की खबर सुन कर उन की तबीयत और बिगड़ गई. पुलिस ने जैसेतैसे कर के उन का बयान दर्ज किया.

चूंकि रिपोर्ट नामजद थी, इसलिए पुलिस ने आरोपियों की तलाश के लिए उन के घर दबिश दी तो वह सब घर से फरार मिले. पुलिस टीम ने उन्हें तलाशने के लिए उन के संभावित ठिकानों पर ताबड़तोड़ दबिश दी. लेकिन आरोपी पकड़ में नहीं आए. तब इंसपेक्टर रमाकांत पचौरी ने अपने कुछ खास मुखबिरों को आरोपियों की टोह में लगा दिया और खुद भी उन्हें तलाशने में लगे रहे.

12 जून, 2019 की दोपहर को मुखबिर ने थानाप्रभारी को आरोपियों के बारे में खास सूचना दी. मुखबिर की सूचना पर थानाप्रभारी पुलिस टीम के साथ तुरंत हमराज कौंप्लैक्स पहुंच गए.

जैसे ही उन की जीप रुकी तो वहां से 3 लोग चाचा नेहरू अस्पताल की ओर भागे, लेकिन पुलिस टीम ने उन को कुछ ही दूरी पर धर दबोचा. उन से पूछताछ की तो उन्होंने अपने नाम मोहम्मद शाकिर, शाकिब तथा अर्सलान उर्फ कल्लू बताए. इन में शाकिब तथा अर्सलान शाकिर के बेटे थे. पुलिस उन तीनों को थाने ले आई.

उन की गिरफ्तारी की खबर सुन कर एसपी (क्राइम) राजेश कुमार और सीओ सैफुद्दीन भी थाने पहुंच गए.

थाने में एसपी (क्राइम) राजेश कुमार तथा सीओ सैफुद्दीन ने उन तीनों से शहला परवीन की हत्या के संबंध में सख्ती से पूछताछ की तो वे टूट गए और उन्होंने हत्या का जुर्म कबूल कर लिया.

मोहम्मद शाकिर ने बताया कि उस की पत्नी शहला परवीन चरित्रहीन थी. उस की बदलचलनी की वजह से समाज में उस की इज्जत खाक में मिल गई थी. हम ने उसे बहुत समझाया, नहीं मानी तो अंत में उस की हत्या करने के लिए मजबूर होना पड़ा. हम तो उस के आशिक रेहान को भी मार डालते, लेकिन वह बच कर भाग गया.

चूंकि मोहम्मद शाकिर तथा उस के बेटों

Vikas Bhadu

घटनास्थल पर शहला के घर वाले

ने हत्या का जुर्म कबूल कर लिया था. अत: पुलिस ने उन तीनों को हत्या के जुर्म में विधिसम्मत गिरफ्तार कर लिया. पुलिस जांच तथा अभियुक्तों के बयानों के आधार पर एक ऐसी औरत की कहानी सामने आई, जिस ने बदचलन हो कर न सिर्फ अपने शौहर से बेवफाई की बल्कि बेटों को भी समाज में शर्मसार किया.

उत्तर प्रदेश के कानपुर महानगर के अनवरगंज थानांतर्गत एक मोहल्ला है दलेलपुरवा. इसी मोहल्ले में हरी मसजिद के पास मोहम्मद याकूब अपने परिवार के साथ रहते थे. उन के परिवार में पत्नी नफीसा बाजी के अलावा 2 बेटे तारिक शादाब, असलम और एक बेटी शहला परवीन थी. मोहम्मद याकूब का कपड़े का व्यापार था. व्यापार से होने वाली आमदनी से वह अपने परिवार का भरणपोषण करते थे. व्यापार में उन के दोनों बेटे भी उन का सहयोग करते थे.

मोहम्मद याकूब जहां व्यापारी थे, वहीं उन की पत्नी नफीसा बाजी की राजनीति में दिलचस्पी थी. वह समाजवादी पार्टी की सक्रिय सदस्य थीं. दलेलपुरवा क्षेत्र से उन्होंने 2 बार पार्षद का चुनाव लड़ा, पर हार गई थीं. लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी. वह पार्टी के साथसाथ समाजसेवा में जुटी रहीं. तीसरी बार जब उन्हें पार्टी से टिकट मिला तो वह पार्षद का चुनाव लड़ीं. इस बार वह जीत कर दलेलपुरवा क्षेत्र की पार्षद बन गईं.

नफीसा बाजी की बेटी शहला परवीन भी उन्हीं की तरह तेजतर्रार थी. वैसे तो शहला बचपन से ही खूबसूरत थी, लेकिन जब वह जवान हुई तो वह पहले से ज्यादा खूबसूरत दिखने लगी थी. जब वह बनसंवर कर घर से निकलती तो देखने वाले देखते ही रह जाते. शहला पढ़ने में भी तेज थी. उस ने फातिमा स्कूल से हाईस्कूल तथा जुबली गर्ल्स इंटर कालेज से इंटरमीडिएट की परीक्षा पास कर ली थी.

शहला शादी लायक हो चुकी थी, मोहम्मद याकूब उस का निकाह कर उसे मानमर्यादा के साथ ससुराल भेजना चाहते थे. एक दिन मोहम्मद याकूब ने अपने पड़ोसी जावेद खां से बेटी के रिश्ते के बारे में बात की तो वह उत्साह में भर कर बोला, ''याकूब भाई, मेरी जानपहचान में एक अच्छा लड़का है मोहम्मद शाकिर. वह चमनगंज में रहता है और कपड़े का व्यवसाय करता है. जिस दिन फुरसत में हो, मेरे साथ चमनगंज चल कर उसे देख लेना. सब कुछ ठीक लगे तो बात आगे बढ़ाएंगे.''

## शाकिर से हो गया निकाह

एक सप्ताह बाद मोहम्मद याकूब जावेद के साथ चमनगंज गए. मोहम्मद शाकिर साधारण शक्ल वाला हंसमुख युवक था. उस में आकर्षण जैसी कोई बात नहीं थी. परंतु वह कमाऊ था, उस का परिवार भी संपन्न था. इस के विपरीत शहला परवीन चंचल व खूबसूरत थी.

कहीं बेटी गलत रास्ते पर न चल पड़े, सोचते हुए मोहम्मद याकूब ने शाकिर को अपनी बेटी शहला परवीन के लिए पसंद कर लिया. इस बारे में उन्होंने बेटी की राय लेनी भी जरूरी नहीं समझी. इस के बाद आगे की बातचीत शुरू हो गई. बातचीत के बाद दोनों पक्षों की सहमति से रिश्ता पक्का हो गया.

तय तारीख को मोहम्मद शाकिर की बारात आई, निकाह हुआ और शहला परवीन शाकिर के साथ विदा कर दी गई. यह सन 1998 की बात है.

सुहागरात को शहला परवीन ने अपने शौहर शाकिर को देखा तो उस के अरमानों पर पानी फिर गया. पति मोहमद शाकिर किसी भी तरह से उसे पसंद नहीं था. उस रात वह दिखावे के तौर पर खुश थी, पर मन ही मन कुढ़ रही थी.

सप्ताह भर बाद शहला का भाई तारिक उसे लेने आ पहुंचा. तभी मौका देख कर शाकिर ने शहला से कहा, ''दुलहन का मायके जाना रिवाज है. रिवाज के मुताबिक तुम्हें मायके भेजना ही पड़ेगा. खैर तुम जाओ. तुम्हारे बिना किसी तरह हफ्ता 10 दिन रह लूंगा.''

शहला परवीन ने शौहर को घूर कर देखा और कर्कश स्वर में बोली, ''अपनी यह मनहूस सूरत ले कर मेरे मायके मत आना. नहीं तो तुम्हें देख कर मेरी सहेलियां हंसेंगी. कहेंगी देखो शहला जैसी हूर का लंगूर शौहर आया है.''

यह सुन कर शाकिर को लगा, जैसे किसी ने उस के कानों में गरम शीशा उड़ेल दिया हो. वह पत्नी को देखता रहा और वह भाई के साथ मायके चली गई. 8-10 दिन बाद जब शहला को विदा कर लाने की तैयारी शुरू हुई तो शाकिर ने घर वालों के साथ ससुराल जाने से इनकार कर दिया. तब घर वाले ही शहला को विदा करा लाए.

शाकिर को विश्वास था कि ससुराल आ कर शहला शिकायत करेगी कि सब आए पर तुम नहीं आए. लेकिन ऐसा कुछ कहने के बजाए शहला ने उलटा शौहर की छाती में शब्दों का भाला घोंप दिया, ''अच्छा हुआ तुम नहीं आए, वरना तमाशा बन जाते और शर्मिंदा मुझे होना पड़ता.''

छाती में शब्दों के शूल चुभने के बावजूद शाकिर चुप रहा. उस का विचार था कि वह अपने प्रेम से शहला का दिल जीत लेगा और खुदबखुद सब ठीक हो जाएगा. शहला को उस की जो शक्ल बुरी लगती है, वह अच्छी लगने लगेगी.

Vikas Rajput

## शाकिर ने की दिल जीतने की कोशिश

शाकिर पत्नी को प्यार से जीतने की कोशिश करता रहा और शहला उसे दुत्कारती रही. इस तरह प्यार और नफरत के बीच उन की गृहस्थी की गाड़ी ऐसे ही चलती रही.

समय बीतता गया और शहला 2 बेटों शाकिब व अर्सलान की मां बन गई. शाकिर को विश्वास था कि बच्चों के जन्म के बाद शहला के व्यवहार में कुछ बदलाव जरूर आएगा, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ. उस का बर्ताव पहले जैसा ही रहा.

वह बच्चों की परवरिश पर भी ज्यादा ध्यान नहीं देती थी और अपनी ही दुनिया में खोई रहती थी. उसे घर में कैद रहना पसंद न था, इसलिए वह अकसर या तो मायके या फिर बाजार घूमने निकल जाती थी. शाकिर रोकटोक करता तो वह उस से उलझ जाती और अपने भाग्य को कोसती.

शहला परवीन की अपने शौहर से नहीं पटती थी. इसलिए दोनों के बीच दूरियां बनी रहती थीं. शहला का मन पुरुष सुख प्राप्त करने के लिए भटकता रहता था, लेकिन उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था.

उन्हीं दिनों शहला के जीवन में मुबीन ने प्रवेश किया. मुबीन अपराधी प्रवृत्ति का था. अनवरगंज क्षेत्र में उस की तूती बोलती थी. व्यापारी वर्ग तो उस के साए से भी डरता था.

वह व्यापारियों से हफ्ता वसूली करता था. शाकिर का कपड़े का व्यवसाय था. मुबीन शाकिर से भी रुपए वसूलता था. शहला परवीन मुबीन को अच्छी तरह जानती थी लेकिन शौहर के रहते वह उस के सामने नहीं आती थी.

एक रोज शहला घर में अकेली थी, तभी मुबीन उस के घर में बेधड़क दाखिल हुआ और दबे पांव जा कर शहला के पीछे खड़ा हो गया. शहला किसी काम में ऐसी व्यस्त थी

शहला: जरूरत पति की नहीं प्रेमी की थी

मोहम्मद शाकिर: मजबूर पति

कि उसे भनक तक नहीं लगी कि कोई उस के पीछे आ खड़ा हुआ है. शहला तब चौंकी जब मुबीन ने कहा, ''शहला भाभी नमस्ते.''

शहला फौरन पलटी. मुबीन को देख कर उस का चेहरा फूल की तरह खिल गया. वह अपने चेहरे पर मुसकान बिखरते हुए बोली, ''नमस्ते मुबीन भाई, तुम कब आए, मुझे पता ही नहीं चला. बताओ, कैसे आना हुआ ? तुम्हारे भैया तो घर पर हैं नहीं.''

''भैया नहीं हैं तो क्या हुआ. क्या भाभी से मिलने नहीं आ सकता ?'' मुबीन भी हंसते हुए बोला.

''क्यों नहीं ?'' कहते हुए शहला उस के पास बैठ कर बतियाने लगी. बातों ही बातों में मुबीन बोला, ''भाभी, एक बात कहूं, बुरा तो नहीं मानोगी.''

''एक नहीं चार कहो, मैं बिलकुल बुरा नहीं मानूंगी.'' शहला ने कहा.

''भाभी, कसम से तुम इतनी खूबसूरत हो कि कितना भी देखूं, जी नहीं भरता.'' वह बोला.

''धत...'' कहते हुए शहला के गालों पर लाली उतर आई.

कुछ देर बतियाने के बाद मुबीन वहां से चला गया.

इस के बाद मुबीन का शहला के घर आनेजाने लगा. दोनों एकदूसरे की बातों में रमने लगे. शहला और मुबीन हमउम्र थे, जबकि शहला का पति शाकिर उम्र में उस से 6-7 साल बड़ा था. मुबीन शरीर से हृष्टपुष्ट तथा स्मार्ट था. क्षेत्र में उस की हनक भी थी, सो शहला उस से प्यार करने लगी. वह सोचने लगी कि काश उसे मुबीन जैसा छबीला पति मिलता.

मुबीन भी शहला को चाहने लगा था. आतेजाते मुबीन ने शहला से हंसीमजाक के माध्यम से अपना मन खोलना शुरू किया तो शहला भी खुलने लगी. आखिर एक दिन दोनों के बीच नाजायज संबंध बन गए. इस के बाद जब भी मौका मिलता, दोनों शारीरिक भूख मिटा लेते. शहला को अब पति की कमी नहीं खलती थी.

शहला और मुबीन के नाजायज रिश्ते ने रफ्तार पकड़ी तो पड़ोसियों के कान खड़े हो गए. एक आदमी ने शाकिर को टोका, ''शाकिर भाई, तुम दिनरात कमाई में लगे रहते हो. घर की तरफ भी ध्यान दिया करो.''

''क्यों, मेरे घर को क्या हुआ ? साफसाफ बताओ न.'' शाकिर ने पूछा.

''साफसाफ सुनना चाहते हो तो सुनो. तुम्हारे घर पर बदमाश मुबीन का आनाजाना है. तुम्हारी लुगाई से उस का चक्कर चल रहा है.'' उस ने सब बता दिया.

उस की बात सुन कर शाकिर का माथा

Vikas Bhadu

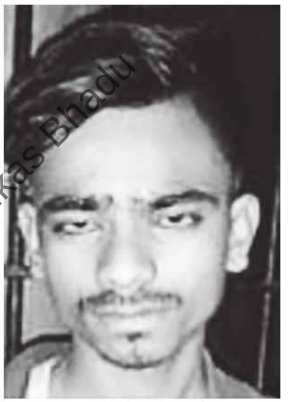

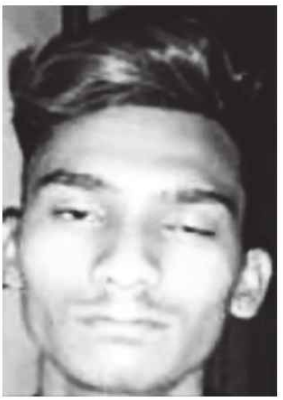

बदनामी सहन नहीं हुई: अर्सलान और शाकिब

ठनका. जरूर कोई चक्कर है. अफवाहें यूं ही नहीं उड़तीं. उन में कुछ न कुछ सच्चाई जरूर होती है.

शाम को शाकिर जब घर लौटा तो उस ने पत्नी से पूछा, ''शहला, मैं ने सुना है मुबीन तुम से मिलने घर आता है. वह भी मेरी गैरमौजूदगी में.''

शहला न डरी न घबराई बल्कि बेधड़क बोली, ''मुबीन आता है पर मुझ से नहीं तुम से मिलने आता है. तुम नहीं मिलते तो चला जाता है.''

''तुम उसे मना कर दो कि वह घर न आया करे. उस के आने से मोहल्ले में हमारी बदनामी होती है.''

''मुझ से क्यों कहते हो, तुम खुद ही उसे क्यों नहीं मना कर देते.''

''ठीक है, मना कर दूंगा.''

इस के बाद शाकिर मुबीन से मिला और उस ने उस से कह दिया कि वह उस की गैरमौजूदगी में उस के घर न जाया करे.

शाकिर की बात सुनते ही मुबीन उखड़ गया. उस ने उसे खूब खरीखोटी सुनाई. शाकिर डर गया और अपनी जुबान बंद कर ली. मुबीन बिना रोकटोक उस के घर आता रहा और शहला के साथ मौजमस्ती करता रहा.

मुबीन ने जब शाकिर का सुखचैन छीन लिया तब उस ने अपने रिश्तेदारों को घर बुलाया और इस समस्या से निजात पाने के लिए विचारविमर्श किया. आखिर में तय हुआ कि इज्जत तभी बच सकती है, जब मुबीन को ठिकाने लगा दिया जाए.

इस के बाद शाकिर के भाई, शहला के भाई और मामा ने मिल कर दिनदहाड़े खलवा में मुबीन की हत्या कर दी. हत्या के आरोप में सभी को जेल जाना पड़ा. यह बात सन 2012 की है.

इस घटना के बाद करीब 4 साल तक घर में शांति रही. शहला का शौहर के प्रति व्यवहार भी सामान्य रहा. अब तक शहला के दोनों बेटे शाकिब और अर्सलान भी जवान हो गए थे. बापबेटे रोजाना सुबह 10 बजे घर से निकलते तो फिर देर शाम ही घर लौटते थे. कपड़ों की बिक्री का हिसाबकिताब लगा कर, खाना खा कर वे सो जाते थे.

शहला परवीन न शौहर के प्रति वफादार थी और न ही उसे बेटों से कोई लगाव था. वह तो खुद में ही मस्त रहती थी. बनसंवर कर रहना और घूमनाफिरना उस की दिनचर्या में शामिल था. उस का बनावशृंगार देख कर कोई कह नहीं सकता था कि वह 2 जवान बच्चों की मां है.

शहला को घर में सभी सुखसुविधाएं हासिल थीं पर शौहर की बांहों का सुख प्राप्त नहीं हो पाता था. शाकिर अपने धंधे में लगा रहता था. काम की वजह से बीवी से भी दूरियां बनी रहती थीं. दूसरी ओर शहला उसे पसंद भी नहीं करती थी. वह तो किसी नए प्रेमी की तलाश में थी. हालांकि इस खेल में उसे शौहर तथा जवान बच्चों का डर लग रहा था.

उसी दौरान उस की नजर रेहान पर पड़ी. रेहान गम्मू खां के अहाते में रहता था और प्रौपर्टी डीलिंग का काम करता था. वह उस का दूर का रिश्तेदार भी था. उस का जबतब शहला के यहां आनाजाना लगा रहा था. वह हैंडसम था.

शहला परवीन का दिल रेहान पर आया तो वह उसे खुला आमंत्रण देने लगी, आंखों के तीरों से उसे घायल करने लगी. खुला आमंत्रण पा कर रेहान भी उस की ओर आकर्षित होने लगा. जब भी उसे मौका मिलता, शहला के साथ हंसीमजाक और छेड़छाड़ कर लेता. शहला उस की हंसीमजाक का जरा भी बुरा नहीं मानती थी. दोनों के पास एकदूसरे का मोबाइल नंबर था. जल्दी ही दोनों की मोबाइल पर प्यारभरी बातें होने लगीं.

आदमी हो या औरत, मोहब्बत होते ही उस का मन कल्पना की ऊंची उड़ान भरने लगता है. रेहान और शहला का भी यही हाल था. दोनों मोहब्बत की ऊंची उड़ान भरने लगे थे. आखिर एक रोज रेहान ने चाहत का इजहार किया तो शहला ने इकरार करने में जरा भी देर नहीं लगाई. इतना ही नहीं, शहला ने उसी समय अपनी बांहों का हार रेहान के गले में डाल दिया.

इस के बाद दोनों के बीच शारीरिक रिश्ता बनते देर नहीं लगी. एक बार अवैध रिश्ता बना तो उस का दायरा बढ़ता गया. शहला अब पति की कमी प्रेमी से पूरी करने लगी. उसे जब भी मौका दिखता, फोन कर रेहान को अपने यहां बुला लेती और दोनों रंगरलियां मनाते.

कभीकभी रेहान शहला को होटल में भी ले जाता था, जहां वे मौजमस्ती करते. शहला परवीन रेहान के साथ घूमनेफिरने भी जाने लगी. रेहान उसे कभी बाहर पार्क में ले जाता तो कभी तुलसी उपवन. वहां दोनों खूब बतियाते.

पर एक दिन शाकिर ने शहला और रेहान

को अपने ही घर में आपत्तिजनक अवस्था में देख लिया. वे दोनों एकदूसरे की बांहों में इस कदर मस्त थे कि उन्हें खबर ही नहीं हुई कि दरवाजे पर खड़ा शाकिर उन की कामलीला देख रहा है.

घर में अनाचार होते देख शाकिर का खून खौल उठा. उस ने दोनों को ललकारा तो रेहान सिर पर पैर रख कर भाग गया लेकिन शहला कहां जाती. शाकिर ने सारा गुस्सा उसी पर उतारा. उस ने पीटपीट कर पत्नी को अधमरा कर दिया.

शाकिर ने शहला को रंगेहाथों पकड़ने की जानकारी अपने दोनों बेटों को दी तो बेटों ने भी मां को खूब लताड़ा. शौहर और बेटों ने शहला को जलील किया. इस के बावजूद उस ने रेहान का साथ नहीं छोड़ा.

एसपी (क्राइम) राजेश कुमार

सीओ सैफुद्दीन

कुछ दिनों बाद ही वह घर से बाहर रेहान से मिलने लगी. चोरीछिपे मिलने की जानकारी शाकिर को हुई तो उस ने फिर से शहला की पिटाई की. इस के बाद तो यह सिलसिला ही चल पड़ा.

जब भी शाकिर को दोनों के मिलने की जानकारी होती, उस दिन शहला की शामत आ जाती. लेकिन पिटाई के बावजूद जब शहला ने रेहान का साथ नहीं छोड़ा तो आजिज आ कर शाकिर ने शहला को तलाक दे दिया. तलाक के मामले में बेटों ने बाप का ही साथ दिया. यह बात जनवरी, 2018 की है.

शौहर से तलाक मिलने के बाद शहला कुछ महीने मायके दलेलपुरवा में रही. उस के बाद उस ने अनवरगंज थाना क्षेत्र के डिप्टी पड़ाव में गुरुवतउल्ला पार्क के पास किराए पर मकान ले लिया और उसी में रहने लगी. इस मकान में उस का प्रेमी रेहान भी आने लगा. शहला को अब कोई रोकनेटोकने वाला नहीं था, सो वह प्रेमी के साथ खुल कर मौज लेने लगी.

रेहान के पास पैसों की कमी नहीं थी, सो वह शहला पर दिल खोल कर खर्च करता था. प्रेमी के आनेजाने की जानकारी पड़ोसियों को न हो, इस के लिए वह मकान के आगे वाले गेट पर ताला लगाए रखती थी और पीछे के दरवाजे से आतीजाती थी. इसी पीछे वाले दरवाजे से उस का प्रेमी रेहान भी आता था.

शहला और रेहान के अवैध संबंधों की जानकारी शाकिर के घर वालों व नातेरिश्तेदारों को भी थी. इस से पूरी बिरादरी में उस की बदनामी हो रही थी. उस के दोनों बेटे शादी योग्य थे. पर मां शहला की चरित्रहीनता के कारण बेटों का रिश्ता नहीं हो पा रहा था. आखिर आजिज आ कर शाकिर ने शहला और रेहान को सबक सिखाने की योजना बनाई. अपनी इस योजना में शाकिर ने अपने बहनोई गुड्डू हलवाई तथा दोनों बेटों को भी शामिल कर लिया.

## बन गई हत्या की योजना

10 जून, 2019 की रात 8 बजे शाकिर को एक रिश्तेदार के माध्यम से पता चला कि शहला के घर में रेहान मौजूद है और वह आज रात को वहीं रुकेगा.

यह खबर मिलने के बाद शाकिर ने अपने बहनोई गुड्डू हलवाई को बुला लिया. फिर बहनोई व बेटों के साथ शाकिर शहला के घर जा पहुंचा. घर के बाहर गेट पर ताला लगा था. वे लोग पीछे के दरवाजे से घर के अंदर दाखिल हुए.

घर के अंदर कमरे में रेहान और शहला आपत्तिजनक अवस्था में थे. शाकिर ने उन दोनों को ललकारा और सब मिल कर रेहान को पीटने लगे.

प्रेमी को पिटता देख शहला बीच में आ गई. वह प्रेमी को बचाने के लिए पति और बेटों से भिड़ गई. दोनों बेटे मां को पीटने लगे. इसी बीच मौका पा कर रेहान वहां से भाग निकला.

रेहान को भगाने में शहला ने मदद की थी, सो वे सब मिल कर शहला को लातघूंसों से पीटने लगे. इसी समय शाकिर की निगाह वहीं पड़ी ईंट पर चली गई. उस ने लपक कर ईंट उठा ली और उस से शहला के सिर व मुंह पर ताबड़तोड़ प्रहार किए. जिस से शहला का सिर फट गया और खून बहने लगा.

कुछ देर तड़पने के बाद शहला ने दम तोड़ दिया. हत्या के बाद उन सब ने मिल कर अलमारी व बक्से के ताले खोले और उस में रखी नकदी तथा जेवर निकाल लिए तथा सामान बिखेर दिया. फिर पीछे के रास्ते से ही फरार हो गए.

इधर पड़ोसी पप्पू ने शहला के घर चीखनेचिल्लाने की आवाज सुनी तो उस ने थाना अनवरगंज पुलिस को सूचना दे दी. सूचना पाते ही इंसपेक्टर रमाकांत पचौरी घटनास्थल पर आए और शव को कब्जे में ले कर जांच शुरू की. जांच में अवैध रिश्तों में हुई हत्या का परदाफाश हुआ और कातिल पकड़े गए.

13 जून, 2019 को पुलिस ने अभियुक्त मोहम्मद शाकिर, उस के बेटों शाकिब और अर्सलान को कानपुर कोर्ट में रिमांड मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया, जहां से उन्हें जिला कारागार भेज दिया गया.

कथा संकलन तक उन की जमानत नहीं हुई थी. एक अन्य अभियुक्त गुड्डू हलवाई फरार था. पुलिस उसे पकड़ने का प्रयास कर रही थी. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

Vikas Bhadauria

# दिशा का दृष्टिभ्रम

❑ राम महेंद्र राय

दिशा खूबसूरत थी, जिस के बूते पर वह किसी भी लड़के को अपने जाल में फंसा सकती थी. ऐसा उस ने किया भी, लेकिन ऐसी लड़कियों को सच्चा प्यार कभी नहीं मिलता. दिशा के साथ भी यही हुआ. परिमल तक ने...

खुशी से दिशा के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे. फ्रैंड्स से बात करते हुए वह चिड़ियों की तरह चहक रही थी. उस की आवाज की खनक बता रही थी कि बहुत खुश है. यह स्वाभाविक भी था. मंगनी होना उस के लिए छोटी बात नहीं थी.

मंगनी की रस्म के लिए शहर के नामचीन होटल को चुना गया था. रात के 9 बज गए थे. सारे मेहमान भी आ चुके थे. फ्रैंड्स भी आ गई थीं. लेकिन मानस और उस के घर वाले अभी तक नहीं आए थे.

देर होते देख उस के पापा घबरा रहे थे. उन्होंने दिशा को मानस से पूछने के लिए कहा तो उस ने मानस को तुरंत फोन लगाया. उस ने बताया कि वे लोग ट्रैफिक में फंस गए हैं. 20-25 मिनट में पहुंच जाएंगे.

दिशा ने राहत की सांस ली. मानस के आने में देर होते देख न जाने क्यों उसे डर सा लगने लगा था. वह सोच रही थी कि कहीं उसे उस के बारे में कोई नई जानकारी तो नहीं

Vikas Bhadu

मिल गई. लेकिन उस ने अपनी इस धारणा को यह सोच कर पीछे धकेल दिया कि वह आ तो रहा है. कोई बात होती तो ट्रैफिक में फंसा होने की बात क्यों बताता.

अचानक उस के मोबाइल की घंटी बज उठी. उस ने 'हैलो' कहा तो परिमल की आवाज आई, ''2 दिन पहले ही जेल से रिहा हुआ हूं. तुम्हारा पता किया तो जानकारी मिली कि आज मानस से तुम्हारी मंगनी होने जा रही है. मैं एक बार तुम्हें देखना और तुम से बात करना चाहता हूं. होटल के बाहर खड़ा हूं. 5 मिनट के लिए आ जाओ, नहीं तो मैं अंदर आ जाऊंगा.''

दिशा घबरा गई. जानती थी कि परिमल अंदर आ गया तो उस की फजीहत हो जाएगी. मानस को सच्चाई का पता चल गया तो वह उस से मंगनी नहीं करेगा.

उसे परिमल से मिल लेने में ही भलाई नजर आई. लोगों की नजर बचा कर वह होटल से बाहर चली गई.

गेट से थोड़ी दूर आगे परिमल खड़ा था. उस के पास जा कर दिशा गुस्से में बोली, ''क्यों परेशान कर रहे हो? बता चुकी हूं कि मैं तुम से किसी भी हाल में शादी नहीं कर सकती.''

''तुम ने मेरी जिंदगी बरबाद की है, फिर भी मैं तुम्हें परेशान नहीं कर सकता. मैं तो तुम से सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि मेरी दुर्दशा करने के बाद तुम्हें कभी पछतावा हुआ या नहीं?''

दिशा ने रूखे स्वर में जवाब दिया, ''कैसा पछतावा? जो कुछ भी हुआ उस में सारा दोष तुम्हारा था. मैं ने तो पहले ही आगाह किया था कि मुझे बदनाम मत करो. आज के बाद अगर तुम ने मुझे फिर कभी बदनाम किया तो याद रखना पहली बार 3 साल के लिए जेल गए थे. अब उम्र भर के लिए जाओगे.''

अपनी बात कह कर दिशा बिना परिमल का जवाब सुने होटल के अंदर आ गई. उस की फ्रैंडस उसे ढूंढ रही थीं. एक ने पूछ लिया, ''कहां चली गई थी? तेरे पापा पूछ रहे थे.''

स्थिति संभालने के लिए दिशा ने बाथरूम जाने का बहाना कर दिया. पापा को भी बता दिया. फिर राहत की सांस ले कर सोफे पर बैठ गई.

उसे विश्वास था कि परिमल अब कभी परेशान नहीं करेगा और वह मानस के साथ आराम की जिंदगी गुजारेगी.

परिमल से दिशा की पहली मुलाकात कालेज में उस समय हुई थी, जब वह बीटेक कर रही थी. परिमल भी उसी कालेज से बीटेक कर रहा था. वह उस की पर्सनैल्टी पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकी थी. लंबी चौड़ी कद काठी, आकर्षक चेहरा, गोरा रंग, स्मार्ट और हैंडसम.

मन ही मन उस ने ठान लिया था कि एक न एक दिन उसे पा कर रहेगी, चाहे कालेज की कितनी भी लड़कियां उस के पीछे क्यों न पड़ी हों.

दरअसल, उसे पता चला था कि कई उस पर लड़कियां जान न्योछावर करती हैं. यह अलग बात थी कि उस ने किसी का भी प्रेम प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया था.

प्यारमोहब्बत के चक्कर में वह अपनी पढ़ाई खराब नहीं करना चाहता था. पढ़ाई में वह शुरू से ही मेधावी था.

एक ही कालेज में पढ़ने के कारण दिशा उस से पढ़ाईलिखाई की ही बात करती थी. कई बार वह कैंटीन में उस के साथ चाय भी पी चुकी थी.

एक दिन कैंटीन में परिमल के साथ चाय पीते हुए उस ने कहा, ''इन दिनों बहुत परेशान हूं. मेरी मदद करोगे, तुम्हारा बड़ा अहसान होगा.''

''परेशानी क्या है?'' परिमल ने पूछा.

''कहते हुए शर्म आ रही है पर समाधान तुम्हें ही करना है. इसलिए परेशानी तो बतानी ही पड़ेगी. बात यह है कि पिछले 4-5 दिनों से

Vikas Bhadu

VikasBhadu

तुम रातों में मेरे सपनों में आते हो और सारी रात जगाए रहते हो.

''दिन में भी मेरे दिलोदिमाग में तुम ही रहते हो. शायद इसे ही प्यार कहते हैं. सच कहती हूं परिमल तुम मेरा प्यार स्वीकार नहीं करोगे तो मैं जिंदा लाश बन कर रह जाऊंगी.''

परिमल ने तुरंत जवाब नहीं दिया. उस ने कुछ सोचा फिर कहा, ''यह तो पता नहीं कि तुम मुझे कितना चाहती हो, पर यह सच है कि तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो.''

दिशा के चेहरे की मुसकान का सकारात्मक अर्थ निकालते हुए उस ने आगे कहा, ''मैं भी तुम्हारा प्यार पाना चाहता हूं. लेकिन मैं ने इस डर से कदम आगे नहीं बढ़ाए कि तुम अमीर घराने की हो. तुम्हारे पापा रिटायर जज हैं. भाई पुलिस में बड़े अधिकारी हैं. धनदौलत की कमी नहीं है.''

**दिशा** उस की बातों को बड़े मनोयोग से सुन रही थी. परिमल ने अपनी बात जारी रखी, ''मैं गरीब परिवार से हूं. पिता मामूली शिक्षक हैं. ऊपर से उन्हें 2 जवान बेटियों की शादी भी करनी है. यह सच है कि तुम अप्सरा सी सुंदर हो. कोई भी अमीर युवक तुम से शादी कर के अपने आप को भाग्यशाली समझेगा. ऐसे में तुम्हारे घर वाले तुम्हारा हाथ भला मेरे हाथ में क्यों देंगे?''

दिशा तुरंत बोली, ''इतनी सी बात के लिए डर रहे हो? मुझ पर भरोसा रखो. हमारा मिलन हो कर रहेगा. हमें एक होने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती. तुम केवल मेरा प्यार स्वीकार करो, बाकी सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो.''

दिशा ने समझाया तो परिमल ने उस का प्यार स्वीकार कर लिया. उस के बाद दोनों को जब भी मौका मिलता कभी पार्क में, कभी मौल में तो कभी किसी रेस्तरां में जा कर घंटों प्यारमोहब्बत की बातें करते.

सारा खर्च दिशा की करती थी. परिमल खर्च करता भी तो कहां से? उसे सिर्फ 50 रुपए प्रतिदिन पौकेट मनी मिलती थी. उसी में घर से कालेज आनेजाने का किराया भी शामिल था.

2 महीने में ही दोनों का प्यार इतना अधिक गहरा हो गया कि एकदूसरे में समा जाने के लिए व्याकुल हो गए. अंततः एक दिन दिशा परिमल को अपनी फ्रैंड के फ्लैट पर ले गई.

दिशा का प्यार पा कर परिमल उस का दीवाना हो गया. दिनरात लट्टू की तरह उस के आगेपीछे घूमने लगा. नतीजा यह हुआ कि पढ़ाई से मन हट गया और उसे दिशा के साथ उस की फ्रैंड के फ्लैट पर जाना अच्छा लगने लगा.

सहेली के मम्मीपापा दिन में औफिस में रहते थे. इसलिए उन्हें परेशानी नहीं होती थी. फ्रैंड तो राजदार थी ही.

इस तरह दोनों एक साल तक मौजमस्ती करते रहे. फिर अचानक दिशा को लगा कि परिमल के साथ ज्यादा दिनों तक रिश्ता बनाए रखने में खतरा है. वजह यह कि वह उस से शादी की उम्मीद में था.

दिशा ने परिमल से मिलनाजुलना बंद कर दिया. उस ने परिमल को छोड़ कर कालेज के ही एक छात्र वरुण से तनमन का रिश्ता जोड़ लिया. वरुण बहुत बड़े बिजनैसमैन का इकलौता बेटा था.

सच्चाई का पता चलते ही परिमल परेशान हो गया. वह हर हाल में दिशा से शादी करना चाहता था. लेकिन दिशा ने उसे बात करने का मौका ही नहीं दिया था. दिशा का व्यवहार देख कर परिमल ने कालेज में उसे बदनाम करना शुरू कर दिया. मजबूर हो कर दिशा को उस से मिलना पड़ा.

पार्क में परिमल से मिलते ही दिशा गुस्से में चीखी, ''मुझे बदनाम क्यों कर रहे हो. मैं ने कभी कहा था कि तुम से शादी करूंगी?''

''अपना वादा भूल गईं. तुम ने कहा था न कि हमारा मिलन हो कर रहेगा. तभी तो तुम्हारी तरफ कदम बढ़ाया था.'' परिमल ने उस का वादा याद दिलाया.

''मैं ने मिलन की बात की थी, शादी की नहीं. मेरी नजरों में तन का मिलन ही असल मिलन होता है. मैं ने अपना सर्वस्व तुम्हें सौंप कर अपना वादा पूरा किया था, फिर शादी के लिए क्यों पीछे पड़े हो? तुम छोटे परिवार के लड़के हो, इसलिए तुम से किसी भी हाल में शादी नहीं कर सकती.''

परिमल शांत बैठा सुन रहा था. उस के चेहरे पर तनाव था और मन में गुस्सा. लेकिन उस सब की चिंता किए बगैर दिशा बोली, ''तुम अच्छे लगे थे, इसीलिए संबंध बनाया था. अब हम दोनों को अपनेअपने रास्ते चले जाना चाहिए. वैसे भी मेरी जिंदगी में आने वाले तुम पहले लड़के नहीं हो. मेरी कई लड़कों से दोस्ती रही है. मैं सब से थोड़े ही शादी करूंगी? अगर आज के बाद मुझे कभी भी परेशान करोगे तो तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा. बदनामी से बचने के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूं.''

दिशा का लाइफस्टाइल जान कर परिमल को बहुत गुस्सा आया. इतना गुस्सा कि उस के वश में होता तो उस का गला दबा देता. जैसेतैसे गुस्से को काबू कर के उस ने खुद को समझाया. लेकिन उस की परवाह किए बिना दिशा उठ कर चली गई.

दिशा ने भले ही परिमल से बुरा व्यवहार किया, लेकिन उस ने उस की आंखों में गुस्से को देखा था, इसलिए उसे डर लग रहा था. उसे लगा कि परिमल अगर शांत नहीं बैठा तो उस की जिंदगी में तूफान आ सकता है. वह बदनाम नहीं होना चाहती थी. इसलिए उस ने भाई की मदद ली. उस का भाई पुलिस में उच्च पद पर था, उसे चाहता भी था.

नमक मिर्च लगा कर उस ने परिमल को खलनायक बनाया और भाई से गुजारिश की कि परिमल को किसी भी मामले में फंसा कर जेल भिजवा दे. फलस्वरूप परिमल को गिरफ्तार कर लिया गया. उस पर इल्जाम लगाया गया कि उस ने कालेज की एक लड़की की इज्जत लूटने की कोशिश की थी.

**अदालत** में सारे झूठे गवाह पेश कर दिए गए. पुलिस का मामला था, सो आरोपी लड़की भी तैयार कर ली गई. अदालत में उस का बयान हुआ तो 2-3 तारीख पर ही परिमल को 3 वर्ष की सजा हो गई.

परिमल हकीकत जानता था, लेकिन चाह कर भी वह कुछ नहीं कर सकता था. लंबी लड़ाई के लिए उस के पास पैसा भी नहीं था. उस ने चुपचाप सजा काटना मुनासिब समझा.

इस से दिशा ने राहत की सांस ली. साथ ही उस ने अपना लाइफस्टाइल भी बदलने का फैसला कर लिया. क्योंकि वह यह सोच कर डर गई थी कि परिमल जैसा कोई और उस की जिंदगी में आ गया तो वह घर परिवार

और समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं रहेगी.

उस के दुश्चरित्र होने की बात पापा तक पहुंच गई तो वह उन की नजर में गिर जाएगी. पापा उसे इतना चाहते थे कि हर तरह की छूट दे रखी थी. उस के कहीं आनेजाने पर भी कोई पाबंदी नहीं थी. यहां तक कि उन्होंने कह दिया था कि अगर उसे किसी लड़के से प्यार हो गया तो उसी से शादी कर देंगे, बशर्ते लड़का अमीर परिवार से हो.

Vikas Bhadu

मम्मी थीं नहीं, 7 साल पहले गुजर गई थीं. भाभी अपने आप में मस्त रहती थीं.

दिशा जब 12वीं में पढ़ती थी तो एक लड़के के प्रेम में आ कर उस ने अपना सर्वस्व सौंप दिया था. वह नायाब सुख से परिचित हुई तो उसे ही सच्चा सुख मान लिया.

वह बेखौफ उसी रास्ते पर आगे बढ़ती गई. नएनए साथी बनते और छूटते गए. वह किसी एक की हो कर नहीं रहना चाहती थी.

पहली बार परिमल ने ही उस से शादी की बात की थी. जब वह नहीं मानी तो उस ने उसे खूब बदनाम भी किया था.

वह बदनामी की जिंदगी नहीं जीना चाहती थी. इसलिए परिमल के जेल में रहते परिणय सूत्र में बंध जाना चाहती थी. तब उस की जिंदगी में वरुण आ चुका था.

**परिमल** के जेल जाने के 6 महीने बाद दिशा ने जब बीटेक कर लिया तो उस ने वरुण से अपने दिल की बात कही, ''चोरीचोरी प्यार मोहब्बत का खेल बहुत हो गया. अब शादी कर के तुम्हारे साथ रहना चाहती हूं.''

वरुण दिशा की तरह ही इस मैदान का खिलाड़ी था. उस ने शादी से मना कर दिया, साथ ही उस से रिश्ता भी तोड़ दिया.

दिशा को अपने रूप यौवन पर घमंड था. उसे लगता था कि कोई भी युवक उसे शादी करने से मना नहीं करेगा. वरुण ने मना कर दिया तो आहत हो कर उस ने शादी से पहले अपने पैरों पर खड़ा होने का निश्चय किया.

पापा से नौकरी की इजाजत मिल गई तो उस ने जल्दी ही जौब ढूंढ लिया. जौब करते हुए 2 महीने ही बीते थे कि एक पार्टी में उस का परिचय रंजन से हुआ, जो पेशे से वकील था. उस के पास काफी संपत्ति थी. शादी के

दिशा ने सोचा कि अगर उस के दुश्चरित्र होने की बात पापा तक पहुंच गई तो वह उन की नजर में गिर जाएगी. पापा उसे इतना चाहते थे कि हर तरह की छूट दे रखी थी. उस के कहीं आनेजाने पर भी कोई पाबंदी नहीं थी. यहां तक कि उन्होंने कह दिया था कि अगर उसे किसी लड़के से प्यार हो गया तो उसी से शादी कर देंगे, बशर्ते लड़का अमीर परिवार से हो.

ख्याल से उस ने रंजन से दोस्ती की, फिर संबंध भी बनाया. लेकिन करीब एक साल बाद उस ने शादी से मना कर दिया.

रंजन से धोखा मिलने पर दिशा तिलमिलाई जरूर लेकिन उस ने निश्चय किया कि पुरानी बातों को भूल कर अब विवाह से पहले किसी से भी संबंध नहीं बनाएगी.

दिशा ने घर वालों को शादी की रजामंदी दे दी तो उस के लिए वर की तलाश शुरू हो गई. 4 महीने बाद मानस मिला. वह बहुत बड़ी कंपनी में सीईओ था. पुश्तैनी संपत्ति भी थी. उस के पिता रेलवे से रिटायर्ड थे. मम्मी हाईस्कूल में पढ़ाती थीं.

मानस से शादी होना तय हो गया तो दिशा उस से मिलने लगी. उस ने फैसला किया था कि शादी से पहले किसी से भी संबंध नहीं बनाएगी. लेकिन अपने फैसले पर वह टिकी नहीं रह सकी. हवस की आग में जलने लगी तो मानस से संबंध बना लिया.

2 महीने बाद जब मानस मंगनी से कतराने लगा तो दिशा ने पूछा, ''सच बताओ, मुझ से शादी करना चाहते हो या नहीं?''

''नहीं.'' मानस ने कह दिया.

''क्यों?'' दिशा ने पूछा. वह गुस्से में थी.

कुछ सोचते हुए मानस ने कहा, ''पता चला है कि मुझ से पहले भी तुम्हारे कई मर्दों से संबंध रहे हैं.''

पहले तो दिशा सकते में आ गई, लेकिन फिर अपने आप को संभाल लिया और कहा, ''लगता है, मेरे किसी दुश्मन ने तुम्हारे कान भरे हैं. मुझ पर विश्वास करो तुम्हारे अलावा मेरे किसी से संबंध नहीं रहे.''

मानस ने सोचने के लिए दिशा से कुछ दिन का समय मांगा, लेकिन उस ने समय नहीं दिया. उस पर दबाव बनाने के लिए दिशा ने अपने घर वालों को बताया कि मानस ने बहलाफुसला कर उस से संबंध बना लिए हैं और अब गलत इलजाम लगा कर शादी से मना कर रहा है.

उस के पिता और भाई गुस्से में मानस के घर गए. उस के मातापिता के सामने ही उसे खूब लताड़ा और दिशा की बेहयाई का सबूत मांगा.

**मानस** के पास कोई सबूत नहीं था. मजबूर हो कर वह दिशा से मंगनी करने के लिए राजी हो गया. 15 दिन बाद की तारीख रखी गई. आखिर वह दिन आ ही गया. मानस उस से मंगनी करने आ रहा था.

एक सहेली ने दिशा की तंद्रा भंग की तो वह वर्तमान में लौट आई. सहेली कह रही थी, ''देखो, मानस आ गया है.''

दिशा ने खुशी से दरवाजे की तरफ देखा. मानस अकेला था. उस के घर वाले नहीं आए थे. उस के साथ एक ऐसा शख्स था जिसे देखते ही दिशा के होश उड़ गए. वह शख्स था डा. अमरेंदु.

मानस को अकेला देख दिशा के भाई और पापा भी चौंके. उस का स्वागत करने के बाद भाई ने पूछा, ''तुम्हारे घर वाले नहीं आए?''

''कोई नहीं आएगा.'' मानस ने कहा.

''क्यों नहीं आएगा?''

''क्योंकि मैं दिशा से शादी नहीं करना चाहता. मुझे उस से अकेले में बात करनी है? वह सब कुछ समझ जाएगी. खुद ही मुझ से शादी करने से मना कर देगी.''

भाई और पिता के साथ दिशा भी सकते में आ गई. उस की भाभी उस के पास ही थी. उस की बोलती भी बंद हो गई थी.

दिशा के पिता ने उसे अकेले में बात करने की इजाजत नहीं दी. कहा, ''जो कहना है, सब के सामने कहो.''

मजबूर हो कर मानस ने सब के सामने ही कहा, ''दिशा दुश्चरित्र लड़की है. अब तक कई लड़कों से संबंध बना चुकी है. 2 बार एबौर्शन भी करा चुकी है. इसीलिए मैं उस से शादी नहीं करना चाहता.''

भाई को गुस्सा आ गया. उस ने मानस

Vikas Bhadu

को जोरदार थप्पड़ मारा और कहा, ''मेरी बहन पर इल्जाम लगाने की आज तक कभी किसी ने हिम्मत नहीं की. अगर तुम प्रमाण नहीं दोगे तो जेल की हवा खिला दूंगा.''

''भाईसाहब, आप गुस्सा मत कीजिए अभी सबूत देता हूं. जब मेरे शुभचिंतक ने बताया कि दिशा का चरित्र ठीक नहीं है, तभी से मैं सच्चाई का पता लगाने में जुट गया था. अंततः उस का सच जान भी लिया.''

मानस ने बात जारी रखते हुए कहा, ''मेरे साथ जो शख्स हैं, उन का नाम डा. अमरेंदु है. दिशा ने उन के क्लिनिक में 2 बार एबौर्शन कराया था. आप उन से पूछ सकते हैं.''

डा. अमरेंदु ने मानस की बात की पुष्टि करते हुए कुछ कागजात दिशा के भाई और पिता को दिए. कागजात पर दिशा के एबौर्शन के समय के दस्तखत थे.

**दिशा** की पोल खुल गई तो चेहरा निष्प्राण सा हो गया. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि अब उसे क्या करना चाहिए. भाई और पापा का सिर शर्म से झुक गया था. फ्रैंड्स भी उसे हिकारत की नजरों से देखने लगी थीं.

दिशा अचानक मानस के पास जा कर बोली, ''तुम ने मेरी जिंदगी तबाह कर दी. तुम्हें छोडूंगी नहीं. तुम्हारी जिंदगी भी बर्बाद कर के रख दूंगी. तुम नहीं जानते मैं क्या चीज हूं.''

''तुम्हारे साथ जो कुछ भी हो रहा है वह सब तुम्हारे लाइफस्टाइल की वजह से हो रहा है. इस में किसी का कोई दोष नहीं है. जब तक तुम अपने आप को नहीं सुधारोगी, ऐसे ही अपमानित होती रहोगी.''

पलभर चुप रहने के बाद मानस ने फिर कहा, ''आज की तारीख में तुम इतना बदनाम हो चुकी हो कि तुम से कोई भी शादी करने के लिए तैयार नहीं होगा.''

वह एक पल रुक कर बोला, ''हां, एक ऐसा शख्स है जो तुम्हें बहुत प्यार करता है. तुम कहोगी तो खुशीखुशी शादी कर लेगा.''

''कौन?'' दिशा ने पूछा.

''परिमल...'' मानस ने कहा, ''गेट पर उस से मिल कर आने के बाद तुम उसे भूल गई थीं, पर वह तुम्हें नहीं भूला है. होटल के गेट पर अब तक इस उम्मीद से खड़ा है कि शायद तुम मुझ से शादी करने का अपना फैसला बदल दो. कहो तो उसे बुला दूं.''

''तुम उसे कैसे जानते हो?'' दिशा ने पूछा.

मानस ने बताया कि वह परिमल को कब और कहां मिला था.

कार पार्क कर मानस डा. अमरेंदु के साथ होटल में आ रहा था तो गेट पर परिमल मिल गया था. न जाने वह उसे कैसे जानता था. उस ने पहले अपना परिचय दिया फिर दिशा और अपनी प्रेम कहानी बताई.

उस के बाद कहा, ''तुम्हें दिशा की सच्चाई भविष्य में उस से सावधान रहने के लिए बताई है. अगर उस से सावधान नहीं रहोगे तो विवाह के बाद भी वह तुम्हें धोखा दे सकती है.''

मानस ने परिमल को अंदर चलने के लिए कहा तो उस ने मना कर दिया. कहा, ''मैं यहीं पर तुम्हारे लौटने का इंतजार करूंगा. बताना कि तुम से मंगनी कर वह खुश है या नहीं?''

कुछ सोच कर मानस ने उस से पूछा, ''मान लो दिशा तुम से शादी करने के लिए राजी हो जाए तो करोगे?''

''जो हो नहीं सकता, उस पर बात करने से क्या फायदा? जानता हूं कि वह कभी भी मुझ से शादी नहीं करेगी.'' परिमल ने मायूसी से कहा.

मानस ने परिमल की आंखों में देखा तो पाया कि दिशा के प्रति उस की आंखों में प्यार ही प्यार था. उस ने चाह कर भी कुछ नहीं कहा और डा. अमरेंदु के साथ होटल में चला आया.

**मानस** ने दिशा को सच्चाई से दोचार करा दिया तो उसे भविष्य अंधकारमय लगा. परिमल के सिवाय उसे कोई नजर नहीं आया तो वह उस से बात करने के लिए तैयार हो गई.

उस का फोन नंबर उस के पास था ही, झट से फोन लगा दिया. परिमल ने फोन उठाया तो उस ने कहा, ''तुम से कुछ बात करना चाहती हूं. प्लीज होटल में आ जाओ.''

कुछ देर बाद ही परिमल आ गया और दिशा ने उस का हाथ अपने हाथ में ले कर कहा, ''मुझे माफ कर दो, परिमल. मैं तुम्हारा प्यार समझ नहीं पाई थी, लेकिन अब समझ गई हूं. मैं तुम से शादी करना चाहती हूं. अभी मंगनी कर लो, बाद में जब कहोगे शादी कर लूंगी.''

कुछ सोचने के बाद परिमल ने कहा, ''यह सच है कि इतना सब कुछ होने के बाद भी मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं. पर तुम आज भी मुझ से बेवफाई कर रही हो. सच नहीं बता रही हो. सच यह नहीं है कि मेरा प्यार तुम समझ गई हो, इसलिए मुझ से शादी करना चाहती हो. सच यह है कि आज की तारीख में तुम इतना बदनाम हो गई हो कि तुम से कोई भी शादी नहीं करना चाहता. मानस ने भी शादी से मना कर दिया है. इसीलिए अब तुम मुझ से शादी कर अपनी इज्जत बचाना चाहती हो.

''तुम से शादी करूंगा तो प्यार की नहीं, समझौते की शादी होगी, जो अधिक दिनों तक नहीं टिकेगी. अतः मुझे माफ कर दो और किसी और को बलि का बकरा बना लो. मैं भी तुम्हें सदैव के लिए भूल कर किसी और से शादी कर लूंगा.''

परिमल रुका नहीं. दिशा की पकड़ से हाथ छुड़ा कर दरवाजे की तरफ बढ़ गया. वह देखती रह गई. किस अधिकार से रोकती?

कुछ देर बाद मानस और डा. अमरेंदु भी चले गए. दिशा के घर वाले भी चले गए. सहेलियां चली गईं. महफिल खाली हो गई, पर दिशा डबडबाई आंखों से बुत बनी रही.●

# अपनी बुलाई मौत

अगर आप अपने घर के आंगन या बगीचे में धूप सेंक रहे हों और अचानक खुले आसमान से आप के पास कोई क्षतविक्षत लाश आ कर गिरे तो निस्संदेह कुछ देर के लिए आप के होश उड़ जाएंगे. यह भी संभव है कि आप सोचें कि अगर लाश आप के ऊपर आ कर गिरी होती तो वहां 2 लाशें पड़ी होतीं. ऐसी बदहवासी में यह तो खयाल भी नहीं आएगा कि खुले आसमान से लाश आई कैसे.

साउथ वेस्ट लंदन में एक शख्स के साथ ऐसा ही हुआ. दरअसल उस दिन रविवार था और वह अपने घर के बगीचे में बैठा छुट्टी का आनंद लेते हुए धूप सेंक रहा था, तभी अचानक तेज आवाज के साथ उस के पास एक शव आ कर गिरा, जो गिरते ही क्षतविक्षत हो गया.

पलभर के लिए उस शख्स से होश फाख्ता हो गए. उस की समझ में केवल यह आ रहा था कि वह शव अगर उस के ऊपर आ कर गिरा होता तो क्या होता. वह जीवित रहता या उसी शख्स की तरह लाश में बदल गया होता. यह घटना बीते 30 जून की है.

दरअसल, आसमान से गिरा शव केन्या एयरवेज की फ्लाइट केक्यू100 से गिरा था. लंदन की मैट्रोपोलिटन पुलिस ने 1 जुलाई को ट्वीट में बताया कि प्लेन से गिरे शख्स की पहचान की कोशिश की जा रही है. वह केन्या की राजधानी नैरोबी में केन्या एयरवेज की फ्लाइट केक्यू100 में सवार हुआ था. उस का शव इतना क्षतविक्षत हो गया था कि उसे पहचानना तो दूर यह तक पता नहीं चल पा रहा था कि वह औरत है या मर्द.

पुलिस ने बताया कि प्लेन के लैंडिंग गियर कंपार्टमेंट में एक बैग, पानी और कुछ खाना मिला है. संभावना है कि वह लैंडिंग गियर में बैठ कर यात्रा कर रहा होगा और संतुलन बिगड़ने से गिर गया होगा. वह गिरा भी तब जब फ्लाइट 4000 फीट की ऊंचाई पर थी.

हवाई जहाज से यूं गिरने की यह कोई पहली घटना नहीं है. दरअसल, कुछ प्रवासी कहीं जाने या बेहतर जीवन की चाह में प्लेन के नीचे वाले किसी हिस्से में छिप जाते हैं. लेकिन ऐसे लोगों में से ज्यादातर की इसी तरह मौत हो जाती है. इस से पहले भी लंदन में

पेड़ों या मकानों की छतों पर शव गिरे हैं. कई लोग गिरने से पहले ही बेहद कम तापमान और औक्सीजन की कमी से दम तोड़ चुके होते हैं.

2012 में अंगोला से आ रही ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट से गिरने से जोस मावादा नाम के शख्स की मौत हुई थी. उस की गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज न होने से उस की शिनाख्त में 6 महीने लगे थे. ऐसे ही 2015 में जोहानिसबर्ग से लंदन आ रही ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट से एक शख्स का शव साउथ वेस्ट लंदन के रिचमंड स्थित एक दुकान की छत पर गिरा था. हालांकि छिप कर सफर कर रहा एक शख्स बाद में प्लेन के पहियों के बीच जिंदा मिला था. ●

Vikas Parishad

## आगरा, उत्तर प्रदेश

Vikas Bhadu

दूसरी लड़कियों की तरह बिंदिया की भी इच्छा थी कि उस की सुहागरात फिल्मों जैसी हो. शादी का धूमधड़ाका थम चुका था, अधिकांश मेहमान भी विदा हो गए थे. अपने कमरे में बैठी बिंदिया सुहागरात के खयालों में डूबी पति छोटेलाल का इंतजार कर रही थी. बिंदिया ने काफी दिन पहले से सुहागरात के बारे में न केवल काफी कुछ सोच रखा था, बल्कि मन ही मन उसे अमल में लाने की भी तैयारियां कर चुकी थी.

हालांकि बिंदिया बहुत ज्यादा पढ़ीलिखी नहीं थी और न ही किसी मालदार घराने की थी. फिर भी सुहागरात और शादीशुदा जिंदगी को ले कर उस के सपने वैसे ही थे, जैसे उस ने फिल्मों और टीवी सीरियलों में देखे थे. मसलन

# पति को दी जलसमाधि

❑ भारत भूषण श्रीवास्तव

बिंदिया को पति छोटेलाल से उस के मनमुताबिक प्यार नहीं मिला तो उस ने पति के दोस्त राजकुमार से संबंध बना लिए. यह अवैध संबंध किसी अपराध को जन्म दे सकते हैं, इस की न तो बिंदिया ने और न ही राजकुमार ने कभी कल्पना की होगी.



छायांकन: मॉडलिंग

पुलिस हिरासत में हत्यारोपी बिंदिया, प्रेमी राजकुमार और उस का दोस्त

पति कमरे में दाखिल होगा, फिर आहिस्ता से दरवाजे की कुंडी बंद कर पलंग तक आएगा, प्यार भरी रोमांटिक बातें करेगा, धीरेधीरे उस के अंगअंग को सहलाएगा चूमेगा. कब वह एक एकएक कर उस के सारे कपड़े उतार देगा, इस का उसे होश ही नहीं रहेगा. फिर दोनों जिंदगी के सब से हसीन सुख के समंदर में गोते लगाते हुए कब सो जाएंगे, उन्हें पता नहीं चलेगा.

इन्हीं खयालों में डूबी बिंदिया ने जैसे ही किसी के आने की आहट सुनी, उस के शरीर का रोआंरोआं खड़ा हो गया. उस का हलक सूखने लगा और मारे शरम व डर के वह दोहरी हो गई. जिस रात का ख्वाब वह सालों से देख रही थी, वह आ पहुंची थी. छोटेलाल कमरे में दाखिल हो चुका था.

पर यह क्या, छोटेलाल ने उसे कुछ सोचनेसमझने का मौका ही नहीं दिया. कमरे में आते ही वह उस पर जानवरों की तरह टूट पड़ा. उस के शरीर से इत्र या परफ्यूम नहीं महक रहा था, बल्कि मुंह से शराब की गंध आ रही थी. छोटेलाल ने उस से कोई बातचीत नहीं की और उस के कपड़े जिस्म से उतारे नहीं बल्कि खींच कर अलग कर दिए. उसे लाइट बुझाने का भी होश नहीं था.

## सुहागरात बनी बलातरात

जैसे ही बिंदिया का सांवला बदन छोटेलाल की आंखों में नुमाया हुआ, वह बजाय रोमांटिक होने के पूरी तरह वहशी हो गया. उस की हालत वैसी ही थी जैसे लाश के पास बैठे गिद्ध की होती है.

देखते ही देखते वह बिंदिया पर छा गया और कुछ देर बाद यानी अपनी प्यास बुझाने के बाद करवट बदल कर खर्राटे भरने लगा. बिंदिया के सपने चूरचूर हो चुके थे, उसे लग रहा था कि उस ने सुहागरात नहीं बल्कि बलातरात मनाई है, जिस में उस का रोल हवस मिटाने वाली गुड़िया जैसा था.

कुछ देर बाद वह सामान्य हुई तो गहरी नींद में सोऐ छोटेलाल को देख कर उस का मन गुस्से से भर उठा. शराब से तो उसे बचपन से ही नफरत थी. उसे क्या पता था कि उसे एक शराबी के पल्लू से बांध दिया जाएगा.

न घूंघट उठा, न छेड़छाड़ हुई, न दूध पीया गया और न ही प्यारभरी बातें हुईं. जो हुआ उसे याद कर बिंदिया का रोमरोम सुलग रहा था. उसे लग रहा था कि इस गंवार और जाहिल आदमी की पीठ पर लात मार कर उसे उठा कर बताए कि एक पत्नी सुहागरात की रात क्या चाहती है और कैसे चाहती है.

पर बेबसी ने उस के होंठ बांध दिए, क्योंकि उसे पहले ही बता दिया गया था कि अब पति ही तुम्हारा सब कुछ है. उस की मरजी को हुक्म मानना और जैसे भी हो, उसे खुश रखना क्योंकि अब वही तुम्हारा सब कुछ है.

अकसर सुहागरात को ही तय हो जाता है कि आने वाली जिंदगी कैसी होगी. यह बात बिंदिया को अब समझ आ गई थी कि अब जैसे भी हो बाकी की जिंदगी उसे इसी छोटेलाल के साथ काटनी है. जिस में रत्ती भर भी शऊर नहीं है और न ही वह पत्नी और शादीशुदा जिंदगी के मायने समझता है. इतना सब कुछ समझ आ जाने के बाद दुखी और सुबकती बिंदिया ने कपड़े पहने और सोने की कोशिश करने लगी.

राजस्थान का धौलपुर जिला मध्य प्रदेश के मुरैना और उत्तर प्रदेश के जिले आगरा को मिलाता हुआ है. आगरा के आमदोह गांव की बिंदिया की शादी धौलपुर के गांव छातीपुरा के छोटेलाल निषाद से हुई थी.

दोनों ही गरीब घर के थे, लिहाजा शादी से पहले ही बिंदिया ने मन ही मन तय कर लिया था कि पति जो भी रूखासूखा खिलाएगा, खा लेगी. जो भी पहनाएगा, पहन लेगी और जैसे भी रखेगा, रह लेगी. लेकिन जिएगी प्यार से, यही जज्बा जिंदगी को खुशहाल बनाता है, जिस के लिए पैसों की रत्ती भर भी जरूरत नहीं पड़ती.

पहली ही रात बिंदिया को समझ आ गया था कि उस के सपने अब कभी पूरे नहीं होने वाले, क्योंकि छोटेलाल दिन भर मेहनतमजदूरी करता था और रात को अकसर शराब पी कर उस के बदन को नोचनेखसोटने लगता था. बेमन से बिंदिया उस का साथ देती थी, जिस के चलते पूरी तरह न तो उस के तन की प्यास बुझती थी और न छोटेलाल को उस के मन से कोई वास्ता ही था.

## घरजमाई बन कर रहने लगा छोटेलाल

छीतापुरा में छोटेलाल को रोजाना काम नहीं मिलता था, इसलिए शादी के कुछ दिनों बाद वह आमदोह आ कर बस गया. यानी घरजमाई बन गया. मायके आ कर बिंदिया को भी थोड़ा सकून मिला. यहां कम से कम सब लोग जानेपहचाने तो थे, जिन से वह अपना

दुखदर्द बांट सकती थी, हंसबोल सकती थी.

ससुराल आ कर भी छोटेलाल की आदतों में कोई बदलाव नहीं हुआ. उलटे उस की शराब की लत और बढ़ गई. जल्द ही उस की दोस्ती एक ऑटो ड्राइवर राजकुमार से हो गई, जो याराबाज आदमी था. वह छोटेलाल को कभीकभी दारूमुर्गे की पार्टी देता रहता था. देखतेदेखते दोनों में गहरी छनने लगी. राजकुमार कभीकभी छोटेलाल के घर यानी ससुराल में ही बैठ कर दावत देने लगा.

Vikas Bhadu

शराब से नफरत करने वाली बिंदिया को राजकुमार का आनाजाना खटका नहीं, क्योंकि उसे वह बचपन से ही जानती थी और यह भी जानती थी कि यह वही राजकुमार है, जिस ने जवानी के शुरुआती दिनों में उस के पीछे खूब चक्कर लगाए थे. उसे पटाने की कोशिश की थी, लेकिन बिंदिया ने ही उसे घास नहीं डाली थी.

बिंदिया जब पति के साथ आमदोह वापस आई तो उस की खिली और गदराई जवानी देख कर राजकुमार के मन में पुरानी हसरतें जोर मारने लगी थीं. बिंदिया के हावभाव और बातचीत से वह जल्द ही भांप गया था कि वह पति से खुश नहीं है.

बिंदिया जब पति के साथ आमदोह वापस आई तो उस की खिली और गदराई जवानी देख कर राजकुमार के मन में पुरानी हसरतें जोर मारने लगी थीं. बिंदिया के हावभाव और बातचीत से वह जल्द ही भांप गया था कि वह पति से खुश नहीं है.

एक सधे खिलाड़ी की तरह उस ने बिंदिया की तरफ प्यार या वासना कुछ भी कह लें, का दाना डाला तो यह जान कर उस का दिल बल्लियों उछलने लगा कि दाना चुगने में बिंदिया ने तनिक भी आनाकानी नहीं की थी. यानी आग दोनों तरफ बराबरी से लगी थी, इंतजार था मौके का. इस आग को धधकने में देर नहीं लगी और एक दिन जरा सी कोशिश करने पर बिंदिया पके आम की तरह राजकुमार की झोली में आ गिरी.

यह पका आम चोरी का था, जिसे राजकुमार मनमुआफिक अपनी मरजी से खा या चूस नहीं सकता था. दोनों को अपने तन और मन की आग बुझाने कस्बे से बाहर जंगलों में जाना पड़ता था. राजकुमार ठीक वैसी ही बातें करता था, जैसी कि बिंदिया चाहती थी. प्यार मोहब्बत और रोमांस की ये वे बातें थीं, जिन्हें वह पति छोटेलाल के मुंह से सुनने को तरसती रही थी.

छोटेलाल ने कभी उस की खूबसूरती की तारीफ नहीं की थी, पर राजकुमार तारीफों के पुल बांध देता था. बिंदिया इस पर और निहाल हो जाती थी. अब हालत यह थी कि छोटेलाल का हक उस के शरीर पर तो था, लेकिन मन पर नहीं. उस के मन पर तो राजकुमार ने कब्जा जमा लिया था.

## गांव वालों ने आंखों में ही बना ली वीडियो

गांव में भले ही सीसीटीवी नहीं थे, लेकिन गांव वालों की नजर किसी कैमरे की मोहताज नहीं थी. जल्द ही लोगों को बिंदिया और राजकुमार के नाजायज संबंधों की भनक लग गई. किसी ने दोनों को जंगल में गुत्थमगुत्था होते देख लिया तो बिना स्मार्टफोन का इस्तेमाल किए दिमाग में बना उन के संबंधों का वीडियो औडियो गांव भर में वायरल हो गया.

हालांकि बिंदिया के पास मोबाइल फोन आ गया था, जिस के जरिए वह राजकुमार के संपर्क में रहती थी. दोनों घंटों प्यार और अभिसार की बातों में डूबे रहते थे. खासतौर से उस वक्त जब उस का पति घर पर नहीं होता था और जब होता था तब राजकुमार शराब की बोतल ले कर पहुंच जाता था. लेकिन इस बात की वह पूरी अहतियात बरतता था कि छोटेलाल के सामने कोई ऐसी बात या हरकत न हो, जिस से उस के मन में शक पैदा हो. क्योंकि इस से बनीबनाई बात बिगड़ने का पूरा अंदेशा था.

तमाम सावधानियों के बाद भी बात बिगड़ ही गई. गांव की चर्चा जब छोटेलाल के कानों में पहुंची तो पहले तो उसे यकीन नहीं हुआ, लेकिन इस धुएं की आग कहां है, यह देखने से वह खुद को रोक नहीं पाया. गलत नहीं कहा जाता कि शक का बीज एक बार दिमाग में घर कर ले तो बिना पेड़ बने सूखता या मरता नहीं.

यही छोटेलाल के साथ हुआ. लिहाजा उस ने मन का शक मिटाने या सच जान लेने की गरज से राजकुमार और बिंदिया की निगरानी शुरू कर दी. नतीजा भी जल्द सामने आ गया, जब उस ने एक दिन दोनों को आदिम हालत में रंगेहाथों पकड़ लिया.

## रंगेहाथों पकड़ी गई बिंदिया

पत्नी को गैरमर्द की बाहों में बेशरमी से मचलता और लिपटता देख छोटेलाल का खून खौल उठा. उस ने राजकुमार को पकड़ने की कोशिश की तो वह अपने कपड़े हाथ में ले कर नंगधड़ंग हालत में भाग निकला. लेकिन बेचारी बिंदिया इस हालत में कहां जाती. उस दिन छोटेलाल ने उस की तबीयत से धुनाई कर डाली. मार से बेहाल बिंदिया तरहतरह की कसमें खाते पति से माफी मांगती रही कि अब दोबारा ऐसा नहीं होगा.

छोटेलाल नाम का ही छोटा था, लेकिन दिल का बड़ा निकला. उस ने पत्नी को माफ कर दिया. इस पर बिंदिया ने चैन की सांस ली लेकिन अब राजकुमार का घर आनाजाना बंद हो गया था. दोनों में बातचीत भी नहीं होती थी. यह हालत ज्यादा दिनों तक नहीं रह पाई. छोटेलाल को पैसों की तंगी और शराब की तलब परेशान करने लगी थी.

पति को नर्म पड़ते देख बिंदिया ने राजकुमार को इशारा किया तो वह एक दिन छोटेलाल से माफी मांगने उस के घर जा पहुंचा. शराब की तलब की मजबूरी कह लें या फिर वाकई फिर बड़े दिल वाला कह लें, छोटेलाल ने उसे भी इस शर्त पर माफ कर दिया कि आइंदा वह कभी भी बिंदिया की तरफ आंख उठा कर नहीं देखेगा.

बात अंधा क्या चाहे दो आंखों वाली जैसी थी. दुश्मनी रफादफा हो गई तो फिर महफिल जमने लगी और दोनों दारूमुर्गे की दावत उड़ाने लगे. बिंदिया भी पति और यार की नजदीकियों से खुश थी. उसे राजकुमार से फिर आंख और इश्क लड़ाने का मौका मिल रहा था.

लेकिन अब छोटेलाल चौकन्ना था और

Vikas Bhadu

पहले के मुकाबले सख्त भी हो चला था, इसलिए दोनों को परेशानी होने लगी. इतने नजदीक होने पर जिस्मों की दूरियां राजकुमार और बिंदिया की प्यास और भड़का रही थीं.

गांव में पहले ही इतनी बदनामी हो चुकी थी कि दोनों के दिलोदिमाग से शरमोहया नाम की चीज खत्म हो चुकी थी. तंग आ कर इन हैरानपरेशान प्रेमियों ने वासना की आग में जलते एक सख्त फैसला ले लिया, जिस की 2 महीने तक किसी को हवा नहीं लगी.

## पुलिस पहुंची बिंदिया के पास

वह बीते 5 जून की तारीख थी, जब कुछ पुलिस वाले आमदोह गांव पहुंचे और बिंदिया का पता पूछने लगे. बिंदिया जब पुलिस के सामने आई तो उस के चेहरे की रंगत उड़ी हुई थी. पुलिस वालों ने छोटेलाल के बारे में पूछताछ की तो उस ने टरकाने की गरज से जवाब दिया कि वह तो कुछ दिनों से कहीं गए हुए हैं.

बिंदिया को अहसास नहीं था कि पुलिस वाले अपना पूरा होमवर्क कर के आए हैं. उन्होंने शुरुआती पूछताछ में ढील दी और फिर बिंदिया की निगरानी और पूछताछ शुरू की तो पता चला कि छोटेलाल के जाने के बाद राजकुमार का बिंदिया के घर आनाजाना बढ़ गया था. कुछ लोगों ने दोनों के नाजायज ताल्लुकात होने की बात भी दबी जुबान से कही.

असल में हुआ यूं था कि 5 मार्च को मध्य प्रदेश के मुरैना जिले के गांव गुलेंदा निवासी मुन्ना सिंह ने नूराबाद थाने में खबर दी थी कि सुनरेखा नदी के किनारे एक लाश तैर रही है. खबर मिलते ही थानाप्रभारी विनय यादव हरकत में आ गए. घटनास्थल पर पहुंच कर उन्होंने गांव वालों की मदद से लाश को बाहर निकाला.

लाश का मुआयना करने पर चोट के निशान नहीं पाए गए तो पुलिस वाले इसे हादसे से हुई मौत मानते रहे. लाश के पास से ऐसा कोई सबूत नहीं मिला था, जिस से उस की शिनाख्त हो पाती. लेकिन जब पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आई तो उस में मौत की वजह जहर बताया गया.

पुलिस की दिक्कत यह थी कि लाख कोशिशों के बाद भी मृतक की पहचान का कोई सुराग नहीं मिल रहा था. इस के बाद भी पुलिस वालों ने हिम्मत नहीं हारी.

एसपी मुरैना असित यादव ने इस ब्लाइंड मर्डर की गुत्थी सुलझाने के लिए एसडीपीओ ओ.पी. रघुवंशी के नेतृत्व में एक टीम गठित कर दी, जिस में विनय यादव के अलावा एएसआई जयपाल सिंह, अजय बेशांदर, रामदास सिंह, हैडकांस्टेबल केशवचंद, धर्मवीर, मुन्ना सिंह, सुनील, सुरेंद्र सिंह, अजय और दीनदयाल को शामिल किया गया.

एसपी असित यादव

एक महीने तक पुलिस टीम मृतक की शिनाख्त की कोशिश में जुटी रही, तब कहीं जा कर पता चला कि मृतक छोटेलाल निषाद पुत्र पूरन निषाद निवासी छीतापुरा है. यहीं से पुलिस टीम को पता चला कि छोटेलाल कुछ महीनों पहले अपनी ससुराल आमदोह जा कर रहने लगा था.

जब पुलिस वालों को बिंदिया और राजकुमार के संबंधों के बारे में पता चला तो उन्होंने गुपचुप तरीके से बिंदिया के मोबाइल की काल डिटेल्स निकलवाई, जिस से पता चला कि न केवल उस की और राजकुमार की लंबीलंबी बातें होती थीं, बल्कि हादसे के दिन दोनों के ही फोन की लोकेशन भी घटनास्थल की आ रही थी. अब कहनेसुनने को कुछ खास नहीं बचा था.

पुलिस वालों ने जब बिंदिया से राजकुमार के बारे में पूछा तो वह यह कह कर साफ मुकर गई कि वह तो किसी राजकुमार को नहीं जानती. लेकिन पुलिस टीम जानती थी कि बिंदिया राजकुमार को कितने गहरे तक जानती है.

## दोनों ने कबूला अपना गुनाह

राजकुमार और बिंदिया से अलगअलग पूछताछ की गई तो दोनों के बयानों में काफी विरोधाभास पाया गया. फिर जल्द ही दोनों ने अपना जुर्म कबूल लिया कि उन्होंने ही योजना बना कर छोटेलाल नाम का कांटा अपने रास्ते से हटाया था.

योजना के मुताबिक बिंदिया ने छोटेलाल के खाने में जहर मिला दिया था, जो राजकुमार ने उसे ला कर दिया था. जब जहर का असर हुआ तो छोटेलाल लुढ़क गया. उस के बेहोश होते ही दोनों एकदूसरे से लिपट गए और सब से पहले अपनी कई दिनों की हवस की प्यास बुझाई.

इस के बाद लाश ठिकाने लगाने के लिए राजकुमार ने फोन कर के अपने दोस्तों सुलतान कुशवाह व जंगबहादुर उर्फ गुड्डू जाटव को बुला लिया. चारों ने बेहोश छोटेलाल को आटोरिक्शा में बीच में इस तरह बैठाया कि कोई देखे तो लगे कि सवारियां बैठी हैं.

यह आटोरिक्शा आमदोह नगला थाना चौकी आगरा से होता हुआ गुलेंदा के पास पहुंचा, जहां सुनसान जगह देख इन्होंने छोटेलाल को नदी में फेंक दिया. जब 2 महीने तक कुछ नहीं हुआ तो दोनों बेफिक्र हो गए कि उन के गुनाह पर परदा पड़ा रहेगा.

पुलिस ने चारों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया. नाजायज संबंधों के चलते प्रेमी के साथ मिल कर पति की हत्या की एक और कहानी खत्म हुई, जो अपने पीछे कई सवाल भी छोड़ गई. मसलन मौजमस्ती के लिए लोग क्या कुछ नहीं कर गुजरते.

बिंदिया बजाए राजकुमार को यार बनाने के छोटेलाल को ही रास्ते पर लाने की कोशिश करती तो इस से बात बन सकती थी, लेकिन उसे अपने सपनों का राजकुमार, राजकुमार कुशवाह में दिखा और सपनों की जिंदगी जीने के लिए पति को ही निपटा दिया, जिस की सजा वह भोगेगी, भोग रही है.

छोटेलाल जैसे पति भी अगर पत्नियों की भावनाओं को समझें, उन की कद्र करें तो न केवल हादसों से बच सकते हैं, बल्कि एक खुशहाल जिंदगी भी जी सकते हैं. ●

धौलपुर, राजस्थान

जो लोग चंबल की रचना को जानतेसमझते हैं, उन्हें पता है कि चंबल के बीहड़ भूलभुलैया की तरह हैं, जहां डकैतों को खोजना इसलिए आसान नहीं है, क्योंकि वहां जा कर खुद ही बाहर निकल आएं तो बड़ी बात है. डाकू इसी का लाभ उठाते हैं. जगन भी...

Vikas Bhadauria

# डकैत जगन : चौथी बार आत्मसमर्पण

❑ निखिल अग्रवाल

चंबल के बीहड़ सदियों से डाकुओं के छिपने के अभेद्य ठिकाने रहे हैं. न जाने कितने डकैतों ने इन बीहड़ों में अपना जीवन गुजार दिया. सैकड़ों डकैत तो इन्हीं बीहड़ों में मरखप गए. चंबल के ये बीहड़ आज भी डकैतों के आंतक की कहानी सुनाते हैं. इन बीहड़ों का भेद आज तक कोई नहीं जान सका. यदि कोई अनजान आदमी इन बीहड़ों में घुस जाए तो उस का निकलना मुश्किल है.

इन्हीं बीहड़ों में कूद कर आतंक का पर्याय बने डकैत जगन गुर्जर ने 28 जून, 2019 को

चौथी बार आत्मसमर्पण करने वाला डाकू जगन गुर्जर

पुलिस के सामने आत्मसमर्पण किया. डकैत जगन गुर्जर इस से पहले भी 3 बार आत्मसमर्पण कर चुका है, लेकिन जुर्म छोड़ने के अपने वादे पर वह कायम नहीं रह सका. वह फिर से बीहड़ों में कूद कर आतंक मचाता रहा. जब उस पर पुलिस का दबाव बढ़ा या उसे लगा कि खतरा बढ़ गया है, तो उस ने आत्मसमर्पण कर दिया.

राजस्थान के धौलपुर जिले का रहने वाला जगन गुर्जर पूर्वी राजस्थान और मध्य प्रदेश में आतंक का पर्याय रहा है. उस के खिलाफ राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के विभिन्न थानों में 115 मामले दर्ज हुए. ये मामले हत्या, हत्या का प्रयास, लूट, फिरौती, अपहरण, मारपीट, रंगदारी, आर्म्स एक्ट आदि के हैं. इन में से 44 मुकदमों में वह अदालत से बरी हो चुका है. कुछ मामलों में उसे सजा भी हुई है.

जगन जमानत पर कई बार छूटा, लेकिन उस का चंबल का मोह कभी नहीं छूटा. यही कारण रहा कि आत्मसमर्पण के बाद जमानत पर जेल की सलाखों से बाहर आने के बाद उस ने हर बार फिर से हथियार उठा लिए. इस बार उस के आतंक के खेल की अवधि बहुत छोटी रही.

करीब 20 दिनों की लुकाछिपी के बाद ही उस ने हथियार डाल दिए. इस का कारण यह रहा कि संसद में उस के एनकाउंटर की मांग उठने के बाद उसे अपनी जान पर खतरा मंडराता नजर आ रहा था.

## जगन की काली करतूत

3 बार आत्मसमर्पण करने के बाद दस्यु जगन गुर्जर जून के पहले हफ्ते में ही जमानत पर छूट कर घर आया था. लेकिन उस के आतंक की किताब का नया अध्याय 12 जून, 2019 को शुरू हो गया. जगन ने अपने साथियों के साथ धौलपुर जिले के बाड़ी शहर में सब से व्यस्ततम बसेड़ी रोड हौस्पिटल चौराहे पर सुबह 8 बजे फायरिंग करते हुए आतंक मचाया. डकैतों ने दुकानदारों से मारपीट करते हुए जम कर तोड़फोड़ की. पूरे बाजार में दहशत फैल गई. दुकानें बंद हो गईं. कुछ दुकानदार तो अपनी दुकानें खुली छोड़ कर ही जान बचाने के लिए इधरउधर भाग गए.

कहा जाता है कि इस घटना से पिछली रात को जगन और उस के कुछ साथी वहां चाय पीने आए थे. इस दौरान किसी बात पर उन का दुकानदार से झगड़ा हो गया. इसी झगड़े का बदला लेने और दुकानदारों को सबक सिखाने के मकसद से जगन ने दूसरे दिन सुबह उस चौराहे पर पहुंच कर आतंक मचाया और लोगों को बता दिया कि जगन का खौफ अभी कम नहीं हुआ है.

इसी दिन दोपहर में जगन अपने साथियों के साथ वाहनों से करौली जिले के केशपुरा गांव में पहुंचा. इस गांव में फायरिंग कर वे घरों में घुस गए और महिलाओं से अभद्रता करते हुए उन्हें बंदूक की बट से पीटा. ग्रामीणों से भी मारपीट की.

चंबल के बीहड़ से डकैत रामविलास और पप्पू गुर्जर को गिरफ्तार किया गया.

Vikas Bhadauria

केशपुरा गांव में दहशत फैलाने के बाद जगन और उस के साथी फादलपुर गांव में पहुंचे और फायरिंग की. डर के मारे लोग अपने घरों में दुबक गए. कुछ घरों में लूटपाट के बाद डकैत धौलपुर जिले की तरफ भाग गए. फादलपुर गांव के लाखन सिंह गुर्जर ने उसी दिन मासलपुर थाने में जगन और उस के साथियों के खिलाफ घर में घुस कर फायरिंग और पत्नी व बच्चे से मारपीट करने की रिपोर्ट दर्ज कराई.

इस के दूसरे ही दिन 13 जून, 2019 को कुख्यात डकैत जगन ने हैवानियत की हदें पार कर दीं. मुखबिरी किए जाने के शक में वह अपने 3 साथियों के साथ धौलपुर जिले के सायपुरा गांव के एक घर में पहुंचा और महिलाओं व बच्चों से मारपीट की. जगन ने निर्लज्जता दिखाते हुए उस घर में मौजूद 2 महिलाओं के गहने छीनने के बाद उन के कपड़े फाड़ दिए और उन्हें निर्वस्त्र कर गांव में घुमाया. घटना के समय परिवार का कोई पुरुष घर पर मौजूद नहीं था.

इस घटना से पूरे गांव में दहशत छा गई. डकैतों की मारपीट से घायल और दहशत में आई दोनों महिलाओं को बाड़ी शहर के अस्पताल में भरती कराया गया. बसई डांग थाने में जगन और उस के साथियों के खिलाफ महिलाओं को बेइज्जत करने और जानलेवा हमला करने का मामला दर्ज कर लिया गया.

2 महिलाओं को निर्वस्त्र कर गांव में घुमाने की खबरें मीडिया में आने पर राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष जस्टिस प्रकाश चंद टाटिया और सदस्य महेश चंद्र शर्मा की खंडपीठ ने संज्ञान में ले कर धौलपुर के एसपी से इस मामले की रिपोर्ट मांगी.

डकैत जगन और उस के साथियों द्वारा 2 दिनों में कई घटनाओं को अंजाम देने पर पुलिस प्रशासन सकते में आ गया. जयपुर पुलिस मुख्यालय में बैठे अफसरों में हड़कंप मच गया. इन वारदातों से साफ हो गया कि जगन ने चौथी बार आत्मसमर्पण करने के बाद भी फिर से हथियार उठा लिए हैं. इस से पहले कि जगन कोई बड़ी वारदात को अंजाम दे, उसे गिरफ्तार करने के लिए प्रयास शुरू कर दिए गए.

भरतपुर रेंज के आईजी भूपेंद्र साहू ने 14 जून, 2019 को करौली पहुंच कर एसपी औफिस में पुलिस अधिकारियों की बैठक कर जगन को पकड़ने की रणनीति बनाई. इस के बाद धौलपुर और करौली पुलिस ने जगन और उस के गिरोह के सदस्यों की तलाश में उन के ठिकानों पर दबिश दी.

जगन के परिवार के लोग घरों में ताले लगा कर फरार हो चुके थे. दबिश के दौरान डकैत तो नहीं मिले, लेकिन पुलिस को यह पता जरूर चल गया कि जगन और उस के गिरोह ने धौलपुर-करौली जिले में फैले चंबल के डांग क्षेत्र में बीहड़ों में शरण ले रखी है.

यह जानकारी मिलने पर पुलिस ने डांग के बीहड़ों में जगन की तलाश शुरू कर दी. पुलिस की अलगअलग टीमें रात को ही बीहड़ों में पहुंच गईं. विशेष रूप से प्रशिक्षित कमांडो और राजस्थान सशस्त्र पुलिस (आरएसी) के जवानों ने बीहड़ों की घेराबंदी कर डकैतों की तलाश शुरू कर दी.

## डाकू जगन को ढूंढना आसान नहीं था

इस दौरान मंगलपुरा-चचोखर के बीहड़ों में पुलिस का सामना 25-25 हजार रुपए के ईनामी डकैत रामविलास और भारत गुर्जर से हो गया. इन डकैतों ने एक ग्रामीण का ट्रैक्टर लूट लिया था और उस से 30 हजार रुपए की फिरौती मांगी थी. यह फिरौती की रकम देने के लिए करौली से 2 ग्रामीण बीहड़ों में गए थे.

इस बीच पुलिस भी वहां पहुंच गई. पुलिस को देखते ही डकैतों ने दोनों गांव वालों को बंधक बना लिया. डकैतों ने उन दोनों ग्रामीणों की आड़ ले कर पुलिस पर फायरिंग की और हथगोले फेंके. पुलिस ने भी जवाबी फायरिंग की. चांदनी रात में कई घंटे तक बीहड़ों में गोलियां चलने की आवाजें गूंजती रहीं. मुठभेड़ के बाद पुलिस ने दोनों ग्रामीणों को तो मुक्त करा लिया लेकिन डकैत बीहड़ों में भाग गए.

दूसरे दिन भी एंटी टेररिस्ट स्क्वायड के विशेष प्रशिक्षित 29 कमांडो और करीब 70 जवानों ने चंबल के बीहड़ों में डेरा डाले रखा. जयपुर और कोटा से भी पुलिस अधिकारी बुला लिए गए. बीहड़ों में करीब 35 किलोमीटर तक पैदल चल कर डकैतों की तलाश की गई. जगहजगह मोर्चाबंदी की गई. क्यूआरटी जवानों को चंबल नदी के किनारों पर तैनात किया गया ताकि डकैत अगर पानी लेने आएं तो पकड़े जाएं. पुलिस के बढ़ते दबाव के कारण एकदूसरे के धुर विरोधी डकैत भी पुलिस के विरोध में एक साथ खड़े हो गए.

महिलाओं को निर्वस्त्र करने की वारदात से हुई पुलिस की किरकिरी को देखते हुए जयपुर से एडिशनल डीजीपी (कानून व्यवस्था) गोविंद गुप्ता भी धौलपुर के सायपुरा गांव पहुंच गए. उन्होंने दस्यु जगन के उत्पीड़न की शिकार महिलाओं से बातचीत की और उन के परिवार को सुरक्षा मुहैया कराने व डकैतों को जल्द पकड़ने का भरोसा दिलाया.

एडिशनल डीजीपी गोविंद गुप्ता ने बाड़ी शहर और धौलपुर जिला मुख्यालय पर पुलिस अधिकारियों की अलगअलग बैठकें कर दस्यु उन्मूलन के लिए चलाए जा रहे अभियान की समीक्षा की और अफसरों को डकैतों को जल्द गिरफ्तार करने के निर्देश दिए.

इस बीच धौलपुर और करौली जिले की पुलिस चंबल के बीहड़ों में डकैत जगन और उस के गिरोह की तलाश में जुटी हुई थी, लेकिन इन बीहड़ों में उन्हें तलाशना आसान नहीं था. राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के करीब 338 वर्ग किलोमीटर इलाके में पसरे चंबल के खादर में किसी को भी खोजना मुश्किल ही नहीं, बल्कि नामुमकिन सा है.

चंबल नदी के किनारे खादरों में मिट्टी से बने संकरे रास्ते किसी भूलभुलैया से कम नहीं हैं. आम आदमी का यहां घुसने के बाद बाहर निकलना आसान नहीं होता. लेकिन डकैत यहां छिपने के लिए अपने तरीके से पहचान चिह्न बना कर रखते हैं.

लगातार दबिश के बीच धौलपुर पुलिस ने 17 जून, 2019 को दस्यु केशव गुर्जर के साथी दान सिंह को गिरफ्तार कर लिया. उस के खिलाफ हत्या का प्रयास, वसूली, मारपीट, लूट, डकैती, पुलिस से मुठभेड़ और अवैध हथियार रखने जैसे 8 मुकदमे विभिन्न थानों में दर्ज थे. दस्यु उन्मूलन अभियान के दौरान जगन का कोई सुराग नहीं मिलने पर धौलपुर के एसपी अजय सिंह ने 17 जून को उस पर 5 हजार रुपए का ईनाम घोषित कर दिया.

Vikas Bhadu

Vikas Bhadu

जगन गुर्जर की मां और भाई की पत्नी रज्जो को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया था

धौलपुर पुलिस ने 18 जून को डकैतों के एक साथी रामपूजन गुर्जर को डांग के बीहड़ों में 50 जिंदा कारतूसों के साथ पकड़ लिया. वह डकैत रामविलास और भारत गुर्जर के गिरोह को कारतूस पहुंचाने जा रहा था. 4 दिन पहले पुलिस से हुई मुठभेड़ में डकैत रामविलास और भारत गिरोह के कारतूस खत्म हो गए थे. रामपूजन उन्हें ये कारतूस पहुंचाने जा रहा था.

## पुलिस पूरी तरह सक्रिय थी

उसी दिन जयपुर से एडिशनल डीजी (मानव तस्करी) सुनील दत्त ने बाड़ी पहुंच कर आईजी सहित अन्य पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक कर के डकैतों को पकड़ने के लिए चलाए जा रहे अभियान की जानकारी ली. उन्होंने बीहड़ों के गांवों में बसे लोगों के मन से डकैतों का खौफ खत्म करने और डकैतों को पकड़ने में उन्हें सहयोग देने को कहा. करौली पहुंच कर उन्होंने आईजी व एसपी के साथ बैठक की.

इसी बीच पुलिस को डकैत जगन गुर्जर के घर आने की सूचना मिली. यह सूचना मिलने पर पुलिस टीम 19 जून, 2019 को उस के घर पहुंच गई. जगन का घर धौलपुर जिले के बसई डांग थाना इलाके के भवूरीपुरा गांव में है.

पुलिस के पहुंचने पर जगन के घर वालों ने पुलिस पर पथराव कर दिया. लेकिन पुलिस अपना बचाव करते हुए जैसेतैसे जगन के घर में घुस गई, लेकिन वहां जगन नहीं मिला. तब पुलिस ने जगन की मां उस के छोटे भाई पान सिंह गुर्जर की पत्नी रज्जो को सरकारी कार्य में बाधा डालने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया.

उसी दिन धौलपुर जिले में बसड़ी रोड स्थित पंजाबीपुरा टोल के कर्मचारी रामपूजन ने बाड़ी सदर थाने में डकैत जगन के खिलाफ तहरीर दी. उस ने आरोप लगाया कि 12 जून को सुबह करीब सवा 8 बजे टोल पर स्कौर्पियो से आए हथियारों से लैस डकैत जगन ने उस से मारपीट की और कहा कि तेरे मांबाप को तो मार दिया था अब अगर तूने गवाही दी तो तुझे भी जान से मार दिया जाएगा.

जगन ने रामपूजन के पिता दौलतराम की हत्या 1997 में गोली मार कर की थी. इस के 10 साल बाद जगन ने एक बार फिर उस के परिजनों पर हमला कर उस की मां महावीरो और रिश्ते के चाचा रामप्रसाद को गोली मार दी थी. इस वारदात में रामपूजन की मां की मौत हो गई थी.

उसी दिन बाड़ी सदर थाना पुलिस ने डकैत भारत गुर्जर को कारतूस देने जा रहे बदमाश खुमान सिंह को गिरफ्तार कर लिया. भारत गुर्जर उस का भांजा बताया गया. पुलिस ने खुमान सिंह से 28 कारतूस बरामद किए. भारत ने मुठभेड़ में कारतूस खत्म होने और कारतूस ला रहे रामपूजन के पकड़े जाने के बाद खुमान सिंह से कारतूस मंगवाए थे.

लगातार अभियान चला कर दिनरात बीहड़ों की खाक छानने के बाद भी डकैत जगन का कोई सुराग नहीं मिलने पर एडीजी (क्राइम ब्रांच) ने उस की गिरफ्तारी पर ईनाम की राशि बढ़ा कर 40 हजार रुपए कर दी.

मध्य प्रदेश में मुरैना जिले के देवगढ़ थाना इलाके में चंबल के बीहड़ों में डकैतों की तलाश कर रही राजस्थान पुलिस की टीम पर 20 जून की सुबह फायरिंग की गई. दरअसल, एएसपी राजेंद्र वर्मा की टीम को बीहड़ में 4 लोग नजर आए. पुलिस ने उन्हें रुकने को कहा तो उन्होंने फायरिंग शुरू कर दी. इस पर एएसपी ने एसपी धौलपुर को सूचना दी. धौलपुर से एसपी अजय सिंह कोबरा टीम और पुलिस बल के साथ बीहड़ों में पहुंच गए और डकैतों से मोर्चा संभाल लिया.

करीब 2 घंटे की गोलीबारी के बाद पुलिस ने एक अधेड़ डकैत सोनेराम को पकड़ लिया. वह कुख्यात डकैत भारत गुर्जर का पिता था. डकैत सोनेराम के खिलाफ 7 मामले दर्ज थे.

धौलपुर के टौप-10 वांटेड अपराधियों की सूची में शामिल सोनेराम पर 3 हजार रुपए का ईनाम घोषित था. सोनेराम के 2 बेटे भारत और यदुवीर भी डकैत हैं. इन में यदुवीर अभी जेल में बंद है. फरार डकैत भारत गुर्जर पर एडीजी ने 15 हजार रुपए का ईनाम घोषित कर रखा है.

डकैतों की तलाश में धौलपुर एसपी ने भरतपुर से विशेष टीम बुला कर ड्रोन की मदद भी ली. ड्रोन से धौलपुर व करौली सहित मध्य प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों में चंबल के बीहड़ों में डकैतों की तलाश की गई. ड्रोन की तसवीरों से पुलिस को बीहड़ों में छिपे संदिग्ध लोगों के बारे में कुछ सुराग जरूर मिले, लेकिन डकैतों का सीधे तौर पर कुछ पता नहीं चला.

दस्यु उन्मूलन अभियान के दौरान धौलपुर पुलिस को पता चला कि बढ़ते दबाव के कारण जगन करौली जिले के बीहड़ों में पहुंच गया है. पुलिस को यह भी जानकारी मिली कि जगन के साथ उस का भाई डकैत पप्पू गुर्जर और पप्पू का साला विनोद गुर्जर भी है.

लगातार 18 दिनों से आंखमिचौली खेल रहे डकैत जगन के बारे में आखिर 25 जून, 2019 को धौलपुर पुलिस को सूचना मिली कि वह सरमथुरा इलाके में पार्वती नदी के बीहड़ों में हो सकता है.

इस पर एसपी अजय सिंह, एटीएस के एएसपी गुमाराम व डीएसपी सतीश यादव के नेतृत्व में एटीएस और क्यूआरटी की 7 टीमों ने कई घंटे तक बीहड़ों में कौंबिंग की.

लेकिन इन प्रयासों का कोई नतीजा नहीं निकला.

पुलिस को अंदेशा हुआ कि बीहड़ों में कौंबिंग की सूचना मिलने पर जगन और उस के साथी उत्तर प्रदेश या मध्य प्रदेश की तरफ भाग गए होंगे. इस पर 3 टीमें उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश भेजी गईं. साथ ही बीहड़ों में भी डकैतों की तलाश जारी रखी.

इस बीच नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल ने लोकसभा में डकैत जगन गुर्जर के आतंक का मुद्दा उठा कर ऐसे अपराधियों के एनकाउंटर की मांग की. संसद में यह मांग उठने पर जगन को अपने जीवन पर खतरा मंडराता नजर आया.

इसी दौरान यह चर्चाएं भी चलती रहीं कि पूर्व विधायक भैरोंसिंह गुर्जर और कुछ अन्य प्रतिष्ठित लोग जगन गुर्जर और सरकार के बीच मध्यस्थता करना चाहते हैं ताकि जगन समर्पण कर दे. इन्हीं चर्चाओं के बीच 27 जून, 2019 को डकैत जगन गुर्जर ने जयपुर में दैनिक भास्कर कार्यालय में फोन कर कहा कि वह 28 जून को सुबह सरेंडर कर देगा.

## जगन का सेफ गेम यानी आत्मसमर्पण

आखिर 40 हजार रुपए के ईनामी डकैत जगन ने 28 जून को सुबह चौथी बार धौलपुर जिले में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया. हालांकि जगन के समर्पण को ले कर भी विवाद हो रहा है. पुलिस का दावा है कि जगन ने धौलपुर के मुगलपुरा के जंगलों में खुद को चारों तरफ से घिरा देख कर घुटने टेक दिए और अपनी जान बचाने की दुहाई देता हुआ बीहड़ों से बाहर निकल आया.

पुलिस के कहने पर उस ने अपनी राइफल जमीन पर रख दी और गिरफ्तारी देने को तैयार हो गया. पुलिस ने उस से 315 बोर की एक राइफल व 6 जिंदा कारतूस बरामद किए.

दूसरी तरफ जगन के आत्मसमर्पण में मध्यस्थता में जुटे लोगों का दावा है कि जगन ने अपने गांव भवूतीपुरा में घर पर ही आत्मसमर्पण किया था. इस से पहले उस ने शेव की, बालों पर काले रंग की डाई लगाई और फिर नहायाधोया. इस के बाद वह सफेद कपड़े पहन कर तैयार हुआ.

19 अगस्त, 2018 की शाम जगन गुर्जर भरतपुर की बयाना कोतवाली पहुंचा और आईजी मालिनी अग्रवाल के सामने तीसरी बार आत्मसमर्पण किया था

इस दौरान 2 पुलिसकर्मी उस के घर के बाहर बैठे रहे. सुबह करीब साढ़े 8 बजे धौलपुर एसपी अजय सिंह वहां पहुंचे. वे जगन को एक गाड़ी में बैठा कर बाड़ी शहर के सदर थाने ले गए. थाने में जगन को मीडिया के सामने पेश किया गया.

जगन ने मीडिया से बातचीत में कहा, ''मैं समाज की मुख्यधारा से जुड़ना चाहता हूं, लेकिन पुराने दुश्मन जुड़ने नहीं देते. जेल से जमानत पर छूटने के बाद मैं करौली जिले के मासलपुर में पत्थर की खान चलाना चाहता था. एक दिन भरतपुर से लौटते समय धनगड़ौरा के पास महेंद्र धौंध, पप्पू खनपुरा व रामनाथ भटेश्वर ने मेरी गाड़ी पर गोली चला दी. जवाब में मैं ने भी उन पर गोलियां चलाईं. इस मामले में दोनों ओर से थाने में मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने मेरे ऊपर 5 हजार रुपए का ईनाम घोषित कर दिया.''

जगन ने बाड़ी के बाजार में दुकानदारों पर हमला करने के सवाल पर कहा, ''मेरी बेटी की तबीयत खराब थी. उसे ले कर मैं बाड़ी अस्पताल गया था. दुकान से मैं ने पानी के 5 पाउच खरीदे और दुकानदार को 500 का नोट दिया, क्योंकि उस समय मेरे पास खुले पैसे नहीं थे. 500 का नोट देने पर दुकानदार ने मुझे बेवकूफ कहा. इस पर मैं ने उसे चांटा मार दिया. दुकानदार ने मेरे सिर पर बीयर की बोतल दे मारी. दूसरे दिन सुबह पहुंच कर मैं ने दुकानदार को पीटा.''

एक सवाल के जवाब में जगन ने कहा कि सायपुरा गांव में वारदात के बाद मैं मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले में ऊपर के जंगलों में चला गया था. मेरी पुलिस से कोई मुठभेड़ नहीं हुई. बीहड़ों में रह कर और गंदा पानी पी कर मैं परेशान हो गया था, इसलिए मैं ने आत्मसमर्पण करने का फैसला किया.

जगन ने कहा, ''मैं ने किसी महिला को निर्वस्त्र नहीं किया. मैं कायर नहीं हूं. किसी को मार सकता हूं लेकिन महिलाओं को निर्वस्त्र नहीं कर सकता. इस गांव में 2 लोगों से मैं रकम मांगता था, लेकिन वे रुपए देने के बजाए मेरी मुखबिरी करने लगे. टोल पर मारपीट, मासलपुर में मारपीट और पुलिस मुठभेड़ के मामले झूठे हैं.''

डकैत जगन इस से पहले 3 बार आत्मसमर्पण कर चुका था. सब से पहले उस ने सन 2001 में धौलपुर के तत्कालीन एसपी बीजू जार्ज जोसफ के सामने आत्मसमर्पण किया था. इस के बाद जमानत पर छूटने पर वह फिर जुर्म की दुनिया में कूद कर चंबल के बीहड़ों में चला गया.

करीब 12 साल पहले जगन उस समय सब से ज्यादा सुर्खियों में आया था, जब राजस्थान में वसुंधरा राजे पहली बार मुख्यमंत्री बनी थीं. उस दौरान आरक्षण को ले कर राज्य में गुर्जर आंदोलन हुआ था. भरतपुर के बयाना इलाके में जगन ने भारी भीड़ की मौजूदगी में वसुंधरा राजे के धौलपुर स्थित महल को उड़ाने की धमकी दे डाली थी. हालांकि बाद में उस ने दूसरी बार आत्मसमर्पण कर दिया था.

यह आत्मसमर्पण उस ने अपनी प्रेमिका और दस्यु सुंदरी कोमेश के साथ 30 जनवरी, 2009 को करौली जिले के कैमरी गांव में

Vikas Pathak

डकैत जगन गुर्जर और उस की पत्नी ममता

एक मेले में हजारों लोगों की मौजूदगी में दौसा के तत्कालीन सांसद सचिन पायलट के सामने किया था. उस समय उस पर साढ़े 11 लाख रुपए का ईनाम घोषित था. उस समय जगन पर करौली में 8, धौलपुर में 24, मध्य प्रदेश में 12 और उत्तर प्रदेश में 6 मामले दर्ज थे.

## जगन ने पहले भी 3 बार किया आत्मसमर्पण

जगन ने अपने भाई की बेटी को गोद ले रखा था. इस बेटी की शादी के बाद सन 2010 में उस ने अपराध की दुनिया से तौबा करने की बात कही थी, लेकिन वह अपने वादे पर टिका नहीं.

जमानत पर छूटने और कुछ मामलों में अदालत से बरी होने के बाद वह फिर से अपराध की दलदल में फंस गया. तीसरी बार उस ने 19 अगस्त, 2018 को भरतपुर रेंज की तत्कालीन आईजी मालिनी अग्रवाल के समक्ष बयना में आत्मसमर्पण किया था.

जगन ने करीब 25 साल की उम्र में सन 1994 में अपराध की दुनिया में कदम रखा था. उस समय जगन के जीजा की हत्या हो गई थी. इसी का बदला लेने के लिए उस ने एक व्यक्ति को मार डाला था. बाद में पत्नी और भाइयों के साथ अपना गिरोह बना कर वह चंबल के बीहड़ों में कूद गया. लगभग 25 साल तक चंबल के डांग इलाके में आतंक मचाने वाले जगन के खौफ से लोग कांपते थे.

जगन की 3 पत्नियां हैं. इन में उस की प्रेमिका रही दस्यु सुंदरी कोमेश भी शामिल है. कोमेश को एक बार पुलिस से मुठभेड़ में गोली भी लग गई थी, लेकिन जगन ने समय पर इलाज करा कर उस की जान बचा ली थी.

जगन ने सन 2017 में धौलपुर सीट पर हुए विधानसभा उपचुनाव में अपनी पत्नी ममता को चुनाव मैदान में उतारा था. धौलपुर के तत्कालीन विधायक बी.एल. कुशवाहा के नरेश हत्याकांड में सजा होने पर जेल चले जाने पर इस सीट पर उपचुनाव हुआ था. इस चुनाव में भाजपा प्रत्याशी शोभारानी कुशवाहा विजयी हुई थी. शोभारानी जेल गए तत्कालीन विधायक बी.एल. कुशवाहा की पत्नी थीं.

जगन ने भले ही आत्मसमर्पण कर दिया है, लेकिन उस का एक भाई डकैत पप्पू गुर्जर अभी भी चंबल के बीहड़ों में है. पप्पू के खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास, लूट, डकैती, रंगदारी आदि के 50 से अधिक मामले दर्ज हैं.

पुलिस आज तक उसे एक बार भी नहीं पकड़ सकी है. पप्पू पर राजस्थान पुलिस की ओर से 15 हजार और उत्तर प्रदेश की आगरा पुलिस की ओर से 5 हजार रुपए का ईनाम घोषित है. वह मध्य प्रदेश के कई थानों में भी वांटेड है.

चौथी बार आत्मसमर्पण के बाद पुलिस ने जगन को 2 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया. इस के बाद पहली जुलाई को अदालत में पेश कर जेल भेज दिया गया.

इधर धौलपुर के एसपी अजय सिंह ने जगन को जंगलों में आत्मसमर्पण करवाने की रिपोर्ट दे कर 20 पुलिसकर्मियों और अफसरों को गैलेंट्री अवार्ड देने का प्रस्ताव रखा है. हालांकि इस प्रस्ताव पर विवाद हो रहा है, क्योंकि गुर्जर समाज के कई प्रमुख लोगों का दावा है कि उन्होंने अपने प्रयासों से जगन का आत्मसमर्पण कराया था. इन में पूर्व विधायक भैरोंसिंह गुर्जर, एडवोकेट अतर सिंह गुर्जर, पुलिस अधिकारी परमाल सिंह गुर्जर, विशंभर सिंह, प्रमोद गुर्जर, समाजसेवी रामनिवास गुर्जर आदि शामिल थे.

ये लोग पुलिस की कहानी पर सवाल उठा रहे हैं. पुलिस ने जगन का आत्मसमर्पण मुगलपुरा के जंगल में करना बताया है जबकि प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक उस ने भवूतीपुरा गांव में अपने घर पर एसपी के सामने आत्मसमर्पण किया था.

यह बात भी सामने आई है कि जगन को समाज के लोगों की मध्यस्थता से 10 जुलाई के आसपास आत्मसमर्पण कराया जाना था, लेकिन इस बीच जून के आखिरी सप्ताह में विधानसभा का बजट सत्र शुरू हो गया. विधानसभा में जगन को ले कर हंगामे की आशंका के चलते उस का पहले ही आत्मसमर्पण करा दिया गया.

बहरहाल, जगन ने चौथी बार आत्मसमर्पण कर दिया. अभी वह जेल की सलाखों के पीछे है. उस की प्रवृत्ति देख कर अभी यह नहीं कहा जा सकता कि वह अपराध की दुनिया को पूरी तरह छोड़ देगा. यह भी तय है कि जब तक जगन का भाई पप्पू नहीं पकड़ा जाएगा, तब तक जगन उसे अपने दुश्मनों के खिलाफ इस्तेमाल कर सकता है.

यह भी निश्चित है कि जगन के समर्पण से चंबल में भले ही एक डकैत फिलहाल कम हो गया है, लेकिन मध्य प्रदेश के विंध्याचल की पहाड़ियों से निकल कर राजस्थान और उत्तर प्रदेश के इटावा जिले की तरफ रुख करने वाली चंबल नदी के किनारेकिनारे सैकड़ों मील दूर तक पानी के कटाव से बने ऊंचे घुमावदार बीहड़ आज भी डकैतों के अभेद्य ठिकाने हैं.

चंबल के इन्हीं बीहड़ों में कभी मान सिंह, तहसीलदार सिंह, सूबेदार सिंह, सुलताना, पन्नाबाई, पुतली बाई, पान सिंह तोमर, पंचम सिंह, मलखान सिंह, माधो सिंह, मोहर सिंह, माखन चिड्डा, बाबा मस्तकीन, फूलन देवी, विक्रम मल्लाह, श्रीराम, लालाराम और ददुआ जैसे दुर्दांत डाकुओं ने आतंक का अपना राज चलाया था. ●

Vikas Bhadu